परम विभुति श्री श्रद्धानाथजी महाराज चरितामृत

जीवन परिचय

भाग–1

देव भूमि भारत की यह विशेषता रही है कि इस पावन भूमि पर समय–समय पर महापुरूषों का अवतरण होता रहता है। संत महात्मा समाज को अपनी विलक्षण लीलाओं द्वारा प्रभावित करते हुए अनायास ही सदमार्ग पर अग्रसर करते रहते हैं, तथा साथ ही भारत की जो पुरातन सांस्कृतिक विशेषता रही है, आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा उसका भी संवद्धर्न–पोषण करते रहते हैं। विक्रम संवत 1972 में विलक्षण अवधूत श्री 1008 श्री अमृतनाथ जी महाराज अपनी ईह लीला को समाप्त कर कैवल्यधाम हो गये। उस समय के समाज पर श्री नाथजी महाराज के अलौकिक चमत्कारों एवं पवित्र उपदेशों की दिव्य छाप अकिंत होगई थी। इस पवित्र शेखावाटी अंचल का अहोभाग्य अन्य अंचलों के लिए स्पर्धा का विषय बना हुआ था। इस युग में अनेक जीवन मुक्त महात्मा श्री नाथजी महाराज के सानिध्य लाभ के लिए शरीर धारण कर इस पवित्र अंचल में अवतरित हुए। इन्हीं महात्माओं की श्रृंखला में आषाढ़ शुक्ला द्वितिया सम्वत् 1975 को शुभ मुहूर्त में पनलावा ग्राम के क्षत्रिय कुल में एक अदभूत बालक का जन्म हुआ। पनलावा ग्राम वर्तमान में राजस्थान राज्य के सीकर जिलान्तर्गत लक्ष्मणगढ़ तहसील से 10 मील पूर्व–दक्षिण में स्थित है। इस बालक के जन्म के समय मस्तिष्क पर लाल तिलक था। शरीर सामान्य बालक से आकार में बड़ा था। माता–पिता ने बालक का प्रिय नाम नारायण रखा। यही बालक आगे चलकर इस आंचल में एक विख्यात सिद्ध महात्मा हुए। जिनका यह जीवन चरित्र यहां पर लिखा जा रहा है। आपके (श्री बाबाजी महाराज के लिए आप शब्द का प्रयोग ही इस चरित्र में किया गया है।) पिताजी का नाम श्री गाहड़ सिंह जी एवं श्रद्धेय माताजी का नाम जोरकंवर था। आपके दो भाई एवं एक बहिन थी। शिशु अवस्था में आपकी अदभूत लीलायें देखकर आपके पूज्य पिताजी एक रोचक कथा सुनाया करते थे, जो आपके पूर्व जन्म के जीवन पर प्रकाश डालती है। यह कथा यहां उनके शब्दों में प्रस्तुत है।

"मैं सन् 1914 ई. में फौज में था। हमारी फौज की छावनी झेलम नदी के तट पर थी। उसी नदी के किनारे एक लाल तिलक धारी बाबा तपा करते थे। बाबा बड़े तपस्वी व सिद्ध पुरूष थे। वे नशीली वस्तुओं व धुम्रपान से घृणा करते थे। मैं उनके पास सत्संग दर्शनार्थ जाता व यथाशक्ति सेवा भी किया करता। कुछ समय बाद ईग्लैंड व र्जमनी के मध्य घमासान युद्ध छिड़ गया। मैं बाबाजी के पास गया व हाथ जोड़ कर बोला, "महाराज! हम तो काल के गाल मे जाने वाले हैं।" इस पर बाबाजी बोले "क्यों भाई क्या कष्ट है?" मैने निवेदन किया "महाराज बड़ा भयंकर युद्ध छिड़ा है।" तब बाबा जी ने कहा कि "भगवान का ध्यान रखो। कष्ट आयेगा मगर जीवन को कोई खतरा नही है। इस बात पर विश्वास रखकर निर्भयता से युद्ध में जाओ, विजय भी तुम्हारे स्वामी की ही होगी।"

हमारी भारतीय सेना समुद्र पार गई। सन् 1914 से तीन वर्ष तक घामसान युद्ध हुआ। इस युद्ध में बहुत से आदमी हताहत हुए। मैं भी युद्ध में जख्मी हुआ। जांघ के आर पार गोली निकल गई। घर पर सूचना दे दी गई कि मैं युद्ध के मैदान में काम आ गया। घर वालों को आपार दुःख हुआ। यह समाचार सब जगह फैल गया। फिर भी मेरे प्राण बच गये। अन्त में विजय भी हमारे स्वामी की ही हुई।

स्वस्थ होने पर मैं बाबाजी के पास गया व नमस्कार करके बोला "महाराज! मैने आपकी कृपा से नया जीवन प्राप्त किया है। अब मैं दो महिने की छुट्टी पर घर जा रहा हूँ। आप भी मेरे साथ घर पधारें व घर वालों को दर्शन देकर घर पवित्र करें।" इस पर बाबाजी बोले–तुम्हारे घर अवशय ही आवूंगा। क्योंकि तुम्हारे से हमारा प्रेम हो गया है। तुम मुझे घर का पत्ता दे जावो, मैं अपने आप तुम्हारे घर आवूंगा। मैं स्वस्थ होकर घर आते समय घर का पत्ता दे आया। घर वालों को मेरे आने से आपार हर्ष हुआ। होता भी क्यों नहीं? यदि किसी का खोया हुआ पुत्र वापिस मिल जावे तो हर्ष का अनुमान ही लगाया जा सकता है। उसी जांघ के जख्म के कारण मेरे पेन्शन के कागज आये। मेरे पिताजी ने कहा कि बेटा यह पेन्शन नहीं लेनी चाहिए, क्योंकि तुम मरे हुए हमें प्राप्त हुए हो। सरकार का यह धर्मादा नहीं लेना है। अपने को भगवान ने तुम्हें जीवनदान देकर सब कुछ दे दिया है। पिताजी का कहना मान कर मैंने पेन्शन के लिए मना कर दिया। मैंने घर पर दो माह तक इन्तजार किया, परन्तु बाबाजी नहीं पधारे। जब दो माह बाद मैं वापिस गया तो मेरे साथियों न बताया कि तुम्हारे बाबाजी ने तो समाधि ले ली। मेरे बहुत विचार हुआ। मैं समाधि पर गया व फल–पुष्प चढ़ा कर नमःस्कार किया। मेरे सेवाकाल का हिसाब लेकर मैं स्थायी रूप से घर आ गया। बाबाजी के समाधि लेने के ठीक नौ महिने बाद मेरे घर पर पुत्र का जन्म हुआ व उसका प्रिय नाम नारायण रखा। जन्म के समय ललाट पा लाल तिलक मौजूद था। आज भी यह लड़का

साधु की सी वृति रखता है। मदिरा, मांस, धुम्रपान से छटपटाता है। दुर्व्यसनों से नाक सिकोड़ कर दूर भाग जाता है। तब मैं सोचता हूँ इस उम्र के लड़के की एसी वृति क्यों ? मुझे पिछली बात याद आती हैं तो सोचता हूँ कि यह लड़का ना होकर बाबाजी ने ही मेरे घर पर जन्म लिया है। मैं यह कहता हूँ कि यह लड़का या तो जियेगा नहीं और यदि जीयेगा तो घर में नहीं रहेगा। यह क्या करेगा और कैसे रहेगा, यह मैं नही देख सकूंगा। "उपरोक्त बातें सब का सब ज्यों की त्यों हुई। जब आप मात्र आठ वर्ष के थे तो सम्वत् 1983 में अपके पिताजी का देहान्त हो गया। उस आयु में भी आपको मोह शोक का का ताप नहीं सता रहा था। सभी परिजन रो रहे थे परन्तु आपकी आँखों में आँसु तक नहीं आये। यह देख कर सभी को आश्चर्य हुआ। उस समय आपके पूज्य दादाजी जीवित थे। आपने अपनी माताजी एवं दादाजी को ढ़ाढ़स बंधाया। यह बातें आपकी माताजी कई बार दोहराया करती थी व आपसे कहा करती थी कि बेटा यह बात तो सत्य है कि तुम साधु तो अवश्य बनोगे परन्तु जब तक मैं जीवित हूँ तब तक दर्शन देते रहना। आपने माताजी के इस वचन का पालन किया व जब तक उनका शरीर रहा आप उनके दर्शनार्थ जाते रहे।

बचपन से आपका अपनी माताजी से अतीव प्रेम था। पूज्य माताजी सद् विचारों वाली एक ईश्वर भक्त थी। आपके बाल स्वभाव पर उनकी शिक्षा एवं शील स्वभाव का अमिट प्रभाव पड़ा। पिताजी की मृत्यू के पश्चात आर्थिक दृष्टि से कुछ तंग हाली का सामना आपके परिवार को करना पड़ा। इन दिनों में जब कभी आप इस तंगहाली की चिन्ता पूज्य माताजी से किया करते तो वो आपको कहा करती कि नारायण घबराओ मत, भगवान हमारे साथ हैं। इस पर आपका प्रश्न होता कि भगवान कहां हैं ? मुझे तो दिखायी नहीं देते। माताजी का उत्तर होता, "बेटा विश्वास करो, परमात्मा सर्वव्यापी हैं। वे हमारे साथ ही हैं।" इस तरह मदालसा की भांति लोरी देती थी। माताजी की बड़ा महाराज श्री अमृतनाथजी महाराज के प्रति असीम आस्था एवं दृढ़ विश्वास था। वो आपको श्री नाथजी महाराज की बहुत सी कहानियां सुनाया करती व उनकी अद्भुद् लीलाओं का सुन्दर वर्णन समय–समय पर किया करती थी। जिसकी अमिट छाप आपके बाल सुकुमार हृदय पर सदा सर्वदा के लिए अंकित हो गई। फलतः आपका श्री नाथजी महाराज के प्रति श्रद्धा प्रेम व विश्वास का प्रवाह उमड़ पड़ा। ऐसी परम पूज्य माताजी को कोटि–कोटि नमस्कार है, जिन्होंने अपनी सन्तान को बालपन में ही प्रभु प्रेम एवं भक्ति रूपी अमृत पान कराया। शैशव अवस्था से ही आपके हृदय में यह भाव उत्पन्न हो गया कि सारे जगत का कर्ता धर्ता परमात्मा ही है। अतः भगवान का भजन करना चहिए। संसार में जो कुछ सार है वह सब परमात्मा की भक्ति में ही है।

इसी भाव से आप अपने गाँव के मन्दिर में गीता, रामायण, सुखसागर आदि ग्रंथों के श्रवण मनन हेतु जाने लगे। ग्राम आने वाले साधु सन्तों का दर्शन–सत्संग भी आप करने लग गये। इससे

आपको अच्छी संगति प्राप्त हुई, जिससे दिनों दिन सद् विचारों का विकास होने लगा। आपकी स्मरण शक्ति बड़ी तीव्र थी। जिस बात को एक बार सुन लेते उसे कभी नहीं भूलते थे। जटिल से जटिल विषय भी आपकी कुशाग्र बुद्धि तुन्त ग्रहण कर लेती थी। गृह कार्य में माताजी एवं दादाजी का हाथ भी बंटाते एवं मन्दिर में सत्संग भजन कीर्तन एवं सदग्रंथों का श्रवण भी करते। इस अल्पायु में अपका झुकाव अध्यात्म की ओर देख कर भोले भाले ग्रामवासी आपके प्रति श्रद्धा एवं प्रेम रखने लगे। आपकी वचन सिद्धि पर इन सरल हृदय ग्रामीणों का अटूट विशवास था। कोई भी अनुकूल आपसे कहलवाना होता तो आपको खोपरा (नारियल का गट) भेंट कर दिया जाता। खोपरा उस समय आपको बहुत पसन्द था। विशेषकर निसन्तान माँ बहिनें पुत्र प्राप्ति की मनोकामना करके आपसे अनुरोध किया करती थी। कभी–कभी ऐसा भी होता कि आपके वचनानुसार मनोरथ पूर्ण होने पर जब आपको खोपरा भेंट नहीं किया जाता तो बाल सुलभ स्वभाव से कह दिया करते थे कि मैं बात को वापिस पलट दुंगा। तब आपकी मनोती तुन्त प्रभाव से पूर्ण की जाती थी। कितने ही ग्रामवासियों ने आपसे मनोकामना पूर्ण कर अपने आप को कृत–कृत किया। ये सब बातें सम्वत् 1987 के पूर्व की हैं।

गृह यागः– अब आप किशोर अवस्था में प्रवेश कर चुके थे। बाल–लीला का स्थान धीरे–धीरे आध्यात्मिक साधना एवं गंभिरता लेने लग गई थी। इस समय आपकी ज्ञान पिपासा उत्कृष्ट रुप में जागृत हो चुकी थी। फलतः बारह वर्ष की अल्पायु में ही आपने गृह त्याग कर मन्दिर में रहना प्रारम्भ कर दिया। माताजी व दादाजी की सेवा भी बराबर करते रहते थे। साथ ही साथ मन्दिर में रह कर साधन–भजन सत्संग भी बराबर चलता रहता।

शिक्षाः– परम श्रद्धेय श्री बाबाजी महाराज औपचारिक शिक्षा हेतु किसी भी विद्यालय में नहीं गये। आपकी जितनी भी शिक्षा हुई वह अनौपचारिक ही है। फिर भी आपके ज्ञान गाम्भीर्य के सम्मुख उच्च से उच्च शिक्षित नतमस्तक हो जाया करते थे। जोधपुर में एक बार एक उच्च शिक्षित मौनी साधु ने आपकी प्रकाण्ड विद्वता से प्रभावित होकर पुछा कि आप कितने पढ़े हुए हो ? आपने कहा कि मैने तो इस प्रकृति विश्व विद्यालय की खुले गत्ते की किताब पढ़ी है। उन्होंने पुनः लिख कर दिया कि मैं समझा नहीं तो आपने अर्थ स्पष्ट किया कि मैने किसी स्कूल कॉलेज में पढ़ाई नही की है, जो कुछ भी सिखा है वह समाज के अनुभव विचारों द्वारा ही सिखा है। तब आपने उनसे प्रति प्रश्न किया कि आप कितने पढ़े हैं, तो वे बोले कुछ भी नहीं । अब तक का समय तो युं ही बर्बाद कर दिया है।

आपके श्रीमुख से अनेकों बार आपकी उस समय की शिक्षा प्राप्ति की रुचि एवं उसे प्राप्त करने के प्रयासों के बारे में सुनने को मिला है। आपके दिल में विचार आता कि यदि मुझे भी अक्षर

ज्ञान होता तो मैं भी उत्तम–उत्तम ग्रन्थों का पठन व मनन करता। निरक्षर होने का अभाव आपको खटकने लगा। आपने अक्षर ज्ञान अर्जित करने की ठान ली। उस समय वर्तमान युग की तरह शिक्षा का प्रचार प्रसार नहीं था। गांवों में कहीं–कहीं कोई अध्यापक स्वयं की छोटी पाठशालायें चलाया करते थे। चाह जहाँ राह के अनुसार इसी तरह के महानुभाव गुरुजी ने आपको अक्षर ज्ञान सिखाया। वे साधु वृति के सज्जन थे। उनकी संगत का प्रभाव आप पर बहुत पड़ा व आपका लगाव अधिकाधिक आध्यात्मिक विषयों की ओर बढ़ता ही गया। हिन्दी पढ़ना आते ही सर्वप्रथम आपका अनुराग हनुमान चालिसा में लगा व दिन प्रतिदिन श्री बंजरंग में आपकी आस्था बढ़ती ही गई। श्री हनुमानजी की कृपा से आपकी रुचि रामायण व गीता में भी उत्पन्न हो गई। उनका पठन मनन नित्य प्रति करने लगे। साथ ही मन्दिर में हरि कीर्तन, ध्यान भजन में मस्त रहते। गीता रामायण के गुढ रहस्यों को सहज मे ही आत्मसात कर लिया करते थे। श्री हनुमानजी ने आपको बाल रुप में, रामायण पाठी नौजवान ब्रह्मण के रुप में, व बन्दर के रुप में कई बार दर्शन देकर कतार्थ किया। आप कहा करते थे कि जो रामायण का नित्य पाठ व श्री राम एवं हनुमानजी में श्रद्धा विश्वास रखता है, उसे हनुमानजी अवश्य ही दर्शन देते हैं।

दिव्य स्वपनः– इतना होते हुए भी आपके दिल में सद् गुरु प्राप्ति के लिए भाव प्रबल होने लगे। इसी प्रबल ईच्छा के समयान्तराल में एक रात्री को आपको एक दृष्टान्त हुआ। जिसमें एक साधु वेषधारी भव्य मूर्ती ने प्रगट होकर आपको उपदेश देते हुए कहा कि "मैं तुम्हारा गुरु हूँ। किसी बात पर विचार मत करो।" यह स्नेह सिक्त वचन सुनकर अपका ह्रदय गद्–गद् हो गया व आप जय–जय कार करने लगे। दृश्य के ओझल होने पर बिछोह का बड़ा विचार हुआ। फिर भी उसकी मधुर स्मृति कई दिनों तक आनन्द देती रही।

इस तरह मन्दिर में आपका अधिकांश समय साधन भजन व अध्ययन मनन में व्यतीत होता रहता। साथ–साथ गृह कार्य एवं दादाजी माताजी की सेवा भी करते रहते। इस समय तक बैजनाथ जी एवं वासुदेव जी भी सत्संगार्थ आपके पास आने लगे थे। बैजनाथ जी उस समय बहुत छोटे थे। आपके पास आकर चुपचाप बैठ जाते व जब आप आज्ञा देते तब उठ कर चले जाते थे।

श्री गोविन्द नाथ जी से प्रथम मिलन एवं वार्ताः– इन्ही दिनों आपके गांव के मन्दिर में सत्संग एवं प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। जिसमें बहुत से पंडित साधु सज्जन एकत्रित हुए। इनमें से एक महापुरुष डूडवा ग्राम के श्री गोविन्द नाथ जी भी थे। जो उत्तर जीवन में आपके घनिष्ट साथी रहे। आपने सदैव इन्हें गुरु भाव से माना परन्तु वे आपको अपना एक अभिन्न संगी ही मानते थे। आप महापुरुषो का प्रेम अलौकिक था। आप इस प्रथम दर्शन के समय श्री गोविंन्द नाथ जी से बहुत प्रभावित हुए। श्री गोविन्द नाथ जी महाराज ने पूछा कि आप किसी साधु–संत को मानते हैं क्या?

इस पर आपने कहा कि मैं विलक्षण अवधूत श्री अमृत नाथ जी महाराज को बहुत मानता हूँ। माता से सुना है कि वे सिद्ध महापुरुष हुए हैं। सुबह शाम उनका नाम लेता हूँ व ध्यान भी करता हूँ। श्री गोविन्द नाथ जी ने पुछा कि क्या तुमने कभी श्री अमृत नाथ जी महाराज के दर्शन किये हैं। आपने कहा कि मेरे जन्म के पहिले ही उन्होंने अपना भौतिक चौला छोड़ दिया था। परन्तु स्वपन में मैने कई बार उनके दर्शन किये हैं। तब आपने यह वर्तान्त सुनाया, "एक बार मैं बीकानेर की तरफ गया हुआ था। एक रात्री को स्वपन में मुझे श्री अमृत नाथ जी महाराज व पंजाबी बाबा के दर्शन हुए। उनके दर्शन करते ही उनके चरणों में गिर कर मैने उनके चरण पकड़ कर कहा कि हे महाराज! मुझे भी साथ लेलो। इस पर वे मुस्कराये व मेरे सिर पर हाथ रख कर बोले, "बेटा तुम हमारे साथ ही हो, दूर नहीं। पीछे की ओर देखो इस गयारस का कौन धणी है। तुम घर पर रहते हुए भी हमारे अपने साथ ही मान लो। जब समय आयेगा तो तुम अपने आप ही हमारे साथ आजावोगे।" जब मैने पीछे मुड़ कर देखा तो मुझे दादाजी व माताजी दिखायी दिये व महाराज अन्तर्ध्यान हो गये। मुझे आपार हर्ष हुआ व श्री नाथ जी महाराज के प्रति दृढ़ विश्वास हुआ व श्री नाथ जी महाराज के प्रति दृढ़ विश्वास एवं प्रेम का उदय हुआ जो सत्त बढ़ता ही जा रहा है।"

श्री नवानाथजी महाराज का प्रथम दर्शन लाभः– एक दिन श्री गोविन्द नाथ जी आकर आपसे कहने लगे कि पूज्य श्री नवानाथ जी महाराज बऊ पधारे हुए हैं, चलो तुम्हें उनके दर्शन करवाऊँ। आप दोनों ने बऊ जाकर श्री नवनाथ जी महाराज के चरणों में आदेश प्रणाम किया। श्री नवानाथ जी महाराज बोले, आओ आओ गोविन्दा अबकी बार तो बहुत दिनों से आये। यह तुम्हारे साथ कौन है। श्री गोविन्द नाथ जी महाराज बोले, हाँ महाराज! यह पनलावा ग्राम का एक अच्छा सुशील बुद्धिमान लड़का है। जब श्री नवानाथ जी ने आपका नाम पुछा तो आप बोले नाम तो श्री नाथजी महाराज का है। मेरा तो छोटा सा नाम नारायण है। वे दो–तीन बार बोले नारायण, नारायण तुम्हारा नाम और गुण दोनों मिल गये। सत्संग किया करो व गोविन्दा के साथ आया करो। साधुओं की सेवा से मेवा मिलता है। "इस प्रथम दर्शन के पुनीत अवसर पर आपको आपार हर्ष हुआ व ऐसी भव्य मूर्ती के दर्शन कर अपना अहोभाग्य समझा। आगे जीवन पर्यन्त श्री नवानाथजी महाराज की आप पर विशेष कृपा रही व उन्ही की कृपा एवं शिक्षा से आपके जीवन में शुभ परिवर्तन हुए।

सधु सत्संगः– श्री नवानाथजी महाराज के सम्पर्क में आने के बाद आपके जीवन में साधु समाज के प्रति विशेस अनुराग उत्पन्न होगया। आपकी ज्ञान पिपासा एवं जिज्ञासा विस्तृत होने लगी। फलतः आपने इस आंचल के सुप्रसिद्ध सन्त महात्माओं के पास सत्संग दर्शनार्थ जाना आरम्भ

कर दिया। यह अनुपम विशेषता ही रही कि इन सभी सन्त महात्माओं ने आपको योग्य पात्र जानकर उत्तम शिक्षायें प्रदान की व अपने कृपा आशीर्वचनों द्वारा कृतार्थ किया।

फतेहपुर यात्राः—आप प्रथम बार सम्वत् 1990 के उत्तरार्द्ध में फतेहपुर अमृताश्रम पर दर्शनार्थ गये। फतेहपुर आश्रम में विलक्षण अवधूत श्री 1008 श्री अमृतनाथ जी महाराज की समाधि, आश्रम व विलक्षण अवधूत के कृपा पात्र शिस्य श्री 108 श्री ज्योतिनाथ जी महाराज के दर्शन किये। उनका स्नेह आर्शिवाद प्राप्त कर उनकी शिक्षा ग्रहण की। उस अमृतनाथ का, संचालन कार्य भार श्री 108 श्री शुभनाथ जी महाराज सम्भालते थे। तभी से आपका उनके प्रति श्रद्धा भाव एवं शुद्ध प्रेम हो गया। इसके बाद सतत् आपका फतेहपुर जाना व सत्संग करना बना ही रहा। फतेहपुर अमृताआश्रम आपका श्री गुरु स्थान है जिसे आप सभी तीर्थों से उत्तम तीर्थ मानते थे। यहां पर आपका प्रेम व श्रद्धा भाव असीम था जो सभी के लिए अनुकरणीय आदर्श है। आप सभी यात्राओं में सर्वोतम सार यात्रा फतेहपुर श्री गुरु स्थान को ही मानते रहे हैं। इस तरह आपको अपने गांव के मन्दिर में रहते हुए बारह वर्ष व्यतीत हो गये। इस समय आपकी अवस्था अन्तर्मुखी थी। आप अहर्निश साधन भजन में लीन रहते। ग्रामवासियों में आपके प्रति अटूट श्रद्धा एवं प्रबल प्रेम भावना थी। गरीब—अमीर, बाल—वृद्ध, स्त्री—पुरुष सभी अपके दिव्य व्यक्तित्व से अति प्रभावित होकर आपके प्रति पूर्ण समर्पित होने लगे। आपके वचनों को पूर्ण सत्य मानकर उनका अक्षरतः पालन करते थे। ये सरल हृदय ग्रामवासी आपके निश्चल प्रेम में द्रवित होकर, आपके दर्शन लाभ एवं सानिध्य को अपना अहोभाग्य समझते थे। सचमुच पनलावा ग्राम उस समय आपके त्याग और तप के प्रभाव से पवित्र तपो भूमि बन गया। आपके दिल में गरीब व दलित वर्ग के लिए आपार सहानुभूति थी। यह काल जागीदारी प्रथा का अवसान काल था। समाज के उपेक्षित वर्ग के हितार्थ कई बार आपको समाज के प्रभुसत्ता वर्ग से संघर्ष करना पड़ा। जिस प्रकार अग्नि अपने शमन काल में तीव्र हो जाया करती है वैसा ही अत्याचार व्यवहार में जागीरदार लोग जन सामान्य के साथ कर रहे थे। आप इन गरीबों को कहा करते थे कि अपने स्थान पर डटे रहो। समय जल्दी ही बदलने वाला है। चूंकि प्रभूसत्ता वर्ग भी आपको संत महात्मा मानता था इसलिए आपके आदेशों वचनों का पालन कर कम ही अत्याचार करता था। इससे इस प्रभाग में कम जुल्म हुए। आज भी बड़े बूढ़े ग्रामवासियों द्वारा इस सहानुभूति एवं सहायता की भूरि—भूरी प्रशंसा सुनने को मिलती है।

खेत में साधनाः—अब तक अपका मन बाह्म जगत से उपराम सा हो गया। आप अधिकाधिक आध्यत्म साधना में संलग्न रहने लगे व लोगों से सम्पर्क आपको बाधा स्वरुप नजर आने लगा। ऐसी अवस्था में गांव का मन्दिर भी आपको अनुकूल नहीं पड़ रहा था। आपने कही एकान्त स्थान में रहने का निश्चय किया। श्री नवानाथ जी महाराज की भी ऐसी ही प्रेरणा रही। अतः अपने गांव से

दूर खेत के शान्त शुद्ध वातावरण में ऊँचें टीले पर एक झौपड़ा बनाया व बैशाख शुक्ला तृतीया संवत् 1999 को उसमें रहना प्ररम्भ कर दिया। यहां पर आप अहर्निश निर्विध्न साधना में लग गये। बैजनाथ जी का भी आपके पास आना जाना व सत्संग करना बराबर बना रहता था। कुछ समय बाद आपने यहां पर हवन का अयोजन करवाया जिसमें बहुत से साधु भक्त सज्जन प्रेमी उपस्थित हुए। हवन के पश्चात प्रसाद वितरण किया। यद्यपि प्रसाद अल्प मात्रा में था परन्तु श्री नाथजी महाराज की कृपा से सब काम सफल होते हैं।

इन्ही दिनों पोषाणी गांव के श्री चुनीलाल जी पटवारी भी आपके दर्शनार्थ आये। पटवारी जी ने हाथ जोड़ का कहा महाराज "आप हमारे गांव पोषाणी पधारें। साधुओं के प्रति मेरा बहुत प्रेम है। मैने आपकी प्रशंसा तो बहुत सुन रखी है, परन्तु दर्शनों का सौभाग्य आज ही प्राप्त हुआ है। आपके प्रति मेरा प्रेम है।" श्री चुनीलाल जी के शुद्ध एवं सच्चे प्रेम को देख कर आपने उन्हें स्नेह आर्शिवाद से कृतार्थ किया। श्री चुनीलाला जी एक शुद्ध एवं सच्चे कर्तब्यनिष्ट सद्मार्ग पर चलने वाले प्रेमी भक्त हैं। आप संवत् 2008 में पोषाणी पधारे। पोषाणी गांव के लोगों में साधु संतों के प्रति श्रद्धा एवं सेवा भावना आपको उत्तरोत्तर जीवन में पोषाणी आकर्षित करती रही है। आप बहार रम घूम कर पोषाणी पधार जाते थे। गांव के बाहर बीड़ में एक धर्मशाला है उसमें आप दो चार रोज विश्राम करके पुनः रमणी पर निकल जाया करते थे। यह साधन भजन के लिए एक अच्छी एकांत जगह है। अहोभाग्य है पटवारी जी का जिन्हें गुरुओं की सेवा का ऐसा अनुपम अवसर प्राप्त हुआ। इस समय तक भूरियों के बास के श्री नौरंग सिंह जी का भी आपके पास आना जाना व सेवा संगति करना शुरु हो गया था। श्री नौरंगसिंह जी का आपके प्रति अनन्य सेवा प्रेम गुरुभाव दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया। आज भी उनके यही कोमल भाव हम सब के प्रेरणा के श्रोत हैं। पोषाणी के श्री निवास जी आपके पास आते व संगत करते थे।

आप समय–समय पर शेखावाटी अंचल के सुप्रसिद्ध संत–महात्माओं के सत्संग दर्शनार्थ जाते रहते थे व सेवा करते। ये सभी संत–महात्मा आपको साधु समझकर विशेष प्रेम किया करते। जिन संत–महात्माओं के पास आप अधिकतर सत्संग सेवार्थ जाया करते व जिनका प्रभाव आपके जीवन पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप से पड़ा, उनका संक्षिप्त प्रासांगिक विवरण देते हुए मुझे परम् हर्ष हो रहा है

श्री नवानाथ जी महाराजः–आप बाल्यकाल से ही श्री नवानाथ जी महाराज के सम्पर्क में आ गये थे। श्री नवानाथ जी महाराज की कृपा एवं शिक्षा प्रेरणा से ही आपके जीवन में शुभ परिवर्तन हुए। श्री नवानाथी जी महाराज एक निर्भिक राजयोगी सिद्ध पुरुष थे। उनका विशाल कांति युक्त शरीर आज भी लोगों के लिए कौतुहल चर्चा का विषय है। आपने लगातार 40 वर्ष तक उनके

सानिध्य में रह कर उनकी सेवा की। आप रमण भ्रमण करके नवलगढ़ श्री नवनाथ जी महाराज के पास आ जाया करते थे। इस सत्संग सेवा का वर्णन आप अक्सर भाव विभोर हो कर किया करते थे। श्री नवानाथजी महाराज आपको अपना शिष्य ही मानते थे। आपने भी उनकी गुरुभाव से जीवन पर्यन्त सेवा की व उनका मेला भण्डारा, समाधि, मन्दिर आदि बनाकर सादर सेवा भेंट उनके चरण कमलों में अर्पित की। वस्तुतः आप महापुरुषो का शुद्ध आध्यात्मिक प्रेम आहलाद् का विषय है।

श्री नवानाथ जी महाराज कहा करते थे कि निश्चय करो, दृढ़ निश्चय का नाम ही मोक्ष है। शरण गुरुओं, फकीरी तनां की, करोगे सेवा तो पावोगे मेवा। गुरु वचन विश्वासु, एकान्तवास व आत्मचिन्तन ही शिष्य के लिए सर्वस्व है।

आपके प्रेम पूरित हृदय से जो श्रद्धा सुमन उनके चरण कमलों में शब्द रुप में अर्पित किये, वे यहां प्रस्तुत हैंः–

राजयोग सा योग नहीं यह भाग परबले पाया है।
गोरक्षनाथ के नाथ पंथ में, अद्भुत नाथ कहवाया है।।
नवानाथ जी निर्भय योगी, श्री गुरुदेव की माया है।
श्रद्धानाथ शरण आपकी, राजयोग यश गाया है।।

पीर श्री ज्योतिनाथ जी महाराजः– पीर श्री ज्योतिनाथ जी महाराज विलक्षण अवधूत श्री अम्तनाथजी महाराज के कृपा पात्र शिष्य एवं जीवन मुक्त परमहंस थे। वे फतेहपुर आश्रम के पीर मंहत थे। समय–समय पर श्री ज्योतिनाथ जी महाराज आपसे बहुत स्नेह करते व सरल शिक्षायें देकर कतार्थ किया करते। आप उनके मस्त अखण्ड–फकड़ स्वभाव की दत्चित होकर रसभरी चर्चाऐं; अक्सर करते रहते थे।

पीर श्री शुभनाथजी महाराजः– श्री शुभनाथजी महाराज 'आपके' श्री गुरु महाराज थे। आपके जीवन में आमूल चूल परिवर्तन इन्हीं की कृपा से हुआ। श्री शुभनाथ जी महाराज बाल ब्रह्मचारी आत्मज्ञानी, अध्यात्मवेता एवं योगियों में सिद्ध पुरुष थे। वे आश्रम सम्पति ब्यवहार में रहते हुए भी एक निर्लिप्त त्यागी महापुरुष थे। उनके दिव्य दर्शन मात्र से ही आत्मा में शान्ति मिलती थी। आप पर उनका अगाध स्नेह व विशेष कृपा दृष्टि रही है। आपका यह सुन्दर जीवन पुष्प उन्ही की शिक्षाओं का मूर्त रुप है। जब से आपने फतेहपुर जाना प्रारम्भ किया, तभी से आप उनके सम्पर्क में आ गये। उत्तरोत्तर जीवन में उनका शिष्यत्व ग्रहण कर आपने आपने आप को कतार्थ समझा। आप गुरु शिष्यों कर अनन्य प्रेम भाव मैं शब्दों में ब्यक्त करने में सर्वथा असमर्थ हूँ। बस इतना ही लिख कर चुप हो जाना श्रेयष्कर समझता हूँ कि जब भी आप उनका प्रसंग चलाते तो

गद्–गद् हो कर आत्म विभोर हो जाया करते व उनके प्रेम को याद करके आपका अविरल प्रेम प्रवाह रोकने से भी नहीं रुकता था।

श्री भानीनाथ जी महाराजः– श्री भानीनाथ जी महाराज अधिकतर चूरु रहते थे। श्री ज्योतिनाथजी महाराज के शिष्य थे। चूरु आश्रम श्री भानीनाथजी एवं श्री किशननाथजी महाराज के त्याग वैराग्य का फल है। उनका खान–पान रहन–सहन अत्यन्त सरल व सादा था। पेड़ पौधे लगाने में उनकी विशेष रुचि थी। उनकी पवित्र स्मृति आज भी चूरु क्षेत्र के लोगों के दिलों में अपना अपूर्व स्थान बनाये हुए हैं। आपने उनका कई बार दर्शन मेला व सत्संग किया। आप उन्हें गुरु भाव से देखते थे। उनकी आप पर विशेष कृपा दृष्टि थी। एक बार वे आपके पास आपके गांव भी पधारे थे।

श्री केशरनाथ जी महाराजः– श्री केशरनाथ जी महाराज प्राचीन टांई आश्रम के महन्त थे। अपने सरल साधु स्वभाव से सब का मन मोह लेते थे। जन साधारण का उनके प्रति बड़ा आदर भाव रहा है। गो–सेवा व गो पालन में उनकी विशेष रुचि थी। श्री केशरनाथजी महाराज आपके चीरा गुरु थे। आप बहुत समय तक उनके सम्पर्क में रहे व उनको गुरुभाव से ही देखते थे। उनकी आप पर बड़ी कृपा दृष्टि रही है। आपने उनकी समाधि, ब्रह्मपुरी बेला में उपस्थित रह कर सेवा की।

श्री मकड़ीनाथजी महाराजः– श्री मकड़ीनाथजी महाराज, सातड़ा के एक शील स्वभाव के साधु थे। उनकी परोपकारी भावना, मधुर भाषा, सरल स्वभाव व प्रसन्नचित्तता की दर्शनार्थी के हृदय पर अमिट छाप लग जाया करती थी। आप उनको गुरु भाव से मानते थे व उनके पास सत्संग दर्शनार्थ जाते रहते। उनकी आप पर सदा ही विशेष कृपा दृष्टि रही है। इस गुरु भाव के कारण आपने उनके अन्तिम दर्शन, समाधि, ब्रह्मपुरी, भण्डारे में रह कर सेवा की।

श्री भूरनाथजी महाराजः– श्री भूरनाथजी महाराज श्री ज्योतिनाथजी महाराज के शिष्य व एक उच्च कोटि के साधक थे। अपका उनसे घनिष्ट प्रेम था। अप 15–16 वर्षों तक उनके सम्पर्क में रहे तथा उनसे बहुत सी ज्ञान एवं साधना की बातें सीखी। वे योग साधना में बहुत अच्छे थे। अहर्निस चिन्तन में संलग्न रहते थे। आप उनके प्रति गुरु भाव रखते थे। उनकी आप पर महत्ती कृपा दृष्टि रही है। वे अक्सर श्री नवनाथजी महाराज के पास आते तब या पालवास आप जाते तब उनसे संत्संग होता रहता था। पालवास में उस समय में श्री विल्क्षण अवधूत के कृपा पात्र श्री हनुमान नाथ जी महाराज निवास किया करते थे। जब भी आप व श्री गोविन्द नाथजी पालवास जाते तो वे अन्धे होने पर भी दूर से ही आश्रमवासी साधुओं को कह दिया करते कि गोविन्दा व नारायण आ रहे हैं। झांटा (दरवाजा) खोल दो। वे आपसे बड़ा प्रेम करते थे। व अपने पास बैठाकर

भोजन करवाते। वे आपको कई जन्मों का साधु बताते थे। आप व श्री गोविन्द नाथ जी बहुत बार श्री भूरनाथजी महाराज के साथ रमण भ्रमण भी करते थे।

श्री गोविन्द नाथजी महाराजः—श्री गोविनदनाथ जी महाराज एक उत्तम विचारों के दयालु, आजन्म ब्रह्मचारी, शील स्वभाव के असाधारण संत थे। आप अक्सर उनके साथ ही रमण भ्रमण किया करते थे। इतना दिव्य प्रेम था आप महापुरुषों का कि आप दोनों की सत्संग वार्ता कभी समाप्त ही नहीं होती थी। श्री गोविनदनाथ जी महाराज आपके पास पनलावा आ जाते व जब चर्चा सत्संग करके चलने को होते तो आप उन्हें पहुंचाने डूडवा पहुंच जाते। जब डूडवा आ जाता तो आप दोनों वापिस पनलावा चल पड़ते। इस प्रकार रात भर पनलावा डूडवा के बीच यह क्रम चलता रहता था। आप दोनों की अध्यात्म चर्चा समाप्त ही नही होती थी। कभी—कभी आप दोनों किसी एकान्त स्थान में बैठ कर आध्यात्मिक साधना में लग जाया करते थे। ऐसा प्रायः चलता रहता था। बहर भी जाते तो साथ साथ ही रमण भ्रमण करते। आप उन्हे गुरु भाव से आदर देते परन्तु वे आपको अपना अभिन्न संगी ही मानते रहे। आपके जीवन पर उनका गहरा प्रभाव पड़ा तथा सदा ही सत्संग, गुरुभक्ति, साधु सेवा आदि का लाभ मिलता रहा। धन्य हैं ऐसे सखा जिन्होंने समाज के सामने यह अनुपम आदर्श प्रस्तुत किया।

श्री बालजती जी तिड़ोकी एक उच्च कोटि के पहुंचे हुए संत थे। वे रात दिन साधन—भजन में लीन रहते थे। उनके उपदेश सरल एवं गूढ हुआ करते थे। जिन्हें सुनने का अवसर आपको कई बार मिला। उनके ये शब्द "अरे जीव कहां से आया है व कहां जायेगा? अरे मानव सोच विचार कर, तेरे साथ क्या लाया था व क्या ले जायेगा? बन्द मुट्ठी आया था खुली मुट्ठी जावेगा। हरि भजन कर नहीं तो पछतायेगा। अरे चुनेड़ा जीव! सतगुरु बिना तेरी कोई सहायता नहीं करेगा।" अक्सर सुनने को मिला करते। वे कहा करते थे कि "श्रद्धानाथ तो कई जन्मों का साधु है।" उनकी आप पर अति कृपा थी। आप समय समय पर उनके दर्शन सत्संगार्थ जाते रहते थे। उन्हें आप गुरुभाव से मानते थे।

मुकन्दगढ में एक कूमनाथ जी नाम के औलिया संत थे। उनकी आप पर विशेष कृपा थी। वे विलक्षण अवधूत श्री अमृतनाथ जी महाराज की बहुत सी बातें बताया करते थे। जब उनसे किसी न पूछा कि महाराज आपने श्री अमृतनाथजी महाराज के दर्शन किये होंगे तो वे बोले, "मैंने साक्षात दर्शन किये भी हैं व अब भी कर रहा हूँ।" उनकी समाधि पर 'आपने'' शिखरबन्द मन्दिर का निमार्ण करवाया था।

एक बार आप लौसल परमहंस परमानन्द जी दर्शनार्थ गये। वे एक उच्च कोटि के औलिया संत थे। उन्होंने आपका कंधा पकड़ कर कहा कि "भाई तुम तो पूर्व जन्म के साधु हो। तुमने साधुओं बहुत सेवा की है।" उनका स्नेह आशीर्वाद प्राप्त कर आप कृत कृत हो गये।

उनके अतिरिक्त अनेकों अन्य समकालिन साधु संतों से भी आपका सत्संग चलता रहा था। उनका नाम परिचय यहा संभव नहीं हो पा रहा है। इस आंचल के सभी आश्रमों एवं साधुओं से आप उस समय तक परिचित हो चुके थे। समाज में भी आपकी मान्यता साधु के रुप में स्वीकार हो चुकी थी।

द्वारकानाथ यात्राः–खेत में स्थित कुटिया में आपका साधन भजन निरन्तर चलता रहता था। रमण भ्रमण कर वापिस यहां ही आ जाया करते थे।। यह रमण भ्रमण शेखावाटी अंचल तक सीमित था। अब आपके दिल में तीर्थ यात्रा की ईच्छा होने लगी। आपने सोचा कि कुछ पवित्र स्थानों के दर्शन करूँ। बाहर के लोगों का हाव–भाव, रहन–सहन जानूँ व अनुभव करूँ कि गांव के बाहर जगत में क्या है? यही भावना दृढ करके आपने चैत्र कृष्णा द्वितीया सम्वत् 2006 को द्वारकानाथ की यात्रा को उत्साह के साथ प्रस्थान किया। आदरणीय श्री गोविन्दनाथ जी को भी अपने साथ ले चलने की ईच्छा थी पर वे गये नहीं। गाड़ी में बैठ कर वापिस लछमनगढ़ आगये।आप रेल द्वारा फुलेरा होते हुए राजस्थान के ऊँचे स्थान माउंट आबू पर पहूंचे। वहा पर एक मुनि महाराज रहते थे। वे सिद्ध पुरुष थे। उन्होंने आपको बहुत सी ज्ञान की बातें बतायी। दो–थापियां देते हुए कहा "सत्य कहना, सुखी रहना, मौज करना। कभी मुट्ठी चणा, कभी घी घणा। कभी उड़े माल चक्कम चक्का और कभी उड़े फककम फक्का।" आबू के नीचे सिरोही रोड पर एक औलिया नाथ जी रहा करते थे। उनसे भी आपका सत्संग वार्तालाप हुआ। आप को आबू के पहाड़ों में और भी संत महात्मा मिले। उनसे भी आपका सत्संग हुआ। इस स्थान के मन्दिर गुरु शिखर व दृश्य बहुत ही मनोरम हैं। आप दो तीन दिन यहां रुके। यहीं आपका परिचय दो गुजराती विद्यार्थी मगन भाई व धीरु भाई से हुआ जो कई दिन तक यात्रा में आपके साथ रहे। आबू से महसाना, बीरमगांव, राजकोट, जामनगर होते हुए आप श्री द्वारकानाथ पहुँचे वहां पर श्री द्वारकानाथ मन्दिर में दर्शन किये। यह मन्दिर बहुत प्राचीन एवं सुन्दर है। जिसे दो मुख्य द्वार हैं, एक दक्षिण व दूसरा पश्चिम की तरफ है। द्वारकानाथ धाम चारों धामों में से एक है। इसके दक्षिण में गोमती नदी बहती है, जिसके पवित्र जल में यात्री स्नान करते हैं। यहां स्नान व दर्शन कर आप भेंट द्वारका जो यहां से करीब 20 मील दूर समुद्र में स्थित है, दर्शनार्थ पहूंचे। यह स्थान पवित्र व यहाँ के मन्दिर भव्य हैं। यहां तीन दिन रुक कर आपने मूल द्वारिका को प्रस्थान किया। मूल द्वारिका में शंख चक्र, गद्दा

पद्म की छाप लगवायी। यह छाप उसे ही लगवानी चाहिए जो शंख चक्र गद्दा पद्म के नियम निभाता है।

आप मूल द्वारिका से गांधी जी के जन्म स्थान सुदामापुरी जिसे अब पोरबन्दर कहते हैं पहुचे। यहां पर सुदामाजी की मूर्ती तथा साधु संतों के दर्शन किये। यहां तीन चार दिन रुक कर जूनागढ पहुंचे। जो गिरनार पर्वत पर स्थित है। इस पर्वत पर चढने के लिए छः सात मील की चढाई है। चढने के लिए 999 सीढियां बनी हुई हैं। आपने गिरनार पर्वत पर श्री गुरु गोरक्षनाथजी का धूणा व श्री दत्तात्रेयजी की चरण पादुका के दर्शन किये। आपने यहां कुछ रुक कर पुष्करजी को प्रस्थान किया। पुष्करजी में स्नान किया व वहां मन्दिरों में दर्शन किये। पुष्करजी से आपने हरिद्वार पहुंचकर गंगा स्नान किया। इस अवसर पर आपने बहुत से साधु सन्तों का दर्शन सत्संग लाभ प्राप्त किया। वस्तुतः हरिद्वार ऐसा पत्रि तीर्थ स्थान है जिसे दर्शन मात्र से ही आपार आनन्द मिलता है। गंगा मैया की शीतल पवित्र लहरों में गोते लगाने से शरीर निर्मल हो जात है। हरिद्वार से आप दिल्ली रींगस होते हुए बैसाख कृष्णा दशमी संवत 2007 को सानन्द सीकर पहुंच गये।

यहां से खेत में कुटिया पर आगये तथा साधन भजन में तल्लीन रहने लगे। कभी–कभी साधु सत्संगार्थ आस पास जाया करते थे। साथ–साथ वृद्ध दादाजी एवं माताजी की सेवा भी होती रहती थी। बैसाख कृष्णा दशमी सम्वत् 2009 को आपके पूज्य दादाजी का 95–96 वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया। अन्तिम समय में आपको पास बुला कर सिर पर हाथ रख कर कहा "बेटा! तुमने मेरी बहुत सेवा की है। श्री नाथजी महाराज तुम्हारी योग भक्ति सफल करेंगे। " उनके द्वादशे में श्री नवानाथजी महाराज, श्री आनन्दी दास जी गुजरात वाले व अनेक अन्य साधु सम्मिलित हुए। द्वादशे के बाद आपने घर का पूरा कार्य भार छोटे भइयों को सौप दिया व माताजी की आज्ञा प्राप्त कर पूज्य दादाजी के पुष्पों के साथ हरिद्वार को प्रस्थान किया।

जगनाथ यात्राः– गांव से सज्जन प्रमियों ने हरिद्वार के लिए आपको हरि कीर्तन के साथ बिदा किया। आप व श्री गोविन्दनाथजी ने नवलगढ में श्री नवनाथजी महाराज को आदेश प्रणाम करके आषाढ कृष्णा द्वितीया को सम्वत् 2009 को हरिद्वार के लिए प्रस्थान किया। हरिद्वार में गंगा स्नान करके ऋषिकेश में गीताभवन, लक्ष्मणझूला आदि के दर्शन किये। वहां पर साधु सत्संग किया। यहां से श्री गोविन्द नाथजी वापिस गांव लौट आये। आप वहां से काशीविश्वनाथ, प्रयागराज, त्रिवेणी में स्नान करते हुए गया जी पहुंचे गया मन्दिर में भगवान विष्णु के चरणों के दर्शन होते हैं। यहां पर एक विशाल वट वृक्ष भी अति प्रचीन एवं दर्शनीय है। गया जी से आप अनेक तीर्थों के दर्शन करते हुए कलकता पहुंचे। कलकता में काली जी, गोरक्ष बंसरी, भूतनाथ आदि के दर्शन किये। अन्य अन्य तीर्थों के समान कलकता में शान्ति का अभाव है। अतः आप वहां पर कुछ रुक कर कटक

होते हुए जगनाथ पुरी पहुंचे जगनाथपुरी में जगन्नाथ जी के दर्शन कर समुद्र स्नान किया। यहां से साखी, गोपाल, भुनेश्वर, कटक होते हुए मद्रास चहुंचे। मद्रास में एक लाईन रामेश्वरम् को जाती है। रामेश्वरम् मे रामनाथ श्वेत बन्ध, शिवलिंग व मूर्ति के दर्शन किये। यह मन्दिर भव्य एवं विशाल है। यहां दर्शन व समुद्र में स्नान करके वापिस मद्रास आये। मद्रास में श्री रंगजी, सोलापुर, पूना होते हुए बम्बई पहुंचे। बम्बई में बम्बादेवी, महालक्ष्मी, तुलसी तालाब आदि देव स्थान देख कर आप नासिक पहुंचे। यहां गोदावरी में गंगा स्नान करके त्रयम्बकेश्वर महादेव पंचवटी जहां से सीता हरण हुआ था, कपिल भरद्वाज, बाल्मिकी आदि ऋषि मुनियों की कुटिया जो आज भी सुरक्षित हैं के दर्शन किये। नासिक से आप वापिस बम्बई डाकोटा रणछोड़ के दर्शन करते हुए अहमदाबाद पहुंचे। अहमदाबाद से माऊँट आबू पहुंचे। यहां पर रघुनाथ का मन्दिर, अधर देवी, देलवाड़ा, गुरुशिखर, अचलगढ आदि दर्शनीय स्थलों के दर्शन किये। गोपीचन्द भरतरी की प्रसीद्ध प्राचीन गुफा देखी। यहां से मारवाड़ जंक्शन होते हुए मेवाड में श्री नाथद्वारा पहुंच कर श्री नाथ जी के दर्शन किये। श्री कृष्ण जी की मूर्ति ही श्री नाथ जी के नाम से प्रसिद्ध है। यहां से चितौड़गढ़, अजमेर होते हुए तीर्थराज पुष्कर पहुंचकर स्नान किया। पुष्कर से जयपुर पहुंचकर श्री गलताजी में स्नाना किया। जयपुर से आप त्रेमासिक यात्रा सम्पूर्ण करके भाद्रपद पूर्णिमा सम्वत् 2009 को खेत में कुटिया पर पहुंच गये। कुटिया पर श्री नवानाथजी महाराज पधारे हुए थे। उन्होंने आपसे कहा कि सब तीर्थों की यात्रा के बाद लौहागर तीर्थ की यात्रा आवश्य करनी चाहिए। यह लौहागर तीर्थ अति प्रचीन है। उनकी आज्ञा शीरोधार्य करके आपने लौहागर की तीर्थ यात्रा की। इस यात्रा के पश्चात आपने गृह कार्य से पूर्ण उपराम हो कर रमना घूमना प्रारम्भ कर दिया।

दीक्षा संस्कारः—अब तक कुटिया में रहते हुए आपको बारह वर्ष होने लग गये थे। आपके दिल में वैराग्य की लहरें हिलोरें लेने लगी। संसार के प्रति आप उदासीन हो गये। आप सोचने लगे कि वह शुभ सुमंगल सुनहरा प्रभात कब होगा जिस दिन मैं नाथ सम्प्रदाय की दीक्षा ग्रहण करुंगा। जिस पर सत्गुरु कृपा होती है उसके सब कर्म स्वतः ही सिद्ध होते हैं। श्री नाथजी महाराज की असीम कृपा से यह शुभ अवसर शीघ्र ही आ गया।

पवित्र पोष शुक्ला तेरस् संवत् दो हजार ग्यारह में।
आये भेष शरण शुभ सुन्दर मंगल बेला में।।

श्री श्री 1008 श्री अमृतनाथजी महाराज के कृपा पात्र शिष्य श्री ज्योतिनाथ जी का मोक्ष धाम पोष शुक्ला एकम् सम्वत् 2011 को हुआ। पीर ज्योतिनाथ जी महाराज के उतराधिकारी श्री शुभनाथजी महाराज ने पोष शुक्ला तेरस को महाराज का ब्रह्म भोज सम्पन्न किया जिसमें नाथ सम्प्रदाय के बहुत से साधु व शहर व आस पास के गांवों के सत्ती सेवक सम्मिलित हुये। इसी

पावन पर्व पर पोष शुक्ला तेरस गुरुवार संवत् 2011 को श्री शुभनाथजी महाराज ने आपका शिखा–संस्कार करके सन्यास की दीक्षा दी। इस प्रकार इस शुभ पावन बेला में आपने श्री शुभनाथजी महाराज से नाथ सम्प्रदाय की विधिवत् दीक्षा ग्रहण की।

श्री शुभनाथजी महाराज ने स्नेह के साथ आपका नाम 'श्रद्धानाथ' रखा। श्री शुभनाथजी महाराज की कृपा से इस प्रकार आमूलचूल परिवर्तन हुआ व आप साधु समाज में सम्मिलित हो गये। श्री गुरु महाराज ने जब आपके जन्म नाम को भेष नाम परिवर्तन किया तो स्वतः ही "श्रद्धा" का अर्थ इस प्रकार समझायाः–

नरायण से श्रद्धा, श्रद्धा से श्रद्धानाथ।
योगी बन तपस्या करो, श्रद्धा रखना साथ।।

"आज से तुमको श्रद्धनाथ बना दिया है। अब नारायण न कहकर श्रद्धानाथ कहेंगे। वत्स! श्रद्धा सब साधनों का मूल मंत्र है। तुम हमारे पास श्रद्धा लेकर आये हो। जिस वक्ति में श्रद्धा का अटूट भाव होता है उसे श्रद्धानाथ कहा जाता है। दूसरी बात बचपन से ही तुम श्री नाथजी महाराज एवं साधु संतों में अटूट विश्वास रखने वाले हो। तुम स्वयं भी श्रद्धा में विश्वास रखने वाले हो। इसलिए हे वत्स! आज से तुम्हें श्रद्धानाथ कहेंगे। मानव को श्रद्धा पूर्वजन्म के संस्कारों से प्राप्त होती है। नारायण नाम से ही नारायण नहीं मिलते हैं। श्रद्धा से नारायण प्राप्त हो सकते हैं। किसी का भगवान के नाम पर नाम रखने मात्र से ही कल्याण सम्भव नहीं है। चाहे राम, नारायण, जगदीश, विष्णुदत्त, शान्तिलाल, भक्तिप्रसाद क्यों न हो। श्री कृष्ण भगवान गीता में कहते हैं 'श्रद्धावान लभते ज्ञानं', इसलिए तुम्हारा नाम श्रद्धानाथ रखा गया है। तुम श्रद्धावान बनो। श्रद्धा, विश्वास एवं प्रेम के साथ साधना करते रहो। निश्चय ही कल्याण होगा।" इतना सुनकर आपने हर्षोल्लासित व आनन्द विभोर होकर गद्–गद् हृदय से गुरु चरणों में शरण ग्रहण कीं व अपने अपको श्री गुरु चरणों में समर्पित कर दिया। आदेश प्रणम करके आपने कहा हे नाथ! आपकी जय हो! जय हो! गुरुदेव! सब कुछ आप ही हैं। हे प्रभो अब तो श्रद्धा का सार समझ में आगया। "श्रद्धा रुपी गुरु प्रसाद गुरु कृपा से ही प्राप्त होता है। श्रद्धानाथ योगी रमते राम, श्रद्धा मत भूलो आठों याम। गुरु के प्रति पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा ही शिष्य के लिए मोक्षदायिनी है। श्रद्धा मानव को नीचे से उठा कर ऊपर पहुंचा देती है। श्रद्धा से ही किसी वस्तु का अभाव नहीं रहता। श्रद्धा मानव जीवन का अमूल्य रत्न धन है। यही मावन का आत्म बल है। श्रद्धा से गुरु कृपा प्राप्त होती है। गुरु कृपा ही शिष्य के लिए सर्वस्व है।

आपका दर्शन संस्कार बैशाख पूर्णिमा संवत् 2013 के शुभ पावन मंगल दिन श्री केसरनाथजी महाराज के कर कमलों द्वारा सम्पादित हुआ। आपे साथ ही श्री होशियारनाथ जी का भी दर्शन संस्कार हुआ। श्री केसरनाथजी महाराज टांई के महन्त व एक शील स्वभाव के संत थे।

रमणी यात्रायेंः– दीक्षा संस्कार के बाद आप दो युग तक अनिकेतन रमण भ्रमण करते रहे। इन दो युगों में आपने सम्पूर्ण भारत का रमण भ्रमण किया जिसका उपलब्ध विवरण आगे के पृष्ठों में अंकित किया जा रहा है। यद्यपि आप समय–समय पर तीर्थ यात्राओं के लिए भारत के अनेक प्रांतों में जाते आते रहते थे परन्तु आपका अधिकांश निवास व भ्रमण राजस्थान में ही हुआ। राजस्थान आपको अति प्रिय रहा है। यहां का वातावरण व रहन सहन शुद्ध है। श्री श्री 1008 श्री अमृतनाथजी महाराज इस प्रांत को बहुत अच्छा बता गये है। एक कारण यह भी रहा है कि यह आपकी जन्म भूमि भी है। वास्तव में राजस्थान की भूमि पवित्र एवं उत्तम है। यहां सादी वेशभूषा, सादा खान–पान, शुद्ध जलवायु, सरल सरस जीवन, सब लोगों में प्रेम व आध्यात्मिक भावना, आदि इसकी अपनी ही विशेषतायें हैं। पाश्चात्य प्रभाव भी यहां पर न्यून ही है। छोटे छोटे अनेक तीर्थ स्थल हैं। बड़े बड़े विलक्षण महापुरुष भी इस पावन भूमि पर हो गये हैं। इसके वक्ष स्थल पर जहां एक तरफ छोटी बड़ी अरावली की पहाड़ियां तो दूसरी तरफ मरुभूमि के छोटे बड़े बालू के धोरे हैं। जिनकी पद यात्रायें आत्मा को अनायास ही आकर्षित करती हैं। इस पानव भूमि पर यदि कोई साधु महात्मा रमण भ्रमण करता है तो यहां समाज उसका प्रेम से स्वागत करता है तथा अन्न वस्त्र की व्यस्था करता है। जहां इतना साधु सम्मान व सेवा होती है वहां की भूमि पर विरक्त त्यागी महात्माओं का अनिकेतन भ्रमण सरलता से शांति आनन्द व प्रम के साथ सम्पन्न हो जाता है। यही सब करण आपको अनायास ही इस भूमि की ओर आकृष्ट करते रहे हैं। यहा पर तीर्थराज पुष्कर, गलता–जयपुर, नाथद्वारा–उदयपुर लोहार्गल–शेखावाटी, कोलायत–बीकानेर, पवर्तों में माऊंट आबू व अनेक छोटे बड़े तीर्थ स्थान हैं।

राजस्थान में आपका सर्वाधिक रमण भ्रमण शेखावाटी आंचल में हुआ। श्री गुरु महाराज का वचन भी इसी आंचल में रमने घूमने का था। फतेहपुर, रामगढ़, चूरु, बिसाऊ, मण्डावा, झुंझुनु, पीलानी खेतड़ी उदयपुर, लौहागर, सीकर, नवलगढ, पोषाणी, मुकन्दगढ़, लक्ष्मणगढ़, रतनगढ़, सुजानगढ़, बीकानेर व उनके आसपास पड़ने वाले सभी छोटे बड़े गांव ढाणियों में रमते घूमते हुए आपका अधिकांश समय व्यतीत हो गया। इस क्षेत्र के छोटे बड़े सभी जनों से आपका परिचय रहा है। सभी के दिल में आपके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान का भाव रहा है। शेष राजस्थान जैसे जयपुर, अजमेर, जोधपुर, उदयपुर, डूंगरपुर, नागौर, पाली, कोटा, अलवर, भरतपुर, गंगानगर आदि प्रमुख

नगरों व उसके आसपास पड़ने वाले छोटे शहरों, कस्बों एवं तीर्थों में आपने कई–कई बार रमण भ्रमण किया है।

समय–समय पर आप राजस्थान से बाहर भी तीर्थ यात्रा के लिए जाते रहते थे। आगे पृष्ठों में इन सब रमण भ्रमण यात्राओं एवं आपके अनुभव विचारों, विशेष घटनाओं का उपलबध विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। यह विवरण ही इन दो युगों के लिए आपकी जीवन चर्चा का प्रर्याय है। काल क्रम का यथा सम्भव पूर्ण ध्यान रखा गया है, फिर भी कोई असंगति बन गई हो तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

कोलायत यात्राः– संवतृ 2013 मैं आपने कोलायत पहुंचकर स्नान किया। आप तीन दिन तक कोलायत में श्री केवलराम जी रामस्नेही के रामद्वारा में रहे। कोलायत एक प्रचीन तीर्थ स्थान है। यहां एक विशाल तालाब है जिसके बावन घाट हैं। यहां कपिल देव जी का मन्दिर है। ऐसी मान्यता है कि यहां पर कपिल मुनि ने तपस्या की थी। इसी से इस तीर्थ का महात्म है। प्रति वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को यहां पर विशेष मेला लगता है, जिसमें बहुत से साधु सन्त सम्मिलित होते हैं। कोलायत से आपने बीकानेर जोधपुर होते हुए रुणिचे में श्री रामदेव जी के दर्शन किये। यहां से वापिस शेखावाटी आ गये। इसके बाद आप कई बार कोलायत जाते रहते थे।

बद्रीनाथ यात्राः–आपने संवत 2014 बैसाख शुक्ला तृतीया को बद्रीनाथ यात्रा के लिए नवलगढ से प्रस्थान किया। आपके साथ प्रेमनाथ व पूर्णनाथ दो साधु थे। नवलगढ से हरिद्वार पहुंचकर गंगा स्नान किया। हरिद्वार से आप ऋषिकेश, देव प्रयाग, श्री नगर, कीर्तिनगर होते हुए रुद्र प्रयाग पहुंचे वहां से भागिरथी गंगा व अलकनन्दा में स्नान किया। वहां से आपने रामपुर, गुप्त काशी, नारायण चट्टी आदि स्थानों पर रुकने व प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करते हुए अपनी पद यात्रा को शरु रखा। आगे आप रामबाड़ा होते हुए केदारनाथ पहुंचे। केदारनाथ में शिव के दर्शन व गंगा स्नान करके भिजुगीनारायण, रुद्र प्रयाग, पीपल कोटि, विष्णु प्रयाग, गरुड़ गंगा, नंद प्रयाग, पाताल गंगा, पांडूकेश्वर, हनुमान चट्टी, आदि तीर्थों के दर्शन आनन्द लेते हुए बद्रीनाथ पहुंचे। बद्रीनाथ मन्दिर में दर्शन किये। एक आश्चर्य जनक बात कि बर्फ के पहाड़ों में एक गर्म जल व एक ठंडे जल का नाला एक दूसरे के आस पास ही बहते हैं। आपने ठंडे व गर्म जल दोनों में ही स्नान किया। हिमालय का दर्शन एवं दृश्य बहुत ही मनोरम है। चारो तरफ बर्फ के पहाड़ ही पहाड़ ही नजर आते हैं। वास्तव में यह लुभावना दृश्य कुछ अजीब सा है। बद्रीनाथ से आप वापिस ऋषिकेष हरिद्वार, दिल्ली होते हुए सानन्द नवलगढ पहुंच गये।

एक बार रमते घूमते रींगस से आगे गढ गणेश्वर की तरफ पहुंच गये। गढ गणेशर में गर्म जल का प्रपात है व यहां का प्राकृतिक दृश्य मनोरम है। यहां पर लोग बाग प्रसाद व गोठ करने के

लिए आते रहते हैं। आपका यह नियम रहा है कि आप किसी से कुछ मांगते नहीं थे। पिछले दो दिन से ऐसा संयोग बना कि आपको अपने अनुकूल अन्न जल की व्यवस्था न हो पाई। गढ गणेश्वर में कुछ भक्त प्रसाद कर रहे थे। उन्होंने आपसे प्रसाद ग्रहण करने की प्रार्थना की। जब आपने पूछा कि इसमें शुद्ध घी का प्रयोग हुआ है क्या तो उन्होंने मना कर दिया। अतः यहां पर भी आप भोजन न कर सके। आगे जंगल में एक बालाजी का मन्दिर था, वहां पहुचकर आपने श्री हनुमानजी के दर्शन किये व कुछ उपालम्ब देते हुए कहा कि तुम्हारे क्षेत्र में आकर भी साधु भुखा ही घूम रहा है। तत्पश्चात आप वहां पर विश्राम करने लगे। कुछ देर बाद ही एक सुन्दर बलिष्ठ नौजवान जिसके पास रामायण थी वहां पर उपस्थित हुआ व आपसे कहने लगा, "महाराज भोजन पानी की क्या व्यवस्था है? आपने कहा सब हरि ईच्छा है। आप यहां पर क्या करते हैं? तो उस नवयुवक ने कहा कि मैं यहीं आस पास रहता हूँ। रामायण का पाठ करता हूँ। आप किन–किन वस्तुओं को भोजन में पंसद करोगे। मुझे बताओ ताकि मैं आपकी भोजन की वयस्था करुं। आपने कहा मैं तेल गुड़ डलडा घी आदि का सेवन नहीं करता। छाछ, दही, दूध हरे साग व मोटा अन्न मेरा प्रिय खद्य पदार्थ है। परन्तु आप इस दोपहरी में कहां व्यवस्था करोगे। वे बोले मेरे लिए यह सब काम आसान है। मैं अभी व्यवस्था करके आ रहा हूँ। कुछ देर बाद ही नवयुवक एक थाल में पालक की सब्जी, बाजरे की रोटी, मट्ठे का कुलड़ा व जल कलश लेकर उपस्थित हुआ। आपको बड़े प्रेम से भोजन करवाया व बातों ही बातों में कहा कि महाराज साधु को सब्र रखनी चाहिए। भोजन के लिए रीस नहीं करनी चाहिए। जो जैसा मिल जाये उसी में सन्तोष रखना चाहिए। साधु जीवन में सहन करना ही पड़ता है। इतना कह कर भोजन करवाके सब बर्तन लेकर वह नवयुवक वहां चला गया। उस नवयुवक के जाने के बाद आपको श्री हनुमानजी के सामने कहे शब्द याद आये व आपको कुछ विचार हुआ। दोपहर को विश्राम करके शाम आपने आस पास के गांवों में पता लगवाया कि यहां पर कोई नौजवान रामायण पाठी ब्रह्मण रहता है क्या? सभी लोगों ने अपनी अनभिज्ञाता जाहिर की व कहा कि यहां इस क्षेत्र में इस प्रकार का कोई भी नवयुवक नहीं रहता है। आपको निश्चय हो गया कि प्रत्यक्ष हनुमानजी ने ही रामायण पाठी ब्राह्मण का शरीर धारण कर यह लीला की है तथा उन्होंने ही वे सार गर्भित बातें जाते वक्त कही हैं। आपका सदा ही विश्वास रहा है कि जिसकी हनुमानजी पर श्रद्धा होती है उसे वे अवश्य ही दर्शन देते हैं। ऐसे उन्होंने अपको एक बार बन्दर के रुप में व एक बार बसल रुप में दर्शन देकर कर्तार्थ किया था।

ऊँकार नाथ यात्राः–सवंत् 2005 में आपने नवलगढ से प्रस्थान कर हरिद्वार में गंगा स्नान किया। यहां से ऋषिकेश, लक्ष्मणझुला, स्वर्गाश्रम गीता भवन आदि दर्शनीय स्थान देख कर आप दिल्ली, सोनीपत, पानीपत होते हुए कुरुक्षेत्र पहुँचे। यहां सूर्यकुण्ड में स्नान किया। कुरुक्षेत्र से

दिल्ली, मथुरा होते हुए वृन्दावन में भगवान श्री कृष्ण की लीला स्थली देखी। यहां साधु सत्संग व श्री यमुना जी में स्नान किया। यहां से आगरा में ताजमहल देखते हुए आप उज्जैन पहुंचे। उज्जैन में महाकालेश्वर शिव के दर्शन एवं सफरा गंगा में स्नान किया। वहां से इन्दौर होते हुए ऊँकारेश्वर में ऊँकारनाथ के दर्शन व नर्मदा गंगा में स्नान किया। वहां से नाथद्वारा, चितौड़गढ, जोधपुर होते हुए माऊंट आबू पहुंचे। माऊंट आबू में कुछ रुक कर अहमदाबाद को प्रस्थान किया। वहां चार दिन रुक कर बम्बई व बम्बई में कुछ रुक कर नागपुर होते हुए कलकता पहुंचे कलकता में काली, भूतनाथ, गोरख बंसरी आदि दर्शनीय स्थान देखे। यहां से बड़बील (उड़ीसा) में जगनाथ पलड़ीवाला के पास पहुंचे व वहां के दर्शनीय स्थान देख कर वपिस कलकता आ गये। कलकता से दिल्ली, जयपुर होते हुए सीकर पहुंचे। इस यात्रा में बैजनाथजी आपके साथ थे।

इन यात्राओं के पश्चात आप नवलगढ श्री नवनाथ जी महाराज के पास आ जाया करते थे। यहां से शखावाटी आंचल में दस पन्द्रह दिन रम घूम कर वपिस नवलगढ आ जाया करते व श्री नवानाथ जी महाराज की सेवा में उपस्थित रहते। कभी–कभी फतेहपुर श्री गुरु महाराज की सेवा दर्शनार्थ चले जाते थे।

कुम्भ यात्राः– भरत में चार स्थानों –हरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन व नासिक (गोदावरी) पर प्रति बारह वर्ष के बाद कुम्भ का मेला लगता है। संवत् 2019 में कुम्भ का मेला हरिद्वार में था। आपने श्री बद्रीदास जी को साथ लेकर हरद्विार के लिए नवलगढ से चैत्र कृषणा द्वादसी को प्रस्थान किया। हरिद्वार में कुम्भ का पहला स्नान चैत्र शुक्ला एकम को किया। श्री गोरखनाथ मन्दिर दलीचा बारह पंथ हरिद्वार में इस शुभ पर्व पर श्री शुभनाथजी महाराज ने श्री गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की मूर्ति स्थापना की। प्राण प्रतिष्ठा के समय आपने श्री गुरु गोरक्षनाथजी महाराज की मूर्ति को स्नान करवाया। यह मूर्ति बड़ी भब्य व सुन्दर है। इस अवसर पर अखिल भरतीय योगी अवधूत महासभा के अनेक पीर महन्त, साधु सन्त उपस्थित थे। कुम्भ पर्व पर साधुओं का बड़ा जुलूस के रुप में निकलता है, जिसे साधुओं की शाही कहते हैं। इसे देखने लाखों लोग उपस्थित थे। इस वर्ष कुम्भ पर्व शिवरात्री, चैत्र अमावस्या व रामनवमी का था। द्वितीय स्नान आपने महन्त श्री शुभनाथजी महाराज व अन्य साधु श्री शोभानाथजी, श्री डूंगरनाथजी, श्री द्वारकानाथजी, श्री केशरनाथजी, श्री शंकरनाथजी, श्री हनुमाननाथजी, आदि के साथ किया। इस पर्व पर महन्त श्री दिग्विजय नाथ जी महाराज, गोरखपुर, महन्त श्री श्रयोनाथजी–अस्थल बोहर, योगी रामनाथजी, श्री बिरखानाथजी, योगी रामसिंह नाथजी, पीर प्रेमनाथजी, दिल्ली, श्री शुभनाथजी हरिद्वार आदि बरह पंथ के पीर महन्त पधारे हुए थे। कई दिन मेले में रह कर आप वापिस नवलगढ श्री नवनाथजी महाराज के पास आ गये।

इन तीर्थ यात्राओं के पश्चात आप नवलगढ या पोषाणी आ जाया करते थे। नवलगढ व पोषाणी पांच–सात दिन विश्राम करते व पूनः रमण भ्रमण के लिए निकल जाते। यह रमण भ्रमण अधिकतर पैदल ही शेखावाटी आंचल में गांव–गांव, ढाणी–ढाणी में होता रहता था। इस आंचल में शायद ही कोई गांव या ढाणी ऐसी बची हो जिसमें आपने प्रदार्पण न किया हो। हर गांव कस्बे में आज भी आपके सेवक भक्त हैं। कुछ निराली विशेषतायें जो इन रमणी यात्राओं में सदा लोगों ने आपके साथ देखी जिनकी अब भी चर्चा जन सामान्य में होती रहती है। यही नहीं वरन् जनसाधारण में ये विशेषतायें ही साधु आदर्श का प्रयाय बन गई हैं जिनकी कसौटी पर वे दूसरे साधु महात्माओं को परखा करते हैं। आपका यात्रा भ्रमण अनिकेत था। कभी भी आप किसी गृहस्थी के घर पर रात्री विश्राम नहीं करते थे। गांव के बाहर स्थित स्कूल या धर्मशाला में रुकते या फिर जंगल में चले जाते। किसी से कुछ भी नहीं मांगते थे। यहां तक कि कभी किसी को भेजन के लिए भी नहीं कहते । चाहे कितने ही दिन के भूखे क्यों न हों। न किसी से वस्त्रादि मांगा करते। जो कोई भी प्रेम पूर्वकक आपको दे देता उसे स्वीकार कर लेते थे। स्वीकार करते समय भी आप इन बातो का विशेष ध्यान रखते थे कि यह अन्न, वस्त्र मेहनत की कमाई के होने चाहिऐं। गरीब जिसके दो जून रोटी भी जुटाना भी कठीन होता है, उसका भी नही होना चाहिए। क्योंकि ज्यादातर गरीब लोग ऋण करके ऐसी सेवायें कर दिया करते हैं। बल्कि इन्हें ही आप सबल लोगों से कुछ न कुछ सहायता दिलवाया करते। अधिकांशतः मध्यम वर्ग ही जो अपनी मेहनत की कमाई करता है आपके अनुकूल बैठता था। मध्यम वर्ग से ही आपका सम्पर्क अधिक रहा है। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि आप गरीब व अमीर को नहीं चाहते थे। आप तो समदृष्टा थे। सभी को चाहते हुए व सभी की सुख दुख की सुना करते थे। आपके दिल मे गरीबों के प्रति असीम दया भाव था। ये नियम तो अपने केवल खान–पान तक ही सीमित थे। किसी से विशेष रखने का अभिप्राय कभी भी किसी दूसरे के प्रति दुराव का कारण आपके लिए नहीं बना। फिर आपका खान–पान व रहन–सहन तो इतना सादा सरल रहा है के किसी पर भार बनने का प्रश्न ही पैदी नहीं होता था। इस क्षेत्र का सादा खान–पान जो सभी को मय्यसर होता है वही आपका खान–पान था। कही से भी दो रोटी, छाछ, राबड़ी, सब्जी, दूध आसानी से उपलब्ध हो जात थे। यही आपकी केवल मात्र आवश्यकता थी। भेंट की तो बात ही नहीं, आप तो रुपये पैसे को छूते भी नहीं थे। अधिकांश पैदल घूमते व पैरों में भी जूती नहीं पहनते थे। कभी कोई सेवक भक्त टिकट कटवाकर मोटर गाड़ी में बैठा देता तो उसे भी इसी संतोष के साथ स्वीकार कर लेते जिस सन्तोष के साथ पद यात्रायें किया करते थे अन्यथा सदा ही एक हाथ में घोटा व दूसरे हाथ में कमण्डल। भगवां चादर, भगवां तहमद् व साफा, गले में सिंगी, नादी व रुद्राक्ष की माला, कंधे पर भगवां झोला यही मनभावन आनन्द दायक रुप

रहा है आपका। आखें को सुकुन, ह्रदय को शान्ति, प्रेम व आनन्द दायक यह सुन्दर रुप आज भी लांगों के दिल में उसी प्रकार विराजमान है। जिस प्रकार उस रमण भ्रमण काल में हुआ करता थ। बल्कि आज तो स्मृति शेष में यह और भी अधिक दिव्य बन पड़ा है।

आपका यह रमण भ्रमण मात्र समय व्यतीत करने के लिए आयोजनार्थ निरुद्देश्य नहीं था। एक बहुत बड़ा उपकार कर गये हैं आप समाज पर इन रमण भ्रमण यात्राओं द्वारा। आपने समाज के कर्णधार नवयुवकों की शक्ति एवं मेहनत को पहचान कर उन्हें आध्यात्मिक एवं नैतिक शिक्षा का ज्ञानोपदेश प्रदान कर विशेष रुप से अपकृत किया है। आपकी सरल शिक्षायें एवं नैतिक सदाचरण के उपदेश से यह वर्ग बहुत प्रभावित हुआ। आप स्कूलों, कॉलेजों एवं छात्रावासों में जाते, वहीं पर रुकते व इन संस्थाओं में अध्ययन अध्यापन करने वाले शिक्षित नवयुवकों को अपने साधु स्वभाव, सरल उपदेशों , आध्यात्मिक ज्ञान एवं प्रेम मय व्यवहार से प्रभावित कर उन्हे अनायास ही कृतार्थ किया करते। यह युग शिक्षा के प्रचार प्रसार का प्रारम्भिक काल था। पाश्चात्य शिक्षा के अनेकाअनेक गुण–अवगुण इन नव शिक्षितों में सरलता से अपना स्थान बना रहे थे। फलतः हमारी पुरातन भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के प्रति अनादर का भाव इन लोगों में जागृत होने लगा। सुन्दर भरतीय आदर्शों का ह्रास एक चिन्ता का विषय था। आपने इस तथ्य को समझा व भरतीय संस्कृति व आदर्श परम्पराओं के प्रति इस वर्ग में पुनः आस्था प्रतिस्थापित करने का बीड़ा उठाया। इसमें आपको आशातीत सफलता भी मिली। इन शिक्षित नवयुवकों में आध्यात्मिक रुचि एंव आदर्श चरित्र निर्माण का महत् कार्य करके आपने समाज को विशेष योगदान किया। यही नहीं जब नवयुवक सुधरे तो समाज के शेष अवयव बाल व वृद्ध उन्हें देख कर ही बहुत कुछ सीख गये। वृद्धों से आपका परिचय युवकों द्वारा होता था, जिससे समाज का दुगना हित साधन होता था। वृद्ध माता पिता की बात नवयुक पुत्र मानले यह जरुरी नहीं है, परन्तु नवयुवक पुत्र की बातें वृद्ध मात पिता प्रसन्न दिल से स्वीकार कर लिया करते हैं। फिर बाल बच्चों पर भी नवयुवकों का अच्छा प्रभाव पड़ता है। इस विधि का अनुसरण ही आपकी बौद्धिक प्रखरता एवं सफलता की एक मिशाल है।

यह समाजोपयोगी कार्य आपने एक या दो हजारों नवयुवकों को तैयार कर उन्हें समाज के सामने आदर्श रुप में स्थापित करके किया। ये नवयुवक जो अब प्रोढावस्था की तरफ अग्रसर हैं आपके आदर्शों के प्रकाश स्तम्भ हैं समाज के सामने। जहां कहीं भी यह लोग कार्यरत हैं, वहां पर ही निष्ठा व ईमानदारी से कार्य, सद्व्यवहार, सचरि़ता, एवं प्रेम भाव से सभी के प्रशंसा पात्र बने रह कर आप की अलग ही पहचान बनाये रखते हैं। धन्य हैं ऐसे लोग जिन्हें आप श्री नाथजी महाराज ने अपने आदर्श प्रतीक स्वरुप समाज में प्रतिष्ठित किया व अपने पवित्र उद्देश्य की पुर्ति हेतु बनाया। माता–पिता गुरुजनों एवं बड़े–बुड्ढों का सम्मान, हम उम्र वालों से प्रेम व छोटों के प्रति स्नेह व

आदर्श मार्ग की सद् प्रेरणा इनकी अपनी विशेषतायें हैं। नित नियम से प्रार्थना, इर्श्वर में सरल विश्वास व हिन्दु दर्शन में अगाध श्रद्धा इनकी भाव भावना से सदा विद्यमान रहती है। न किसी को अनाश्यक दबातें हैं तो न किसी से अनावशयक दबते हे।। अपने हक पर चलने वाले ये सौभाग्यशाली लोग समाज को आपकी ही अनुपम देन है। मुझे याद आते है रामायण मद् भागवत के वे आख्यान जिनमे बन्दरों का श्री राम व गोप गोपिकाओं का श्री कृष्ण लीला के हेतु देवताओं द्वारा शरीर धारण करना बताया गया है। लगता है ऐसे सब शुद्ध सरल हृदयी नवयुवक भी आपकी अद्भूद लीला देखने व उसकी पूर्ति हेतु ही इस वर्तमान काल में उत्पन्न हुये हैं। सम्भवतः ये लोग ही कारण हों इस धरा पर आपके अवतरण के। इनका प्रयोजन अनायास ही सफल हो गया है जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है।

यद्यपि आप चमत्कारों से पहरेज रखते व चमत्कारों को साधना के दृष्टिकोण से जीवन में बाधा स्वरुप ही मानते थे। आपका अधिक बल विचार शुद्धि एवं दृढ़ ईश्वर विश्वास पर ही था। आप इन चमत्कारों को संसार रिझाने का साधन मात्र ही मानते थे। फिर भी आपसे अनायास ही अनेक ऐसी घटनाऐं हो जाया करती थी जिनका जनमानस पर अमिट प्रभाव पड़ता। आप की उपरोक्त भावना व विचार धारा को ध्यान में रखते हुए भी मैं सभी न सही पर कुछेक घटनाओं का विवरण देने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। इस धृष्टता के लिए आपसे कर बद्ध प्रार्थना कर क्षमा याचना करता हूँ।

1. एक बार आप लोहागर की तरफ से रमते हुए नवलगढ की तरफ आ रहे थे। रास्तें में प्यास लगने पर एक ढाणी में जहां पर कुछ व्यक्ति कुआ खोद रहे थे पानी पीने के लिए पहुंचे। वहीं पर एक खाती कार्य कर रहा था। उसने आपको बिना पहचाने ही दूर से कहा कि अंधा है क्या जो जुतियां पहने ही कुए पर चला आ रहा है। कुए में पड़ेगा क्या? आपने कभी जुतियां पहनी ही नहीं व उस समय भी नंगे पांव थे। आपने कहा कि अंधा मैं हूँ या तुम, यह समय ही बतायेगा व आप वहां से वापिस आ गये। आप तो आगे रम गये। दूसरे दिन ही वह खाती उस कुए में गिर कर मर गया। इतना ही नहीं उस खाती परिवार के तीन चार और सदस्य भी उसी प्रकार कुए में गिरकर मर गये। तब जो कुआ खोदने वाले थे उन्हें इस बात का ध्यान आया। उन्होंने पत्ता लगाया कि वे कौन साधु थे। पूरे गांव के प्रमुख आदमियों ने आकर आपसे प्रार्थना की महाराज! उसने मुर्खतासे आपका अपमान किया था। अब आप दयालु हैं क्षमा करो। इस परिवार को विनाश से बचाओ। आपने सहज भाव से कहा भाई मैने तो कुछ भी नहीं किया है। साधु का अपमान करने के कारण गुरु लोग नाराज हो गये होंगे। उन्ही से तुम भी प्रार्थना करो व मैं भी प्रार्थना करता हूँ। तब जाकर इस घटना की पुनारावृति रुकी।

2. इसी तरह एक अन्य घटना आपके साथ दीनारपुरा गांव में घटित हुई। आप दीनारपुरा गांव के स्कूल में अकेले ही ठहरे हुए थे। दोपहरी में गांव के दो व्यक्ति जिनमें एक ब्राह्मण व दूसरा जाट था आपके पास आये। वे दोनों आपको आर्य समाजी मानते थे। अपने साथ सत्यार्थ प्रकाश लाये व आपसे वाद विवाद करने लगे। उन दिनों आप कम ही बातचीत किया करते थे व ज्यादातर एकान्तिक साधन भजन में ही तल्लीन रहते थे। आपने शूरु में उन्हे कुछ जवाब दिये परन्तु जब आपने देखा कि ये लोग केवल कुतर्क एवं वाद विवाद के लिए ही आये हैं तो आपने मौन साध लिया। सज्जन पुरुष की चुप को खल हमेशा कमजोरी मानता है। उन्होंने भी यही समझा व और अधिक वाद–वितण्डा करने लगे। आपने उनसे कहा भाई मैं कुछ भी नहीं जानता अब तो आप चले जाओ। तो वे बोले आपको ही यहां से जाना होगा। इतने में शाम हो गई। आपने देखा कि ये मुर्ख लोग रात को और अधिक परेशान करेंगे तो आप वहां से उठ कर एक चौधरी के नोहरे में आगये। वहां भी वे कुतर्की आपके साथ ही आये व जिस पंलग पर चौधरी आपको बैठा रहा था उसके आगे खड़े हो गये। चौधरी जो अभी जिवित है व अंधा है। उस समय भी अंधा था। उससे यह सहन नहीं हुआ व उसने उन दुष्टों पर लाठी उठाली। चूंकि उसे दिखाई नहीं देता था इसलिए किसी पर भी प्रहार कर सकता था। आपने उसे अपनी शपथ दिलाकर शांत किया। चौधरी के अन्य परिजन उस समय वहां पर थे नहीं । अन्त में आपने यही उचित समझा कि यहां से चल देना चाहिए नहीं तो मेरे लिए ये लोग आपस में लड़ेंगे। आप सुबह से लेकर उस समय तक एक बार भी उतेजित नहीं हुए तथा न ही एक कड़ा शब्द भी उन दुष्टों को कहा। यहां से गोठड़ा आकर आपने रात्री विश्राम किया व दूसरे दिन बऊ श्री नवानाथजी महाराज के पास पहुचे। श्री नवानाथ जी महाराज ने आपको देखे ही कहा "तूं कुछ भी नहीं बोला। ज्यादा नहीं तो दो चार गाली ही दे लेता। अब तो तूंने कुछ भी न बोल कर उन्हें मार दिया। साधु को कुछ न कुछ कह देना चाहिए जिससे अगला कुछ बच जावे।" दूसरे दिन ही ब्राह्मण असाध्य रोग से ग्रसित तथा जाट पागल हो गया। ब्राह्मण से किसी ने कहा कि उनसे माफी मांगले तो बोला माफी बेसक मांगलो परन्तु अब मैं बचूंगा नहीं। मेरे दिल में जलन लग गई है। वह कुछ दिनों में ही मौत के मुह में समा गया। उस पागल जाट को लेकर गांव के लोंग आपके पास आये तो आपने कहा भाई मैंने कुछ भी नहीं कहा है। गुरु लोगों ने ही इसे दण्ड दिया है, वे ही माफ कर सकते है। मेरा इसमें करेई हस्तक्षेप नहीं है। इसके कोई लड़का है क्या? तो लोग बोले महाराज इसके लड़का तो है। आपने सहज भाव से कहा इसका तो मैं कुछ नहीं कर सकता परन्तु इसका लड़का पढ़ लिखकर अच्छा अफसर बन जावेगा। यह व्यक्ति वर्षों तक पागल रह कर मर गया। हां आपके वचनानुसार उसका लड़का एक बड़ा अफसर बना जो आज भी मौजूद है। कैसी विचित्र दया होती है साधु–महात्माओ की।

इन दो घटनाओं का जब जनसामान्य को पत्ता लगा तो लोगों ने आपसे अनावश्यक बात न करना ही उचित समझा। वैसे भी इस क्षेत्र के जन मानस में यह बात निर्विवाद है कि साधु को नहीं छेड़ना चाहिए।

3. एक बार आप मुकन्दगढ़ से आगे घोडीवारा गांव मे पधारे हुए थे। वहां का चौधरी मूलाराम (डा. मालीरामजी, जो नवलगढ कॉलेज के प्रिंसीपल रह चुके हैं के पिताश्री) जो आपसे प्रेम श्रद्धा भाव रखता था, अपने पुत्र रामेश्वर को साथ लेकर आया व नमस्कार करके प्रार्थना करने लगा कि महाराज यह लड़का जवान अवस्था में ही कमर में से जुड़ गया है। चल–फिर उढ–बैठ नहीं सकता। इसकी घरवाली का भी यही हाल है। आपने दया करके कहा कि कुछ ऊंट भी इसी तरह जुड जाते हैं।। इन्हें भी गुड़ फिटकारी दो। किसी ने पुछा कि महाराज कितनी गुड़ फिटकारी दे। इस पर आपने कह दिया मन (40 सेर) फिटकड़ी व मन गुड़ दो। यह सुन कर सब सक्ते में आ गये। मन फिटकड़ी तो ऊंट भी नहीं झेल सकता। आप तो इतना कह कर वहां से रम गये। चौधरी ने किसी साधु संगत करने वाले सज्जन से जब यह चर्चा की तो उसने बताया कि यह तो साधुओं की भाषा है तुम उन्हें एक छटांक फिटकड़ी व एक छटांक गुड़ खिलादो। चौधरी ने वैसा ही किया। महा आश्चर्य दोनो ही दम्पति एक दम निरोग हो गये।

4. एक बार आप पालवास रमे हुए थे। वहां पर एक ब्राह्मण बालाजी की 'बूझा' किया करता था। इसे पास हमेशा भीड़ लगी रहती थी। उस भीड़ में बाडलवास या किसी आसपास के गांव का एक राजपूतों का बीस–बाईस वर्ष का रोग ग्रस्त युवक उसके माता–पिता एवं संबंधियों द्वारा लाया हुआ था। ब्राह्मण ने बूझा देख कर कह दिया कि इसे बालाजी का दोष है, मैं ठीक कर दूंगा। जब किसी न आपसे भी निवेदन किया तो आप बोले उसे गांव ले जाओ। उन लोगों ने उस ब्राह्मण से कहा कि बाबाजी कह रहे हैं कि इसे गांव ले जाओ। इस पर ब्राह्मण कुछ आवेश मे आ गया व बोला कि मुझे भी बालाजी कह रहे हैं कि उसे यही रखो, वह पूर्ण स्वस्थ होगा। होनी को कौन टाल सकता है। दूसरे दिन ही वह नवयुवक समाप्त हो गया। परिजनों को रोते बिलखते हुए उसका शव लेकर ही गांव जाना पड़ा।

5. पालवास से आगे कुमास में एक राजपुत शैतानसिंह जो किसी समय जयपुर ठीकाने की फौज में अफसर था बहुत ही अडियल व उग्र स्वाभाव का था। कुमास से होकर जाने वाले साधुओं से प्रश्न करता व जबाब न देने पर उन्हें अपमानित करता व उनके वस्त्र आदि रखवा लेता। आप भी एक बार रमते–घुमते कुमास पहुचे। इस दम्भी राजपूत ने आपके हाथ से कमण्डल ले लिया व बोला कि जब आप मेरे प्रश्नों का उत्तर देंगे तभी आपको यह कमण्डल वापिस दूंगा। आपने कहा कि कोई बात नहीं परन्तु मेरी भी एक शर्त है कि यदि मैं प्रश्न का जवब न दे पाऊं तो मेरा सिर

धड़ से अलग तुम कर देना व यदि दे दूं तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग मैं कर दूंगा। जाओ पहले घर से तलवार लेकर आओ। फिर जंगल में चलते हैं। वहीं आपके प्रश्नों का उत्तर देंगे। वह राजपूत घर से तलवार ले आया तथा आपके साथ गांव से बाहर गोचर भूमि में आ गया। बहुत से गांव वाले भी कौतुहलवश साथ हो लिए। इस गोचर भूमि तक तो वह आ गया पर आगे नही चल सका व आपके चरणों में पड़कर क्षमा याचना करने लगा व कहने लगा कि मुझे आज क्षमा कर दें। मैं भविष्य में किसी भी साधु को कभी तंग नहीं करुंगा। आप बोले ऐसे नहीं। सूर्य का तरफ सात पांव धरो और फिर यही बात दोहराओ तो तुम्हें क्षमा कर सकता हूँ। उसने वैसा ही किया। तब आपने उसे क्षमा कर दिया व उत्तम शिक्षायें देकर कृतार्थ किया। इस दिन के बाद यह राजपूत प्रभु भक्त एवं साधु सेवी बन गया।

6. एक बार आप पालड़ी गांव में स्कूल भवन पर बैठे हुए थे व गांव में रामलीला हो रही थी। रामलीला में एक पात्र साधु का वेश बनाये बैठा था तथा दूसरा व्यक्ति स्त्री पात्र बना हुआ उस महात्मा से पुत्र कामना के लिए तरह–तरह से याचना कर रहा था। यह याचक का अभिनय पिपराली गांव के एक अध्यापक भगीरथजी कर रहे थे। किसी ने आपको बताया के इस अध्यापक के सन्तान नहीं है इसलिए जो भी प्रार्थना वे कर रहे हैं दिल से निकल रही है। उधर मंच पर आसीन महात्मा किसी प्रकार राजी नहीं हो रहा था। आपको दया आ गयी आपने अनायास ही कह दिया कि महात्मा क्या देगा। श्री नाथजी महाराज तुम्हें पुत्र देंगे। सुबह यह बात किसी ने उस अध्यापक को भी कह दी। ठीक नौ महिने बाद उस अध्यापक के घर पर बच्चा हुआ। आज भी वह अध्यापक उस बच्चे सहित आपका सेवक है भक्त है।

7. मुकन्दगढ में बैठे आप चर्चा कर रहे थे कि किस प्रकार एक ब्राह्मण ने श्री अमृतनाथजी महाराज से वचन प्राप्त करने में चूक की। डूडवा गांव में एक अविवाहित बाह्मण था जो श्री अम्तनाथजी महाराज के जन्म परिवार का कुल गुरु था। एक बार जब बड़ा महाराज रमते हुए डुडवा आये तो बातों ही बातों में उस ब्राह्मण ने फरमाया कि महाराज आपके साधु बनने से मेरा एक जुजमान कम ही हो गया। श्री अम्तनाथजी महाराज बोले, "ब्रह्मण देवता तु जो चाहे मांगले।" इस पर वह ब्रह्मण बोला कि महाराज मेरे जैसे ही आप हैं। आपसे मैं क्या मांगू? इस प्रकार वह कर्महीन कुछ न मांग सका। श्री नवानाथजी महाराज के साथ भी एक बार इसी प्रकार की घटना हुई। डूडवा ग्राम के चौधरी चेताराम उनकी सेवा किया करता था। एक दिन चौधरी ने कहा कि महाराज ! दूध, दही लाकर सेवा तो हम करते है और आप आर्शीवाद बणियों को देते हे। श्री नवनाथजी महाराज ने हंस कर कहा कि चौधरी तेरी इच्छा हो सो मांग लो। चौधरी ने कुछ सोच कर कहा कि महाराज मैं मंरु तब भूत बन जाऊं। तब श्री नवानाथ जी महाराज ने कहा तुमने

हमारी बहुत सेवा की है, इसलिए यह तो मैं नही कहूंगा परन्तु जा जब तु मरेगा तो रोला (चर्चा) जरुर उड़ जावेगा। किसी ने चौधरी से कहा तुमने यह अनिष्ट क्यों मांगा? चौधरी ने कहा जब मैने विचार किया तो भूत ही सर्व समर्थ लगा, इसलिए मैने मांग लिया। यह का यह हुआ। जब चौधरी मरा तो सरकार के डर से उसके पुत्र खर्च वगैरह नहीं कर पाये। इससे गांव वालों ने चर्चा करनी शुरु करदी कि आज हमने चेता को यहां देखा, कल वहां देखा। इससे उसके पुत्रों ने छुटकारा पाने के लिए छः माह बाद खर्च किया तो गांव वालों ने चर्चा छोड़ दी। जब यह वृतान्त आप कह रहे थे तो वहां पर मांडासी गांव का एक खाती बैठा था। इसने कहा "महाराज उसे मांगना नहीं आता था" आप बोले के तूं मांगले। उन गुरुओं जितना तो न सही पर तेरी मांग तो पूरी कर ही देंगे। इस पर खाती ने कहा के मेरे सामने सदा लकड़ी पड़ी रहनी चाहिए। आपने कहा तथास्तु। आज भी वह वृद्ध खाती जीवित है। काठ का नौहरा भरा रहता है। काम करके थक गया है परन्तु काठ समाप्त नहीं हुआ है। कभी कभी आपके दर्शनार्थ आता तथा कहता कि महाराज उस दिन मैने भूल करदी अब तंग आ गया इस काठ को छोलते छोलते। अब इससे पीछा छुटाओ, पर आप हंस कर कह दिया करते कि भाई अब तो मरने पर ही पीछा छूटेगा।

8. एक बार आप फतेहपुर से रमने लगे तो श्री शुभनाथजी महाराज ने आपके आदेश प्रणाम का जबाब नहीं दिया। आप जिधर भी जाते वे पीठ फेर जाते। अन्त में आपने किसी प्रकार आदेश प्रणाम करके वहां से प्रस्थान किया व जोधपुर की तरफ रम गये। पीछे से श्री शुभनाथजी महाराज को विचार हुआ तो उन्होंने आपका पता लगाकर जोधपुर से वापिस बुलाया। आते ही जब आपने आदेश प्रणम किया तो बोले कि तुम्हारे जाने के बाद मुझे ऐसा लगा कि यह शरीर तो जा सकता है फिर श्रद्धानाथ से कब मिलेगा। इसलिए तुम्हें बुलाया है। तूं बता बेटा तुम्हें कैसा लगा। आपने कहा महाराज! मुझे कही पर भी चैन नहीं रहा यही लगता रहा कि बाबाजी के दर्शन करुं तब शान्ति मिले। आपने चारों तरफ नजर दौड़ाई तो श्री शुभनाथजी महाराज बोले कि क्या देख रहा है? आप बोले कि मैने जोधपुर में एक दृश्य देखा जिसमे आप चोबनादार जूति पहन कर चौक में खड़े थे। वैसी जुतियां मैने आज तक आपको पहने हुए नहीं देखी व न ही अब भी उन जुतियों को देख रहा हूँ। श्री शुभनाथजी महाराज ने प्रसन्न होर सभी साधुओं को बुलाया व कहा कि सुनों श्रद्धानाथ क्या कहता है फिर अन्दर से वे जुतियां मंगवाकर दिखाई जो उन्होंने केवल एक बार ही जब बन कर आयी थी तब पहनकर चौक में घूमे थे। फिर यह कह कर रखवा दी कि ये अपने लायक नहीं हैं। श्री गुरुमहाराज ने अन्य साधुओं से कहा कि श्रद्धानाथ ही लक्ष्य को समझता है। इसका चित अहर्निश गुरु चरणों में लगा रहता है।

9. भादवासी के चौधरी के पोता नहीं था। एक दिन चौधरी सपत्निक आपके पास आया व विनती करने लगा कि महाराज् आपकी दया से सब कुछ है परन्तु पोता नहीं होने से घर सूना ही रहता है। आपने हंस कर कहा कि चौधरी यदि तूं गरीब हरिजनों के जितना भी धन मांगता है वह सब माफ करदे तो तेरे पोता हो सकता है। चौधरी ने आपके सामने हां भी कह दी। महाआश्चर्य कि ठीक नौ माह बाद ही उसे पोता हो गया। चौधरी बहुत प्रसन्न हुआ व आपके दर्शनार्थ गया। तीन–चार वर्ष बीतने पर भी इस बालक को बोली नहीं आयी। चौधरी, उसकी पत्नी व बेटे की बहू उस बालक को लेकर आपके पास आये। चौधरी ने कहा महाराज आपकी कृपा से लड़का तो हो गया पर वह बोलता नहीं है। इसे बोली तो आनी ही चाहिए। आपने कहा इससे ही पूछो कि यह क्यो नहीं बोलता। चौधरी चुप हो गया तो आपने कहा, "क्या तूने हरिजनों के सब रुपये छोड़ दिये। बही में जमा कर दिये क्या?" चौधरी बोला, महाराज !"बही में तो जमा नहीं किये है परन्तु उनसे मांगता भी नहीं हूँ।" इस पर आपने चौधराइन को इंगित करते हुए कहा कि यही कारण है कि लड़का बोलता नहीं है तुमने चालबाजी की उसी का यह परिणाम है। चौधरी व चौधराइन दोनों हाथ जोड़ कर बोले जाते ही आंक जमा कर देंगे, तो आपने कहा कि यह अपने आप बोलने लग जावेगा। गांव जाते ही चौधरी ने आपके वचन को पूरा किया तो लड़का बोलने लग गया।

10. इससे भी आश्चर्य जनक घटना हुई जगमालपुरा गांव में। श्री चुन्नीलालजी के सम्बन्धी श्री तुलसाराम जी को अधेड़ावस्था तक कोई संतान नहीं हुई। जब डॉक्टरों से बच्चा न होने के कारण का पता लगया तो उन्होंने जांच करके बताया कि तुम्हारी पत्नी के बच्चादानी का मुह बन्द है। इसलिए कभी भी बच्चा नहीं होगा। यह बात एक दिन श्री चुन्नीलालाजी ने तुलसाराम जी के सामने ही आपको बतायी। आपके श्री मुख से अनायास ही निकल गया कि जब मालिक देता है तो छपपर फाड़ कर दे देता है। डॉक्टर कोई भगवान थोड़ा ही है। ये वचन सत्य साबित हुये। उनकी सहधर्मिणी के गर्भ रह गया। नौ महिने बाद डाक्टरों से राय ली तो बोले कि आपरेशन करके बच्चे को निकालना पड़ेगा। यही किया गया। श्री तुलसाराम जी को मालिक ने छप्पर फाड़ कर बच्चा प्रदान किया। अनहोनी को होनी कर दिया।

एक आर आप रेल यात्रा कर रहे थे। दो यात्री आपको देखकर आपस में बहस करने लगे। एक कह रहा था कि इनके ललाट पर लाल टीका है व दूसरा कह रहा था कि नहीं है। कुछ देर तो आप सुनते रहे फिर बोले आप दोनों ही सत्य हो उन्हें पूरा रहस्य आपने समझाया।

11. जयपुर में एक बार आपके दर्शनार्थ एक तांत्रिक साधक आये। वे नमःस्कार करके बैठ गये। कुछ देर बैठे रहे व जब अवसर मिला तो इन्होंने आपसे निवेदन किया कि आप आज्ञा दें तो मैं एक प्रश्न पूछ लूं। आपने सहर्ष इजाजत दे दी। तब उस तांत्रिक ने यह रहस्योद्घाटन किया कि

महाराज! जब आप प्रसाद वितरण करते हैं तो एक दूसरा ही हाथ हवा में से आता है व प्रसाद वितरण करता है। जब मैने गौर करके देखा तो दो महापुरुष आपके पिछे खड़े दिखयी दे रहे हैं। जिनमें से एक तो दिगम्बर है तथा दूसरे भगंवा वस्त्र धारण किये हुए हैं। दिगम्बर महापुरुष का हाथ लम्बा होकर आपके प्रसाद पात्र तक पहुंच रहा है। अब मुझे बताओ कि ये महापुरुष जो आपके पिछे हैं, कौन हैं? आपने कहा "धन्य है आपका योग साधन। अब आप ही सोचो कौन हो सकता हैं। सब गुरु लोगों की कृपा है।" फिर काफी देर तक आप उनसे ज्ञान वार्ता करते रहे।

12. एक बार कलकता से किसी सेवक ने आश्रम पर धूप के डिब्बे किसी के हाथ भेजे। लाने वाले ने मन्दिर में धुप चढा कर आपसे नमःस्कार करके कहा कि महाराज! अमुक आदमी ने धूप भेजी है। आपने मुझसे वे डिब्बे मंगवाये व देखकर उस व्यक्ति से कहा वहां सात दिखाई दे रहे थे, यहां पांच ही कैसे है। बेचारा उसी समय आवाक रह गया। चरणों में पड़कर अनुनय विनय करने लगा कि महाराज! मुझसे भूल हो गयी। अच्छी धूप समझकर दो डिब्बे मेरे घर वालों ने रख लिए। आप मुझे क्षमा करें। वे भी मैं ला दूंगा आप बोले कोई बात नहीं। तुम्ही उन्हें बरत लेना। मैंने तो ऐसे ही कह दिया। विचार मत करना। कैसी अदभूत लाला होती है महात्माओं की।

13. इसी प्रकार एक बार नवलगढ में श्री नवनाथ जी महाराज की कुछ मोहरें किसी ने चुरा ली। हजरात वालों ने एक निर्दोष भाई का नाम बता दिया। आप भी वहां पहुंच गये। नाई के घर वाले बेचारे रोने लगे। आपने ध्यानसे देखा व वहां पर काम करने ब्रह्मणों के लड़के छगन को बुलाया व उसे प्रेम से समझाकर कहने लगे कि तुम मोहर बता दो तुम्हें कुछ नहीं कहेंगे। उस लड़के ने मना किया तो आपने कहा कि जिन छः मोहरों को बेच दिया उनकी कोई बात नहीं शेष तो ला दो। यह सुनकर लड़का आवाक रह गया व आपके चरणों में गिर कर क्षमा याचना करने लगा। उसने पूरी बात बतायी व यह भी बताया कि छः माहरे मैने अमुक सुनार को बेच दी हैं। आपने कहा कि वे छः मोहरें हम अपने आप मंगवा लेंगे। शेष मोहरें जाओ लेकर आओ। वह लड़का घर गया व उसने सारी बात अपने चाचा को बतायी। चाचा का मन खराब हो गया। उसका चाचा उसे सिखा लाया व आपके पास आकर कहने लगा कि आपने हमारे लड़के को डरा धमका कर हां भरवा ली है। उसने माहरें नहीं ली हैं आप तख्त पर बैठे थे। वह लड़का, उसका चाचा वो दो तीन आदमी नीचे फर्श पर बैठे थे। आपने उसके चाचा से कहा यदि मैंने डरा धमकाकर हां करवायी है तो कोई बात नहीं। जाओ इस लड़के को सही सलामत घर ले जाओ। इतना कह कर आपने उस लड़के को जाने के लिए कह दिया। अब उस लड़के से उढा नहीं जा रहा। पैर वहीं जुड़ गये। उसके चाचा ने कितना ही डराया धमकाया पर व टस से मस न हो सका व जोर जोर से विलाप करने लगा व कहने लगा कि मेरे से खड़ा नहीं हुआ जा रहा है। आपने कहा तो सच बोलदे। वह

बोला सच बोलूं तो यह चाचा जान निकालेगा। इस पर आपने उसके चाचा को आगाह किया कि यहां से जाने के बाद तुम इस लड़के को कुछ भी नहीं कहोगे। तब उस लड़के ने सच्ची बात कह दी व छः को छोड़ कर शेष मोहरें लाकर दे दी। चाचा सीर पीट कर चला गया। शेष छ मोहरें जब सुनार को बुलाया तो यह वृतांत सुनकर ही उसने वापिस कर दी। इतना होने के बाद श्री नवानाथ जी महाराज ने कहा कि भाई छगन कों जिमा कर भेजना। कैसा दया भाव होता है साधुओं में। कहां तो पुलीस में जाने का अपराध और कहां पर क्षमा का भाव।

मेरी याद में घटना पर घटना आती जा रहीं हैं। अब मैं चाहते हुए भी आगे इन घटनाओं को श्री बाबाजी महाराज की भावनाओं का समादर करते हुए नहीं लिख सकूंगा। हां इतना अवश्य ही कह दूं कि शायद ही आपका कोई सेवक भक्त हो जो आपके द्वारा उसके जीवन में घटित कोई न कोई दिव्य चमत्कारी घटना का उल्लेख न कर दे। सभी को स्थान देना इस पुस्तक के कलेवर में सम्भव भी नहीं है। दरिद्रों एवं रोग ग्रस्त आर्तजनों का आप इतना उपकार कर गये हैं कि उसके लिए आभार ब्यक्त करना मेरे शब्द सामर्थ्य से बाहर है। एक पूरा ग्रन्थ ही बन सकता है अकेले इन अनाम उपकृत जनसाधारण का।

इन भ्रमण यात्रा के काल मे आप पोषाणी समय–समय पर पहुच कर विश्राम किया करते थे श्री चुन्नीलाल जी धन्य हैं जिन्हें आपकी सेवा का अनुपम अवसर प्राप्त हुआ। श्री निवास जी, गिरधारी जी, जोधराज जी व सारा गांव ही आपकी सेवा में सदैव तत्पर रहता था। आप वर्ष में कुछ समय श्री लक्ष्मण जी एवं श्री गोपाल जी के पास भी अवश्य ही ठहरते थे। आपकी अधिकांश तीर्थ यात्राओं में उन प्रेमी भक्तों का समावेश किसी न किसी रुप में अवश्य ही हुआ है। जयपुर में आप श्री मूलसिंह के पास भी महिने भर रुक जाया करते थे। आप लछमनगढ में भी आते व रुकते थे। यहां पर श्री घनश्यामजी, मुरारीजी, सुलतानजी व पूर्ण जी आदि सेवक आपकी सेवा किया करते। मुकन्दगढ में श्री जवाहरजी के यहां भी आपका आना जाना व रहना बनता था। श्री थानजी चौधरी व बद्रीदासजी आपके साथ बहुत सी बार यात्रा में रहते थे।

इस रमण भ्रमण काल में श्री नाथजी महाराज की प्रार्थना नित नियम से अवश्य ही करते, चाहे रेल में यात्रा कर रहे हो, चाहे पद यात्रा कर रहे हों या कहीं पर रुके हुए हों। भोजन नहीं किया तो कोई बात नहीं लेकिन प्रार्थना अवश्य ही करते। प्रार्थना को आप सर्वाधिक महत्व देते थे। साथ ही आपका साधन भजन अनवरत गति से चलता रहता था। श्री अमृतनाथजी महाराज द्वारा प्रतिपादित 'सहज योग' में आप पूर्ण निमग्न रहा करते। लौकिक व्यहार में निपुर्णता, विचारों में निखार एवं आत्मिक आनन्द में निमग्न रहना आपका एक साथ सहज ही सम्पन्न होता रहता था। यह सब प्रयास से नहीं, अभ्यासगत भी नहीं, स्वभावगत हो गये थे आपको।

साथ ही आपने इन रमण भ्रमण यात्राओ का बहुत बड़ा सदुपयोग जो आपने किया वह था आपका देश काल के सभी संत महात्माओं से सत्संग लाभ। शेखावाटी आंचल के सभी साधु संतों से आप समय समय पर सत्संग किया करते थे व उन सभी महात्माओं के स्नेह भाजन बन गये थे। आपके नम्र व्यवहार, सरल ह्रदय, दृढ ईश्वर विश्वास व गम्भीर साधन भजन में सबका मन मोह लिया। तत्पश्चात आप इस आंचल से बाहर विराजमान संत महात्माओं के सत्संग दर्शनार्थ जाया करते थे। किसी भी साधु संत के बारे में चर्चा सुनते तो अवश्य ही उनके पास सत्संगार्थ जाते। सम्पूर्ण भारत में शायद ही कोई महात्मा छोड़ा हो जिनका दर्शन लाभ न किया हो। बहुधा तो तीर्थ यात्रायें ही इसी प्रयोजनार्थ हुआ करती थी। उन संत महात्माओ से आपकी ज्ञान चर्चा सुन कर श्रोतगण निहाल हो जाते थे। ये सब संत महात्मा आपकी आध्यात्मिक साधना के क्षेत्र में महान पहूंच का लौहा मान लेते थे। संत सरल ह्रदय होते हैं। सद् व्यहार एवं परस्पर मान सम्मान देने का उज्जवल आदर्श इन संत मिलनों में अनायास ही दर्शकों का मन मोह लेता है। साथ ही उसे सुनने को मिलती अनेक ज्ञान चर्चायें। इसीलिए तुलसीदासजी ने कहा है :–

'तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिये तुला इक अंग।
जो सुख लव सत्संग।।

सम्प्रदायों के संकीर्ण दायरे कभी भी आपके लिए बाधा नहीं बने। "साधु–साधु सब एक हैं जैसे गंगा का नीर" का आदर्श वाक्य ही आपने चरितार्थ किया। विस्तृत वर्णन इन सत्संगो का हम आपके रमण भ्रमण यात्राओं के साथ कुछ–कुछ प्रसंगवश कर भी आये हैं व आगे भी करेंगे। अब एक बार पुनः आपके जीवन वृतांत पर आते हैं।

श्री गोविन्द नाथजी महाराज का महाप्रयाणः– सम्वत् 20 में श्री गोविन्दनाथजी महाराज ने आपसे कह दिया कि भाद्र पद शुक्ला ग्यारस को शरीर छोडूंगा। तुम उस समय तक आ जाना। आप उनके बताये गये समय पर डूडवा ग्राम में उपस्थित हो गये। उन्होंने भाद्र पद शुक्ला ग्यारस को शरीर त्याग दिया। आपने अन्य साधुओ को बुलाकर उनकी समाधि दी, ब्रह्मपुरी आदि की व्यवस्था की। उनके समाधि स्थान पर समाधि मन्दिर का निमार्ण करवाया जो आज भी आप दोनों महापुरुषों के घनिष्ट, आत्मिक प्रेम का आदर्श प्रतीक स्वरुप समाज को प्रेरणा देता रहता है।

सम्वत् 2020 में गोरखपुर से महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज फतेहपुर आये। इस शुभ अवसर पर आपने उनके दर्शन किये व सत्संग किया। उनके बहुत से ज्ञान उपदेश सुने। इसके बाद हरिद्वार में भी कई बार आपने उनके दर्शन किये। महन्तजी महाराज अपने समय के जाने माने सिद्ध शिरोमणि येगीराज थे। उनकी योग साधना एवं अध्यात्मिक जगत में पहूंच बहुत आगे थी।

उन्होंने देश, हिन्दु धर्म, साधु समाज का महान उपकार किया है। उन्होंने अपने त्याग, निस्वार्थ सेवा भाव, स्पष्टवादी विद्वान वक्ता के रुप में सम्पूर्ण देश में ख्याति अर्जित की है।

कुरुक्षेत्र यात्राः— आप अश्विन कृष्णा त्रयोदशी सम्वत् 2025 को लक्ष्मणगढ से प्रस्थान कर अम्बाला मेजर लक्ष्मणजी के पास पहुंचे। वहां कुछ दिन रुक कर अश्विन शुक्ला पूर्णिमा को कुरुक्षेत्र पहुंचकर सूर्य कुण्ड में स्नान किया। मेजर लक्ष्मण आपके साथ था। हरिद्वार से वापिस शखावाटी आ गये।

कश्मीर यात्राः— आप कार्तिक कृष्णा तृतीया सम्वत् 2026 तदनुसार दिनांक 28 अकटूम्बर 1969 को सीकर से प्रस्थान कर दिल्ली पहुंचे। दिल्ली में रात्री विश्राम शिशुपाल जी के पास किया व दूसरे दिन दिल्ली से चल कर अम्बाला में सवाई सिंहजी के पास पहुंचे। अगले दिन सुबह वहां से प्रस्थान कर लुधियाना होते हुए जलन्धर पहुंचे। अगले दिन सुबह वहां से प्रस्थान कर पठानकोट होते हुए जम्मू पहुचे। जम्मू में विश्राम किया। दूसरे दिन उधमपुर से श्री नगर पहुंचे। श्री नगर में भैरुंनाथ मन्दिर के पास श्री नाथजी महाराज के आश्रम में श्री अर्जुन नाथजी के पास रुके। अगले दिन श्री नगर में आपने शलीमार बाग, निशात बाग, चार मिनार, शंकराचार्य का मन्दिर, गुलमर्ग आदि स्थान देखे। डलझील में नाव द्वारा सैर की। रात्री को वहीं रुक कर दूसरे दिन चश्मेशाही एवं श्री नगर के अन्य दर्शनीय स्थान देखे। श्री नगर प्राकृतिक सौन्दर्य एवं दृश्यों के मध्य बसा हुआ एक सुन्दर नगर है। यहां पर बादाम, सेव, अखरोट, केशर आदि की प्रचुर मात्रा में खेती होती है। श्री नगर की अधिकांश जनता गरीब है, केवल बाहर से आये हुए लोग ज्यादातर अमीर है। श्री नगर से आगे पहल गांव तक बस जाती है। अमरनाथ की पद यात्रा यहीं से शुरु होती है। रास्ता बर्फ के कारण बंद था, इसलिए आप आगे न जासके। यह यात्रा केवल गर्मियों में ही होती है।

आप तीन दिन श्री नगर रुक कर जम्मू पहुंचे। जम्मू एक सुनदर नगर है, जहां पर मन्दिर बहुत हैं। यहा पर आपने शिव मन्दिर, रघूनाथ मन्दिर, पीर खोह (श्री नाथजी का स्थान) जामवन्त गुफा आदि के दर्शन किये। रात को जम्मू रुक कर दूसरे दिन पठानकोट, कांगड़ा होते हुए ज्वलामुखी पहुंचे। वहां रात्री विश्राम किया एवं श्री ज्वालाजी के दर्शन किये। यहां स्वतः ही लौ प्रज्वलित होती है। पास ही श्री गुरु गोरक्षनाथ जी का मन्दिर है। यहां पर श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के समय से ही एक हांडी में खिचड़ी के लिए पानी उबल रहा बताते हैं। कहते हैं गुरु गोरक्षनाथजी खिचड़ी के लिए चावल दाल लाने गये थे तब से यह पानी उबल रहा है। ज्वालाजी से आप पठानकोट होते हुए अमृतसर पहुंचे। अमृतसर में सिक्खों का बड़ा गुरुद्वारा जिसे स्वर्ण मन्दिर व हर मन्दिर सहब कहते हैं, देखा। यह बहुत ही सुन्दर एवं दर्शनीय है। यहां नित्य प्रति प्रार्थना होती है। धुम्रपान, सुरापान व पान खाने वालों को मन्दिर में प्रवेश नहीं करने दिया जाता है। वहां भूखे प्यासों

के लिए अन्न जल की व्यवस्था है। यहां से आप दिल्ली होते हुए दीपावली के शुभ दिन लक्ष्मणगढ पहुंच गये। सुलतानजी आपके साथ थे।

इस समय तक श्री नवानाथ जी महाराज काफी वृद्ध हो गये थे। वे ज्यादातर नवलगढ ही रहा करते थे। आप भी समय समय पर उनकी सेवाओं में उपस्थित होते रहते थे। सम्वत् 2026 में आपके अनुरोध पर वे बऊ पधारे। बऊ में उनके निवास के लिए आपने एक हवादरा कमरा बनवाया जिसे वे प्रेम से बंगला कह कर पुकारते थे। यहां आने के बाद वर्ष पर्यन्त उनका शरीर रहा। किसी ने उनसे पुछा कि आपके शिष्य तो नहीं है उस अतुल धनराशि को कौन सम्भालेगा। वे बोले कि श्रद्धानाथ है न। उस व्यक्ति ने पुनः कहा कि ये तो पैसे को छूते ही नहीं हैं। तब उन्होंने कहा कि तेरे जैसे छूने वाले इसके पास बहुत हैं। यह सब व्यवस्था कर देगा। सम्वत् 2027 में भादवा कृष्णा अष्ठमी को उन्होंने शरीर छोड़ दिया। शरीर छोड़ने से पूर्व आपको पास बुला कर कहा कि श्री ज्योतिनाथ जी महाराज ने हमें दी थी वो अब हम तुम्हें दे रहे हैं वे अपने पीछे अतुल धनराशि छोड़ गये थे। आपने इस धनराशि को छुआ तक नहीं परन्तु अपनी देख रेख में इसका साधु सेवा, मेला भण्डारा, एवं समाधि मन्दिर निमार्ण में सदुपयोग करवा दिया। आपने श्री नवानाथजी महाराज की ब्रह्मपुरी व सम्वत् 2028 में मेले भण्डारे का आयोजन किया। इस मेले में अखिल भारतीय योगी सम्प्रदाय बारह पंथ के सभी योगी व बतीस धूणियों के पीर महन्त, साधु सन्त, सेवक भक्त सम्मिलित हुए। मेला नाथ सम्प्रदाय के विधानानुसार सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री रतिनाथजी को चादर औढाई गई। श्रद्धेय श्री शुभनाथजी महाराज ने श्री नवानाथजी महाराज पर समाधि शिखर बन्द–मन्दिर बनवाने की आज्ञा दी। आगन्तुक साधु समाज ने भी इस कार्य को शीघ्र सम्पन्न करवानें की सलाह दी। बैसाख पूर्णिमा सम्वत् 2029 को समाधि शिख–बन्द का कार्य पूर्ण होने पर आपने श्री नवानाथ जी महाराज के चरण कमलों में सादर भेंट किया जो आज भी आपके निर्लिप्त त्याग एवं श्री नवानाथ जी महाराज के चरण कमलों में शुद्ध आत्मिक प्रेम का श्रद्धा सुमन है।

गुरु आज्ञा पालनः– श्री बाबाजी महाराज के अविस्मरणीय त्याग एवं तपोमय जीवन में श्री नाथ जी महाराज का आश्रम, लक्ष्मणगढ का निर्माण एक युगात्कारी घटना है। यह वह बिन्दु है जहां से आपका आदर्श जीवन दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। पूर्व का वह त्यागी तपस्वी रमते राम का फक्कड़ रुप जितना प्रेरणास्पद है उससे भी अधिक भव्य बन पड़ा है उत्तर का निर्लिप्त त्याग तपोमय समाज–उद्धरक रुप। दोनों की अपनी अपनी विशेषतायें हैं व दोनो ही अपने आप में पूर्ण आदर्श हैं। ज्ञान दृष्टि से दोनों ही आवश्यक हैं। इस प्रकरण से इस महान घटना का कारण विवरण दिया जा रहा है।

श्री शुभनाथजी महाराज कई वर्षों से आपको कह रहे थे कि तुम एक आश्रम बना लो। आसोज पूर्णिमा संवत् 2028 को श्री शुभनाथजी महाराज का वचन हुआ कि "श्रद्धानाथ तूं मेरी बात मान ले। जो मैं कहता हूँ सत्य होगा। तूं क्यों नहीं मानता है। श्री नाथजी महाराज के नाम से एक आश्रम बना लो। साधु, संत, सत्ती, सेवकों के आने जाने एवं ठहरने का स्थान हो जावे व पन्द्रह बीस को भोजन पानी मिल सके। तुम पीछे एक झौंपड़ा बना लेना। मैंने तुम्हें कई बार कहा है कि तुम एक आश्रम बना ले। बहुत घूमे फिरे हो। कितने दिन घूमते फिरोगे। अब रमने घूमने का समय नहीं रहा है। " आपने हाथ जोड़ कर विनम्र शब्दों में निवेदन किया "गुरुदेव जब अपकी कृपा होगी तो अवश्य ही बनेगा।" तब महाराज ने कहा कि क्या कृपा चाहिए? तुम क्या चाहते हो, क्या मांगते हो। मेरे वचनों पर विश्वास रखो। मैने तुम्हें सब कुछ दे दिया है। बार बार क्यों पूछते हो। आपने पुन' निवेदन किया कि महाराज किस जगह पर बनाऊँ। फतेहपुर में गुरु महाराज ने पूर्व की ओर मुख किये अपना हाथ उठाकर कहा "वह लक्ष्मणगढ सूना पड़ा है, उसमें बनाले। वहां पर अभी तक कोई श्री नाथजी महाराज का आश्रम भी नहीं है। लक्ष्मणगढ में श्री नाथजी महाराज बड़ामहाराज कई वर्षों तक रमे हैं। यह लक्ष्मणगढ की भूमि पवित्र है तथा वहां की जनभावना भी अच्छी है। तुम मेरी बात नहीं मानेगा तो श्रद्धानाथ मैं तेरे पर राजी नहीं होवुंगा।"

आपने कर बद्ध प्रार्थना की " हेगुरुदेव! क्षमा करो! आपका वचन मैं जरुर मानूंगा, परन्तु मेरे नियमों को जिनका मैं आपकी कृपा से कई वर्षों से पालन करता आ रहा हूँ को न तुड़वाया जावे।" श्री शुभनाथजी महाराज ने हंस कर कहा " तम्हारे नियम क्या है? तुम्हारे नियमों को मैं जानता हूँ। तम्हारा प्रथम नियम है कि रुपये पैसे के हाथ नहीं लगाते, दूसरा नियम है किसी से कुछ मांगते नहीं। बस तुम्हारे ये दो नियम हैं। ये दोनो भलि भांति निभ जावेंगे। इन्हें तोड़ने की आवश्यकता नही है। "फिर कुछ रुक कर उन्होंने पुनः कहा कि जाओ तुम जैसा चाहते हो वैसा ही होगा। मांगो मत, छुओ मत, और होता है उसे बरजो मत। सब कुछ हो जावेगा। तब तो राजी हो।" आपने हाथ जोड़ कर कहा, "मैं राजी हूँ और जरुर आश्रम बना लूंगा।"

फिर महाराज ने कहा तुम मेरा विश्वास रखो। करने कराने वाला तो और ही है। तुमको तो केवल निमित मात्र बनाता हूँ। मैने जो कुछ भी कहा है होकर रहेगा। आपने सब कुछ स्वीकार कर लिया और निवेदन किया कि जैसा आपका आदेश है वैसा ही करुंगा। श्री शुभनाथजी महाराज ने इस पर कहा कि तुम न करो तो क्या भरोसा। आपने हाथ जोड़कर कहा कि मेरी इस बात की सारी जिम्मेदारी श्री हनुमाननाथजी महाराज ले लेंगे। श्री गुरु महाराज ने कहा कि बुलाओ हनुमान नाथ को। आने पर उन्होंने कहा कि क्यो हनुमान नाथ क्या तूं श्रद्धानाथ की इस बात की साक्षी व जिम्मेवारी लेता है कि वह आश्रम अवश्य बना लेगा। श्री हनुमाननाथ जी महाराज ने हाथ जोड़ कर

कहा, " हां जी! श्रद्धानाथ आश्रम जरुर बना लेगा। इस बात की मेरी पूरी जिम्मेदारी है।" श्री गुरुमहाराज ने स्नेह भरे शब्दों में आपको अति समीप बैठा कर कहा "बेटा श्रद्धानाथ आज मेरी आत्मा बहुत खुश है। मैं तुम्हे आत्मा से अर्शिवाद देता हूँ। मेरी कई दिनों से सोची विचारी बात को तुमने स्वीका कर लिया। सब बातो की तेरी छूट है। मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि मेरा एक शिष्य त्यागी होते हुए भी आश्रम का निर्माण करेगा। तुम्हारे किसी भी बात की किंचितमात्र भी कमी नहीं रहेगी। श्री नाथजी महाराज की कृपा से स्वतः ही सब काम पूर्ण होंगे। बेटा अपने गुरु का वचन सत्य मान कर अपने सत् पर चलना। श्री नाथजी महाराज का विश्वास रखना। बेटा सच्चाई रखना, मौज करना,। सब तरह से सर्वानंद ही होगा।"

श्री नाथजी महाराज का आश्रम, लक्ष्मणगढ का निर्माण कार्य चैत्र शुक्ला रामनवमी सम्वत् 2029 को प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में यह आश्रम समाज के सामने एक आदर्श स्वरुप प्रस्तुत है। श्री नाथजी महाराज की कृपा से गुरु महाराज के वचन ज्यों के त्यों सत्य सिद्ध हुए एवं आगे भी होते रहेंगे। यह आश्रम श्री शुभनाथजी महाराज के इस संकल्प एवं आपके वचन पालन का एक सत्य सारा रुप है। इस आश्रम के इतिहास में यह सत्य सदैव कारण स्वरुप समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत करता रहेगा। यह समाज के सामने एक उदाहरण है कि गुरु कृपा एवं गुरु आज्ञा पालन दोनों शब्द युग्म अधिकारी शिष्य के लिए सवच्छ प्रकाश के चन्द्र–सूर्य की भांति देने वाले हैं। गुरु महिमा के इस तथ्य की सार्थकता और अधिक उजागर हुई है कि 'गुरु पारस, गुरु चिन्तामणि, गुरु कामधेनु, गुरु कल्प वृक्ष कितना महान सत्य है। सच है जहां श्रद्धा है, विश्वास है वहां सर्वफलदायिनी सिद्धि विद्यमान है।

आपके श्री मुख से कई बार आश्रम के विषय में जो ह्रदयोदगार सुनने को मिला करते थे, वे यहां पर सार रुप में प्रस्तुत हैं। आप कहा करते कि श्री नाथजी महाराज का आश्रम बनने से पहले जब यहां टीला था तब मैं यहां पर आकर बैठा करता था। यहां पर मुझे शांति मिलती, आनन्द की अनुभूति होती व चित प्रसन्न होता था। आत्मा से आवाज आती कि श्रद्धानाथ इस टिबड़ी पर बैठ कर घ्यान करना चाहिए, क्योंकि इस भूमि में पवित्रता एवं प्रसन्नता झलक रही है। यह भूमि जागती हैं। इस सजीव भूमि में परम गुरु विलक्ष्ण अवधूत श्री बड़ा महाराज श्री अमृतनाथजी महाराज के चरण टिके हुए हैं, सो यह भूमि उत्तम है। यह प्रेरणा सुन सुनकर मेरा मन मस्त होता व ह्रदय गद् गद् होन लग जाता था तथा उपर से आवाज सुनाई पड़ती थी कि "श्रद्धानाथ इस टिबड़ी पर बैठ जाओ।" फिर मेरी आंखे खुल जाती व आंखो से प्रेम की वर्षा होने लग जाती थी। मैने बड़े बूढे साधुओं से सुना था कि बड़ा महाराज श्री अमृतनाथजी महाराज लक्ष्मणगढ की भूमि में बहुत रमे घूमे हैं। इस कारण मेरी आत्मा में पूर्ण विश्वास हो गया। जो कि

आज श्री नाथजी महाराज का आश्रम बना हुआ है। आगे चल कर श्री गुरु महाराज श्री शुभनाथजी महाराज ने अपने श्री मुख से मेरे को आश्रम निर्माण की आज्ञा दी। आदेश दिया कि "श्रद्धानाथ लक्ष्मणगढ में आश्रम बनाले।" श्री गुरुमहाराज की कृपा से यह आश्रम बन गया। यह आश्रम मेरी अक्ल बुद्धी से नहीं वरन श्री नाथजी महाराज की प्रेरणा से बनाया है। आगे भी श्री नाथजी महाराज आनन्द मंगल रखेंगे। आश्रम परिचय में आश्रम निर्माण का पूरा विवरण आगे दिया जा रहा है। यहां पर आपकी जीवन चर्या को ही पुनः प्रारम्भ कर रहा हूँ। आश्रम की प्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न होने के बाद आपने आश्रम रहना प्रारम्भ कर दिया व समय–समय पर बाहर रमने–घूमने के लिए जाते रहते थे। शेष जीवन में आपकी जीवन चर्या का केन्द्र बन्दु यह आश्रम ही रहा है। आश्रम से रमने घूमने चले जाना व पुनः यहीं पर आकर विश्राम करना। इन्हीं रमण यात्राओं एवं आश्रम निवास का वर्णन आगे के पृष्ठों पर अंकित है।

नेपाल यात्राः– गोरखपुर में श्री गोरखनाथजी महाराज की प्रतिमा स्थापना का उत्सव दिनांक 15, 16 व 17 फरवरी 1973 को था। इस शुभ अवसर पर सम्मिलित होन के लिए आप सीकर से रवाना होकर दिल्ली लखनउ होते हुए 15 फरवरी को गोरखपुर पहुंचे। आप तीन दिन तक इस उत्सव के उपलक्ष में गोरखपुर रुके। यहां से सीता मंडी, जनकपुर धाम होते हुए नेपाल की राजधानी काठमांडू पहुंचे। काठमांडू में दो तीन दिन रुक कर पशुपति नाथ मन्दिर, गोरक्षनाथ मन्दिर, मृगस्थली व अन्य तीर्थ स्थान देखे यहां से वापिस जनकपुर धाम, सीतामंडी, गोरखपुर, लखनऊ होते हुए 23 फरवरी को अम्बाला पहुंचे। मैजर लक्ष्मणजी आपके साथ थे। 25 फरवरी को अम्बाला से प्रस्थान करके दिल्ली होते हुए श्री नाथजी महाराज का आश्रम लक्ष्मणगढ पहुंचे।

रामनाथ यात्राः– दक्षिण भारत यात्रा के लिए आपने सीकर से आषाढ कृष्णा तृतीया सम्वत् 2030 दिनांक 18 जून 1973 को दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। दिल्ली में रात्री विश्राम शिशुपाल के यहां करके दूसरे दिन रेल से सिकन्दराबाद को प्रस्थान किया। सकिन्दराबाद में मैजर लक्ष्मणजी के पास कुछ दिन रुक कर सिकन्दराबाद हैदराबाद के दर्शनीय स्थान देखे। सिकन्दारबाद से 3 जूलाई को प्रस्थान कर तिरुपति बाला जी पहुंचे। तिरुपति बालाजी एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। जिसकी चढाई 12 मील है। मन्दिर में दर्शन करके वहीं रात्री विश्राम किया। दूसरे दिन वहां से प्रस्थान कर मद्रास पहुंचे मद्रास में रुक कर वहां के दर्शनीय स्थान, समुद्री जहाज आदि देखे। मद्रास से 9 जुलाई को प्रस्थान कर पांडीचेरी में अरविन्द आश्रम देखते हुए त्रिचनापल्ली पहुचे। वहां श्री गणेशजी व शिवजी के मन्दिर देखे जो काफी ऊंचाई पर स्थित एवं विशाल हैं। वहासे मदुराई पहुंच कर मंडपम स्टेशन से रामेश्वरम् के लिए प्रस्थान किया। रामेश्वरम् मे राम झरोखा एवं झांकी के दर्शन किये। दूसरे दिन मन्दिर में दर्शन, समुद्र स्नान तथा मन्दिर स्थित 22 कुओं में से पानी

निकाल कर स्नान किया व वापिस मंडपम पहुंचे। मंडपम से कन्याकुमारी को प्रस्थान किया। रास्ते में तिरुन्नोवली में सुब्रमण्यम् मन्दिर के दर्शन करते हुए शाम को कन्याकुमारी पहुंचे। दूसरे दिन सुबह सूर्योदय के दर्शन कर मन्दिर में कन्याकुमारी के दर्शन किये। वहां से विवेकानन्द स्मारक जो समुद्र में एक चट्टान पर स्थित है। नाव द्वारा देखेन गये। यहां से प्रस्थान कर मदुराई में रात्री विश्राम किया व सुबह मिनाक्षी माता के मन्दिर में दर्शन किये। मन्दिर में एक तरफ गुरु गोरक्षनाथजी महाराज की मुर्ति है। यहां से त्रिचनापली पहुंचकर रात्री विश्राम किया व प्रातः कावेरी गंगा में स्नान करके श्री रंगजी के दर्शन किये। यहां से शिवकांशी, विष्णुकांची के दर्शन करते हुए वापिस मद्रास पहुंचे। मद्रास में चार पांच दिन विश्राम करके बम्बई पहुंचें। बम्बई से आप अहमदाबाद आ गये। अहमदाबाद से ध्रंगधरा मेजर द्वारका प्रसाद जी के पास पहुंचे व वहां दो–तीन दिन तक विश्राम किया। वहां से वापिस अहमदाबाद होते हुए जयपुर आगये। जयपुर में दो–तीन दिन मूलसिंह जी के पास विश्राम किया। जयपुर से 29 जुलाई को प्रस्थान कर सानन्द लक्ष्मणगढ आश्रम पर पहुंच गये। इस सम्पूर्ण यात्रा में गोपाल जी आपके साथ थे।

कन्याकुमारी यात्राः–भाद्रपद शुक्ला सम्वत् 2030 दिनांक 1 सितम्बर 1973 को लक्ष्मणबढ से प्रस्थान कर जयपुर होते हुए अलवर पहुंचे। अलवर में भृतहरी का मेला देखा। आपके साथ गोपाल जी, मालीराम जी व जगन थे। अगले दिन अलवर से दिल्ली पहुंचकर दिल्ली में दो रोज हुक्माराम व रामचन्द्र के पास रुके। दिल्ली से 8 सितम्बर को प्रस्थान कर नागपुर में हरलालजी व पृथ्वी जी के पास रुके व वहां दर्शनीय स्थान देखे। दिल्ली से आगे मालीराम साथ था। नागपुर से सिकन्दराबाद पहुंच कर मैजर लक्ष्मणजी के यहां दो–तीन दिन विश्राम किया। यहां से 14 सितम्बर को प्रस्थान कर बैंगलोर कैप्टेन नारायण जी के पास पहुंचे। वहां के दर्शनीय स्थान देखे। यहां से मैसूर पहुंचकर 8 मील पहाड़ी की चढाई करके चामुण्डी देवी के दर्शन किये व नन्दी बैल देखा जो आकार में अति विशाल है। शाम को यहां का प्रसिद्ध वृन्दावन बाग देखा। यहां पर रात्री विश्राम किया। दूसरे दिन यहां से कोयम्टूर हरलालजी के पास होते हुए गुरुवायूर (केरल) पहुंचे। यहां तक हरलालजी भी आपके साथ आये। यहां पर विष्णु भगवान का बड़ा मन्दिर देख कर ट्रिच्यूर होते हुए कोचीन गोविन्दजी के पास पहुंचे। वहां रात्री विश्राम किया व सुबह कोचीन का बन्दरगाह व समुद्री जहाज देखे। श्री आदि शंकराचार्य का जन्म स्थान ग्राम कालड़ी जो यहां से नजदीक ही है, भी आपने देखा। कोचीन से त्रिवेन्द्रम पहुंच कर रात्री विश्राम किया व सुबह पदमनाभम मन्दिर में दर्शन कर नागरकूला में दर्शन करते हुए कन्याकुमारी पहुंचे। यहां पर विवेकानन्द स्मारक देवी कन्याकुमारी के दर्शन कर सुचिद्रा नामक ग्राम जो दत्तात्रेय का जन्म स्थान है, को गये। यहां ब्रह्मा, विषणु, महेश के एक ही मूर्ति में दर्शन होते हैं। यहां से वापिस कन्याकुमारी आकर रात्री विश्राम किया व सुबह

सूर्योदय दर्शन एवं एक माई महात्मा का दर्शन कर उनसे बातचीत की। यहां से वापिस कोयम्बटूर हरलालजी के पास रुकते हुए बैंगलोर नारायण जी के पास पहुंचे। बैंगलोर कुछ विश्राम करके सिकन्दराबाद लक्ष्मणजी के पास पहुंचे। यहां पर कुछ दिनों तक विश्राम किया व यहां के दर्शनीय स्थान देखे। सिकन्दराबाद से 30 सितम्बर को प्रस्थान कर आगरा पहुंचे आपके साथ मालीराम जी व रामचन्द्रजी थे। आगरा से जयपुर मूलसिंहजी के पास पहुंचे व यहां दो तीन दिन विश्राम किया। गोपाल जी आदि अन्य सेवक भी यहां आ गये। जयपुर से छः अकटूम्बर को प्रस्थान कर लक्ष्मणगढ आश्रम पर आनन्द पूर्वक पहुंच गये।

कुम्भ यात्रा द्वितीयः– सीकर से चैत्र शुक्ला द्वदशी सम्वत् 2031 दिनांक 4 अप्रल 1974 को प्रस्थान की दिल्ली होते हुए हरिद्वार पहुंचे। फतेहपुर से महन्त श्री हनुमानाथजी महाराज, श्री माननाथजी, श्री नरहरिनाथजी आदि साधु आपके साथ थे। हरिद्वार में आप सभी श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर में ठहरे। लक्ष्मणगढ से सुलतान, मुरारी, गोपाल, द्वारकाप्रसाद, रामकुमार, शिशुपाल, पूर्णमल, ओमप्रकाश, हरिबक्स, झाबर, रामावतार आदि सेवक आपके साथ थे। इस अवसर पर सभी प्रांतों के योगेश्वर, त्यागी तपस्वी, धूणाधारी, रमते घूमते पीर महन्त पधारे हुए थे। महन्त श्री अवैद्यनाथजी महाराज, गोरखपुर, उपसभापति श्री श्रेयोनाथ जी स्थल बोहर, महन्त श्री हनुमाननाथ जी महन्त फतेहपुर, श्री शंकरनाथजी थान मठोई, श्री धड़ीनाथजी बिसाऊ, श्री योगी रामनाथजी, पीर श्री प्रेमनाथजी, श्री बिरखनाथजी–दिल्ली, एवं अन्य पीर महन्त उपस्थित थे। फतेहपुर से श्री शेरनाथजी, श्री मुखत्यारनाथजी, श्री जरनानाथजी, श्री रतिनाथजी, श्री रविनाथजी, श्री माननाथजी, श्री नरहरिनाथजी, आदि साधु इस मेले में उपस्थित थे। श्री हनुमाननाथजी महाराज को दलीचा में नाथ सम्प्रदाय के सभी साधुओं द्वारा तीन दिन के लिए पीर महन्त पद बैठाया। यह सर्वोपरी पीर पदवी परम्परागत कुम्भ मेले में तीन दिन के लिए दी जाती है। तीन दिन उसे सारा भेष राजा पद पर मानता है।

कुम्भ स्नान गंगा पर्व का 14 अप्रेल को मध्यरात्री से शुरु हो गया। सभी गंगा स्नानार्थ श्री गंगा मैया की जय जयकार करते हुए जा रहे थे। पर्ववाली रात्री आपने एक बजे स्नान किया। गंगा स्नान के समय श्री रविनाथजी, सुल्तान, गोपाल, मुरारी, घनाश्याम, रामकुमार, शिशुपाल, द्वारका प्रसाद, पूर्णमल, ओमप्रकाश, हरिबक्स, झाबर, रामावतार व अनय सेवक भी साथ थे। इस पर्व पर स्नानार्थ आये योगी, सन्यासी, नागा, उदासी, बैरागी, व अन्य साधुओ की 'शाही' के दर्शन लाखों की तादाद में जनसमुदाय की कनखल से हरिद्वार हर की पेड़ी तक भीड़ लगी हुई थी। मेले का प्रबन्ध अति उत्तम था। मेले में उपस्थित लोगो की संख्या सत्तर–बहत्तर लाख बतायी जा रही थी। 14

अप्रेल का स्नान करके शाही देखी व एक बार पुनः गंगास्नान करके रात्री को दिल्ली पहुंच गये। दिल्ली से बैसाख कृष्णा द्वादसी सम्वत् 2031 को सानन्द लक्ष्मणगढ आश्रम पर पहुंच गये।

इन तीर्थ यात्राओं के अतिरिक्त आप समय–समय पर राजस्थान भ्रमण करते रहते थे। अधिकतर सीकर, जयपुर, मुकन्दगढ, नवलगढ व इनके आसपास के क्षेत्र में घुमते रहते थे। आश्रम पर पांच सात दिन विश्राम करके पुनः रमण भ्रमण पर निकल जाते। आश्रम का निर्माण कार्य भी आपके दिशा निर्देश पर चलता रहता था। आश्रम पर जब भी पधारते तो दर्शनार्थियों का तांता लग जाता था। बहुत से साधु संत भी आपके दर्शनार्थ सत्संगार्थ आश्रम पर आते रहते। रमते घूमते साधुओं के लिए तो यह आश्रम एक बहुत ही अच्छा विश्राम स्थल बन गया जहां पर उनके रोटी–डोवटी का आप प्रसन्नातपूर्वक प्रबन्ध किया करते। श्री शोभानाथजी महाराज फतेहपुर से लक्ष्मणगढ आश्रम पधारे व यहां 10–11 दिन विश्राम किया। वे आश्रम व्यवस्था देख कर बहुत प्रसन्न हुए। उनकी आप पर सदा ही कृपा दृष्टि रही है। श्री शंकरनाथजी महाराज थानमठोई से आश्रम पर पधारे व यहां दो तीन दिन निवास किया। श्री धड़ीनाथजी महाराज बिसाऊ से आश्रम पर पधारे व यहां रात्री विश्राम किया। वे आश्रम देख कर बहुत खुश हुए। उनसे आपका सत्संग वार्तालाप हुआ।

गंगा यात्राः–सोमवती अमास्या का पर्व जेष्ठ सम्वत् 2032 को था। इस पर्व पर आप स्नानार्थ जेष्ठ कृष्णा नवमी को प्रस्थान कर हरिद्वार पहुंचे आपके साथ लक्ष्मणजी, जगदीश व हरबिक्स थे। हरिद्वार मे पांच छः दिन गुरु गोरक्षनाथजी मन्दिर में रुके। सुबह शाम गंगा स्नान करते। श्री रविनाथजी पहले से ही हरिद्वार गोरखनाथ मन्दिर में रुके हुए थे।

संयोगवश इस पवित्र तीर्थ स्थान में आपके पूज्य मांजी के स्वर्गवास का समाचार मिला। गंगाजी में स्नान करते समय श्री मां जी को मौन श्रद्धांजली अर्पित की। इस समय श्री मां जी की आयु 97 वर्ष थी। शरीर में बिना किसी ब्याधि के उन्होंने श्री नाथजी महाराज का ध्यान करते हुए जेष्ठ कृष्णा द्वादशी सम्वत् 2032 को स्वर्गारोहण किया। 12 जून को हरिद्वार से वापिस लक्ष्मणगढ पहुंचे। हरिद्वार जाने से पूर्व आप उनसे मिलकर व दर्शन करके गये थे। श्री मां जी ने आर्शिवाद दिया था, "श्रद्धानाथ तुम्हारा योग श्री नाथजी महाराज सफल करेंगे।" उनकी ईच्छा थी कि आप उनके शरीरान्त के पश्चात 12 दिनों के अन्दर आवें तथा सब काम शान्ति से सम्पन्न करवादें।

श्री मां जी की सरल आत्मा साधुवृति की थी। वे सबसे स्नेह करते व आशिर्वचन कहते। एक बार मैं उनके दर्शनार्थ गया था। उन्होंने मुझे अपने पास बैठा कर बहुत स्नेह किया। बहुत सी बातें श्री बाबाजी महाराज के कुशलक्षेम के बारे में पूछी तथा उनके बचपन की अनेक बातें जो उनकी याद में तरोताजा थी कही। आते समय आपने अपने हाथों से कलेवा करवाया तथा अपना

स्नेह आर्शिवाद देकर कृतार्थ किया। ऐसी पवित्र महान सरल व सरस हृदयी श्री मां जी को कोटि–कोटि नमस्कार है।

हरद्विार यात्रायेंः– आप तिर्थों में हरिद्वार को अति उत्तम समझते थे व वहां समय–समय पर स्नानार्थ जात रहते थे। इन सभी हरिद्वार यात्राओं का विवरण न देकर केवल संक्षेप में यहां प्रस्तुत कर रहा हूँ। इन सभी यात्राओं का समय व साथ के अतिरिक्त घटनाक्रम लगभग एक सा ही है।

आपने बैशाख कृष्णा नवमी सम्वत् 2032 (22 अप्रल 1976) को लक्ष्मणगढ से प्रस्थान कर दिल्ली में शिशुपाल के पास रुकते हुए देहरदून लक्ष्मणजी के पास पहुंचे। यहां के दर्शनीय स्थान देखे। अमावस्या के दिन सूर्य ग्रहण था इस दिन आपने ऋषिकेश पहुंच कर गंगा में स्नान किया व रात्री विश्राम गोरक्षनाथ मन्दिर में किया। सुबह गंगा स्नान करके वापिस देहरादून आगये। दूसरी बार बैशाख पूर्णिमा को चन्द्रगहण के पर्व पर हरिद्वार पहुंच कर गंगास्नान किया। आपके साथ मैजर लक्ष्मण, मैजर द्वारका प्रसाद, रामकुमार, हरिबक्स आदि सेवक थे। यहां कुछ दिन रुक कर वापिस देहरादून आ गये। लाला व रामचन्द्र भी आपके दर्शनार्थ यहां आये। देहरादून से 23 मई को प्रस्थान कर दिल्ली रुकते हुए सानन्द लक्ष्मण आश्रम पर पहुंच गये। आपके साथ लाला व रामचन्द्र थे।

आपने इसी वर्ष पुनः भाद्र पद शुक्ला द्वदशी सम्वत् 2032 (5 सितम्बर 1976) को लक्ष्मणगढ से देहरादून को प्रस्थान किया। साथ में शिशुपाल पटवारी था। देहरादून में मेजर लक्ष्मण एवं मेजर द्वारका प्रसाद के पास रुके। यहां से हरिद्वार पहुंच कर गंगा स्नान किया व कुछ दिन रुक कर वापिस देहरादून आ गये। गोपाल, जगदीश, रामेश्वर आदि सेवक यहां आपके दर्यानार्थ आये। इन सब सेवकों के साथ आपने 25 सितम्बर को हरिद्वार पहुंच कर स्नान किया व गोरक्षनाथ मन्दिर में विश्राम किया। यहां से ऋषिकेश पहुंच कर श्री धड़ीनाथजी महाराज के पास श्री अमृतधाम में विश्राम किया। यहां के दर्शनीय स्थान देखे व गंगा स्नान कर वापिस देहरादून आ गये। देहरादून से 30 दितम्बर को प्रस्थान कर दिल्ली शिशुपाल के पास रुकते हुए सानन्द लक्ष्मणगढ पहुंच गये।

अगले वर्ष जेष्ठ कृष्णा एकादशी सम्वत् 2033 (12मई 1976) को लक्ष्मणगढ से प्रस्थान कर दिल्ली शिशुपाल के पास रुकते हुए मेजर लक्ष्मण के पास देहरदून पहुंचे रामेश्वर साथ था। देहरूदन में रामचन्द्र, सुभाष, घनश्याम, मुरारी, हरि, प्रताप, लाला, भगवानसिंह आदि सेवक आपे दर्शनार्थ आये। जेष्ठ शुक्ला दशमी गंगा दशहरे पर हरिद्वार पहुंच कर गंगा स्नान किया व गोरक्षनाथ मन्दिर में दर्शन कर ऋषिकेश में अमृतधाम में श्री धड़ीनाथ जी महाराज के पास पहुंच कर विश्राम किया। यहां पर लक्ष्मणझूला होतें हुए गंगा किनारे मस्त बाबा से सत्संग किया व गंगा स्नान करके अन्य दर्शनीय स्थान देखते हुए वापिस देहरादून आगये। लक्ष्मण, घनश्याम, मुरारी, सुभाष, हरि, प्रताप आपके साथ थे। कुछ दिन रुक कर पुनः 12 जून को आप स्नानार्थ हरिद्वार

ऋषिकेश गये। इस बार लक्ष्मण, भगवानसिंह, भंवर व लाला आपके साथ थे। यहां से वापिस देहरादून पहुंचकर दूसरे दिन 13 जून को दिल्ली आ गये। दिल्ली में रात्री विश्राम करके दूसरे दिन लक्ष्मणगढ पहुंच गये।

इसी प्रकार अगले वर्ष सन् 1978 मई में लक्ष्मणगढ से प्रस्थान कर आप दिल्ली होते हुए देहरादून पहुंचे। मेजर लक्ष्मण व लाला आपके साथ थे। देहरादून कुछ दिन रुके व हरिद्वार ऋषिकेश स्नानार्थ दो बार गये। वहां गंगा स्नान मस्त बाबा आदि संतों से सत्संग व दर्शनीय स्थान देखे। यहां से वापिस लक्ष्मणगढ आश्रम पर पहुंच गये।

आपने 5 जून 1979 को लक्ष्मणगढ से जयपुर के लिए प्रस्थान किया। जयपुर में मेजर द्वारका प्रसाद के पास रुकते हुए दूसरे दिन भरतपुर गोपाल के पास पहुंचे। वहां रात्री विश्राम करके दिल्ली रामचन्द्र के पास रुकते हुए देहरादून पहुंचे। मेजर लक्ष्मण आपके साथ था। यहां से ऋषिकेश अमृतधाम में श्री धड़ीनाथजी महाराज के पास पहुंच कर पूर्णिमा का प्रसाद बनवाया। गंगा स्नान, सत्संग दर्शन किया। आपके साथ लक्ष्मण, मूलसिंह, प्रदीप, बुद्धराम, भंवर आदि थे। यहां से वापिस देहरादून आ गये। देहरादून में शिवबाल, योगी से मिले व सत्संग वार्तालाप किया। यहां से वापिस दिल्ली होते हुए लक्ष्मणगढ पहुंच गये।

28 मई 1981 को लक्ष्मणगढ से प्रस्थान कर दिल्ली रामचन्द्र आदि सेवकों के पास रुकते हुए देहरादून मेजर लक्ष्मण के पास पहुंचे। यहां दो दिन विश्राम करके ऋषिकेश अमृतधाम में श्री धड़ीनाथजी महाराज के पास पहुंचे। यहां सप्ताह पर्यन्त निवास किया। श्री खेतानाथजी महाराज यहां पहले से ही विराजमान थे। उनके साथ गंगा स्नान किया,दर्शनीय स्थान देखे व अनेकों साधुओं से सत्संग किया। दूसरे दिन श्री खेतानाथजी महाराज बद्रीनाथ यात्रा को प्रस्थान कर गये। आपके साथ मूलसिंह व सुभाष था। नित्य प्रति सुबह शाम गंगा स्नान व सत्संग किया करते। मेजर लक्ष्मण, रामचन्द्र, शिव भी यहां पर आये। यहां से वापिस देहरादून आकर विश्राम किया। पुनः 6 जून को ऋषिकेश पहुंच कर गंगा स्नान किया व अमृतधाम रुके। दूसरे दिन पूर्णिमा का प्रसाद बनवाया। मेजर लक्ष्मण, मूलसिंह, सुभाष, विद्याधर, शिव आपके साथ थे। यहां से वापिस देहरादून आरकर 18 जून को देहरादून से दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। दिल्ली में कन्हैयालाल चोटिया के पास रात्रि विश्राम कर दूसरे दिन रामगढ गोपाल जी के पास पहुंचे। जयपुर से 25 जून को सानन्द लक्ष्मणगढ आश्रम पर पहुंच गये। सुभाष आपके साथ था।

मई सन् 1983 को लक्ष्मणगढ से प्रस्थान कर दिल्ली रामचन्द्र व कन्हैयालाल के पास रुकते हुए हरिद्वार पहुंचकर गंगा स्नान किया व गोरक्षनाथ मन्दिर में दर्शन व विश्राम किया। सुभाष व मूलसिंह आपके साथ थे। यहां से ऋषिकेश अमृतधाम में पहुंच कर वहां सप्ताह पर्यन्त रुके। नित्य

प्रति गंगा स्नान, साधु सत्संग होता रहता। एक बार देहरदून भी हो कर आये। लाला व भागिरथ आपके दर्शनार्थ यहां आये। ऋषिकेश से वापिस हरिद्वार पहुंच कर गंगा स्नान किया व यहां से प्रस्थान कर दिल्ली रुकते हुए रामगढ गोपालजी के पास पहुंचे। यहां एक रोज विश्राम करके जयपुर मूलसिंह के यहां पहुंच कर चार पांच दिन विश्राम किया। जयपुर से सीकर होते हुए सानन्द लक्ष्मणगढ पहुंच गये।

महन्त अवैधनाथजी महाराज गोरखपुर दिनांक 8 सितम्बर 1978 को आश्रम पधारे। उन्होंने आश्रम का अवलोकन किया व यहीं रात्री विश्राम किया। आप उस समय फतेहपुर में रमें हुए थे। उनके आगमन का समाचार पहुंचने पर रात्री को वापिस लक्ष्मणगढ आ गये। सुबह महन्त जी से आपका सत्संग व वार्तालाप हुआ व प्रार्थना के कार्यक्रम के पश्चात उपस्थित सेवक भक्तों को उन्होंने सम्बोधित किया। उन्होंने पुनः घूम फिर कर आश्रम का निरीक्षण किया। तत्पश्चात् उन्होंने जलपान करके फतेहपुर को प्रस्थान किया। प्रस्थान के समय आपने महन्तजी को व उन्होंने आपको माल्यापर्ण किया। आप उनके साथ फतेहपुर तक गये। उन्होंने गद्गद् हृदय से आश्रम व्यवस्था, सेवकों के सेवाभाव व आप द्वारा शिक्षित समाज को अध्यात्मिकता की ओर मोडने के प्रयास की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस समय श्री महन्तजी द्वारा अभिव्यक्त भावों का मूर्त रुप उनके द्वारा गोरखपुर पहुंचकर लिख गया पत्र है जो अग्र पक्तियों में उद्यृत है।

अखिल भरत वर्षीय अवधूत भेष बरह–पंथ योगी महासभा
(कार्यालय हरिद्वार)

अध्यक्ष	उपकार्यालय
महन्त अवेधनाथ	गोरख मन्दिर, गोरखपुर
एम.एल.ए. भूतपूर्व संसद सदस्य,	दिनांक 6.1.1978
श्रीमान बाबा श्रद्धानाथजी	

आदेश–आदेश

मैं सकुशल गोरखपुर पहुंच गया हूँ। लक्ष्मणगढ आपके आश्रम में एक रात्री का निवास यावत जीवन स्मरण रहेगा। रेगिस्तान में आपने अपने परिश्रम द्वारा आश्रम को जो भव्य स्वरुप प्रदान किया है वह स्वच्छता एवं भव्यता सम्बन्धी आपकी रुचि का परिचायक है। सब मिलाकर आश्रम का स्वरुप व वातावरण आपने ऐसा बना दिया है, जहां पर अनायास ही मन आत्माभिमुख हो जाता है। आपने जो स्नेह एवं आतिथ्य दिया है, उसका मेरे मनोमस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव पड़ा है जो जीवन भर भी नहीं भूलाया जा सकता है। आश्रमवासी एवं अन्य भक्तों में जो साधु सेवा की भावना आपने उत्पन्न की है उसको देख कर मैं विशेष रुप से अभिभूत हुआ हूँ। कदाचित ही कहीं

ऐसी श्रद्धा स्नेह एवं सेवाभाव भक्तों में देखने को मिलता है। सचमुच आपका साधु जीवन सार्थक है। आशा है आप आपने भक्तों सहित सकुशल होंगे। आश्रमवासी एवं अन्य सत्संगियों को मेरा अशिर्वाद कहें।

भवदीय

महन्त अवैधनाथ

वस्तुतः यह आपकी आश्रम के प्रति स्नेहाभिव्यक्ति है। श्री बाबाजी के प्रति सरल हृदयोगार हैं।

पुनः श्री महन्तजी महाराज 12 मई 1982 को श्री खेतानाथजी महाराज के साथ फतेहपुर से लक्ष्मणगढ आश्रम पर पधारे। उन्होंने दिन भर यहां विश्राम किया व शाम को जयपुर के लिए प्रस्थान कर गये। जब तक आश्रम में रहे दर्शनार्थियों का तांता लगा रहा, व सत्संग वार्तालाप होता रहा। उन्हें परम्परानुसार भेंट पूजा देकर बिदा किया गया। इसके बाद कई बार उनका आगमन विविध अवसरों पर यहां होता रहा है।

श्री खेतानाथजी महाराज एक उच्च कोटि के महान तपस्वी थे। उनके हरियाणा राज्यान्तर्गत कई आश्रम हैं। जब से आप साधु बने तभी से श्री खेतानाथजी महाराज आपके अभिन्न प्रेमी रहे हैं। वे अक्सर लक्ष्मणगढ आश्रम पर आते रहते हैं। आपके व आश्रम के प्रति उनके हृदय में पवित्र स्थान है। श्री खेतानाथजी महाराज अपने क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित एवं समाज सुधारक साधु हैं। आप भी समय समय पर डहरोली, सीमा, छापर स्थित उनके आश्रमों में जाते रहते थे। वस्तुतः आप महापुरुषों का आत्मिक प्रेम दिव्य था। जब आप हरियाणा श्री खेतानाथजी महाराज के पास जाते तो रास्ते में टीबा बस्सी में श्री रामेश्वर दास जी से भी दर्शन मेला होता था। श्री रामेश्वर दास जी एक अच्छे संत थे। उनका आपसे बहुत प्रेम था।

श्री नाथ सम्मेलनः– यदा कदा जीवन में ऐसे क्षण भी आते हैं जो हमारी स्मृति में हमेशा के लिए अमिट बन कर रह जाते हैं। ऐसा ही शुभ अवसर चैत्र शुक्ला अष्ठमी सम्वत् 2035 दिनांक 15 अप्रेल 1978 का था। ठीक छः वर्ष पूर्व रामनवमी के शुभ मुहर्त में आश्रम की नींव रखी गई थी। छः वर्ष के अल्पकाल में आश्रम का सर्वांगीण विकास व शोभा देखकर हर दर्शनार्थी आश्चर्य चकित व गद् गद् हो जाता है। श्री नाथ कुंज के हरे भरे पेड़, शुभ्र आश्रम पर फहराते हुए भग्वांध्वज यहां का शान्त, शुद्ध वातावरण अनायास ही अगन्तुक दर्शनार्थी का मन मोह लेता है। सभी के मुख से प्राय सुने को मिलता है कि यहां पर स्वतः ही अलौकिक शान्ति मिलती है।

श्री पूर्णनाथजी का मेला भण्डारा दिनांक 14, 15 व 16 अप्रेल 1978 को श्री पूर्णनाथजी का मठ लक्ष्मणगढ में सम्पन्न हो रहा था। उस मेले में नाथ सम्प्रदाय के 32 धूणियों के सभी महन्त व

योगेश्वर पधारे। भण्डारें में उपस्थित सभी पीर महन्त योगेश्वारों ने 15 अप्रेल की पावन प्रभात वेला में आश्रम प्रवेश किया। आश्रम में बसों, कारों व जीपों द्वारा आयी इस योगेश्वर जमात को देखकर दर्शकों का हृदय आन्नद से झूम उठा। ऐसा लग रहा था कि मानों प्राचीन काल की बहुचर्चित श्री गोरक्षनाथजी महाराज की योगी जमात आश्रम को पवित्र करने आई है। इस पावन अवसर पर महन्त श्री हनुमाननाथजी महाराज फतेहपुर, प्रधान मंत्री श्री चेताई नाथजी, उप मंत्री श्री रविनाथजी, दलिचा हरिद्वार, श्री धड़ीनाथजी बिसाऊ, श्री शंरनाथजी थान मठोई, श्री ज्ञाननाथजी टांई, श्री प्रयागनाथजी भवानी खेड़ा, श्री शेरनाथजी रुकनसर, श्री बालकनथजी सीरसा, श्री माननाथजी हलवास, श्री छोटुनाथजी नोहर, श्री बधाईनाथजी रायसिंहपुर, श्री मंगलनाथजी पालवास, श्री सोमनाथजी एवं श्री पूर्णनाथजी जोधपुर, श्री विवेकनाथजी बीकानेर, श्री शंकरनाथजी शास्त्री फलेग्राही पयाला, ददरेरा, चूरु, बूंटिया, फरटिया, राजगढ, रिणी, चौपाला, सुल्तानपुर, गंगानगर, कुरुक्षेत्र, लुधियाना, व हरियाणा पंजाब के विभिन्न स्थानों के पीर महन्त, योगेश्वर एवं शिष्यगणों ने आश्रम पर पधार कर यहां की सोभा बढाई। संत योगेश्वर प्रातः सवा आठ बजे आश्रम पधारे व साठे ग्यारह बजे तक यहां आसीन रहे। इस समयान्तराल में जो आनन्द उल्लास का वातावरण रहा वह शब्दों में नहीं समा पा रहा है।

आगुन्तक योगेश्वरों ने चारों तरफ घूम फिर कर आश्रम का आलोकन किया। हर जगह भगवां भेष से आश्रम की शोभा द्विगुणित हो गई। प्रार्थना भवन में तख्तों पर आसीन पीर महन्त मानधारी व नीचे फर्श पर बीछी सुन्दर दरियों पर संत योगेश्वरों, भेष भगवान को हाथ जोड़े खड़े श्री बाबाजी महाराज, भाव विभोर हो सेवारत श्री नाथजी महाराज का सेवक वृंद यदा कदा इस आन्नद दायक दृश्य को चित्रित करते फोटोग्राफर आदि दृश्य को देख कर दर्शकगण आनन्दित एवं निर्मेष थे। इस भव्य स्वागत से संत योगेश्वर समाज बहुत प्रसन्न हुआ। सभी योगश्वरों एवं सेवक भक्तों को नाना प्रकार की मिठाईयों का अल्पाहार व मनोवांछित मात्रा में दुग्ध सेवन करवाया गया। तदोपरान्त श्री शंकरनाथजी शास्त्री ने प्रवचन किया। उन्होनें स्नेहाद्रवाणी में गद् गद् हृदय से कहा कि जब मैं प्रथम द्वार में प्रविष्ठ हुआ तो प्रतीत हुआ कि यह कोई सेठों का बगीचा है। जब द्वितीय द्वार को पार किया तो प्रतीत हुआ कि कोई रईसों की कोठी है। परन्तु जब अन्दर प्रविष्ठ हुआ तो लगा कि यह तो श्री नाथजी महाराज का पावन पवित्र आश्रम है। यह बाबा श्री अमृतनाथजी महाराज की कृपा का सार रुप है। उन्होंने सभी योगश्वरों को नाथ सम्प्रदाय के गौरवशाली अतीत एवं महापूरुषों का स्मरण करते हुए इस सम्प्रदाय के चहुमुखी विकास के लिए आवहान किया। इस आश्रम को श्री बाबाजी महाराज की त्याग एवं तपस्या का फल बताते हुए यहां की स्वच्छता, शुद्धता, एवं पवित्रता की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इन्होने श्री बाबाजी महाराज को लक्ष्य कर कहा "सभी

योगेश्वर बैठे हैं। सेवक सेवारत हैं। फोटोग्राफर फोटो ले रहे हैं। परन्तु जिनके पास साधु प्रेम से आये हैं व जिनका सब कुछ है वह महायोगी एक कोने में सभी योगियों को हाथ जोड़े खड़े हैं। आग्रह करने पर भी नहीं बैठ रहे हैं। धन्य हैं ऐसे महान तपस्वी आदि।"

तत्पश्चात प्रधानमंत्री श्री चेताईनाथ जी ने अपने हृदयोदगार प्रगट किये। उन्होने आश्रम की स्वच्छता, शुद्धता, पवित्रता, एवं यहां के प्रेम भाव की प्रशंसा करते हुए कहा कि "मैं जहा कहीं भी जाता हूँ वहां अन्य योगियों को बताया करता हूँ कि यदि पवित्र एवं आदर्श आश्रम देखना है तो लक्ष्मणगढ स्थित श्री नाथजी महाराज का आश्रम देखिये।" इस मंगल वेला में उन्होंने अखिल भरतवर्षीय योगी अवधूत महासभा के अध्यक्ष श्री अवैधनाथजी महाराज का पत्र पढकर सुनाया जिसमें गोरखपुर पहुंचकर उन्होंने अपने उदगार प्रगट किये थे। प्रधानमंत्री ने इस आश्रम की तुलना स्वर्ग से की।

इसके बाद श्री बाबाजी महाराज ने सभी पीर महन्तों व योगेश्वरों को सम्बोधित करते हुए विनम्र भाव से कहा, " मुझे मेरी महात्माई, तपस्या व आश्रम की विशेषतायें सुनकर उतनी प्रसन्नता नहीं हो रही है जितनी आप भेष भगवान के पधारने से हुई है। यह आश्रम मेरा नहीं है, आप सभी योगेश्वरों का है। यह सब गुरु लोगों की कृपा का फल है। मैं तो नीमितमात्र हूँ। सब लोग इस आश्रम को स्वर्ग बताते हैं परन्तु यह स्वर्ग आज ही सार्थक हुआ है जब आप भेष भगवान ने देवताओं के रुप में यहां पधार कर हमें कृतार्थ किया है। मैं प्रेम भरे हृदयसे सब योगेश्वरों को आदेश–आदेश करते हुए सबका हार्दिक स्वागत करता हूँ। आज का यह आनन्द दायक दृश्य मैं जीवन भर नहीं भूल सकूंगा।" इतना कह कर आपने श्री गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज, श्री अमृतनाथजी महाराज, श्री गुरु महाराज श्री शुभनाथजी महाराज, भेष भगवान, की जय जयकार करते हुए आगन्तुक साधु समाज पर पुष्प वर्षा की। संत योगेश्वर भी आपस में पुष्पाहार पहनाते हुए गद् गद् हृदय से आदेश आदेश कर रहे थे। फोटोग्राफर इस हृदय द्रावक आनन्दोल्लासित अवसर पर चित्र ले रहा था। कदाचित ही प्रेम व आनन्द का इतना उत्कृष्ट वातावरण देखने को मिलता है। दर्शकगण बाह्य जगत से विस्मृत हो केवल आनन्दानुभूति कर रहे थे।

सभी पीर महन्त मानधारियों व योगेश्वरों को सम्प्रदाय के नियमानुसार श्री हनुमानजी महाराज के कर कमलों द्वारा पूजा भेंट देकर सम्मानित किया गया। प्रसथान के समय प्रेम पूर्ण हृदय से आदेश आदेश करते हुए पुनः योगेश्वर समाज ने आश्रम व्यवस्था, स्वच्छता एवं शुद्धता की प्रशंसा की तथा इसे बनाये रखने की शुभकामनाओं सहित इस आश्रम को नाथ सम्प्रदाय का आदर्श आश्रम घोषित किया। इस तरह भेष भगवान ने इस आश्रम को मान्यता प्रदान की व श्री

पूर्णनाथनाथजी के भण्डारे में यहां के पूजारी श्री राधेश्याम को श्री नाथजी महाराज के पूजारी के रुप में मान्यता प्रदान कर अन्य योगेश्वरों के समान ही भेंट देकर सम्मानित किया।

वस्तुतः यह आश्रम के लिए एक अविष्मरणीय पावन पर्व था। सेवक भक्तों ने आपर उत्साह व प्रेम से सेवा की। श्री हनुमाननाथजी महाराज ने इस अवसर पर जिस आत्मियता से एवं प्रफुल्लित हृदय से योगेश्वरों को आश्रम में लाने व उनके सम्मान में जो उत्साहपूर्ण योगदान किया, वह सराहनीय है। यह पावन पर्व उनकी इस आश्रम के प्रति स्नेह, बंधुत्व का प्रतीक है।

आप लक्ष्मणगढ से बाहर भी धार्मिक कार्यों में रुचि रखते थे। बहुत सी जगह मन्दिर आपकी प्रेरणा से गांवों में लोगों ने बनवाये। सीकर आदर्श नगर स्थित विश्वनाथ मन्दिर भी आपकी ही प्रेरणा से सेवक भक्तों ने बनवाया है। इस मन्दिर में शिवलिंग स्थापित है तथा श्री राम मन्दिर भी है। एकान्त में एक कमरा बना हुआ है जिसमें आप जब कभी सीकर जाते तो विश्राम किया करते थे। धर्म सम्राट संत शिरोमणि श्री करपात्री जी महाराज का शुभागमन आश्रम पर दिनांक 29 अक्टूम्बर 1977 को हुआ। स्वामी जी अपने समय के ख्याति प्राप्त हिन्दु संत थे। आश्रम आने पर आपका हार्दिक स्वागत किया। आश्रम व्यवस्था एवं यहां का शान्त वातावरण देखकर वे बहुत प्रभावित हुए व इसे मारवाड़ राजस्थान का एक आदर्श बताया तथा कहा कि जब भी लक्ष्मणगढ आऊंगा तो यहीं पर निवास करुंगा। आपसे उन्होने बहुत प्रम किया। उनको जब भेंट स्वरुप चांदर अर्पित की गई तो उसे उन्होंने संतों का प्रसाद' कहकर स्वीकार किया। अगले दिन प्रभात बेला में आपका उनके साथ सत्संग वार्तालाप हुआ। आश्रम पर दाता महाराज दिनांक 19 अप्रेल 1979 को जयपुरसे पधारे। श्री दाता महाराज गृहस्थ में रहते हुए भी उच्च कोटि के संत हैं। मारवाड़ क्षेत्र में उनकी बहुत ख्याती है। उनकी अवस्था अन्तर्मुखी है। आपने उनसे बहुत प्रेम किया व 'गुप्त नाथ' कह कर सम्बोधित किया। उन्होने आश्रम में परिव्याप्त आपार शान्ति को महशूश किया। वे करीब दो घंटा रुक कर वापिस जयपुर चले गये। इसके बाद उनका आश्रम पर कई बार शुभागमन हुआ है।

जब आप आश्रम पर होते तो कोई न कोई संत महात्मा आपके दर्शन सत्संगार्थ आता ही रहता। शायद ही ऐसा कोई दिन जाता कि दो चार आगुन्तक संत महात्मा आश्रम में आसीन न हों। आपके विशुद्ध ज्ञान एवं आत्मिक प्रेम से आकृष्ठ हो कर ये संत महात्मा अक्सर अपने गुढतम अनुभवों पर सही की छाप लगवाने व सत्संग वार्तालाप करने हेतु आते ही रहते थे। आपका रमते घूमते साधुओं के प्रति अत्यधिक स्नेह व सहानुभूति का व्यवहार उनका दिल जीत लेता था। आप कहा करते थे कि मैंने रम कर देखा है। मैं इनकी कठिनाइयों को जानता हूँ। इन रमते घूमते साधुओं को भोजन पानी की व्यवस्था व ओढने पहनने के वस्त्र की व्यवस्था आप करते रहते थे।

कुछ न कुछ भेंट स्वरुप भी उन्हें दिलाते रहते ताकि वे अपनी सुविधानुसार उसे बरत सकें। अदभूत दया थी आपके दिल में उनके प्रति।

पछिले छः वर्ष से आप अधिकतर आश्रम में ही निवास करते थे। यदा कदा रमण भ्रमण के लिए प्रस्थान कर जाते थे। जिनमें कुछ का संक्षिप्त वर्णन हम पूर्व में कर आये हैं व कुछ का आगे करेंगे। आश्रम पर आपकी आदर्श दिन चर्या सुबह आरती से आरम्भ होती। श्री नाथजी महाराज की आरती पूजा में आप नित नियम से उपस्थित होते व सेवक भक्तों को दर्शन देते। तत्पश्चात अपने कक्ष में ध्यान भजन में निमग्न रहते। सूर्योदय के समय बाहर आश्रम में घूमने के लिए निकल आते। पूरे आश्रम में घूमना तथा अवलोकन करना आपका दैनिक कार्य था। इसी समय जो कुछ भी हिदायत देनी होती आप दे दिया करते थे। इसके बाद अगले चौबीस घंटों तक आश्रम व्यवस्था से उपराम ही रहते थे। सुबह के नित्यकर्म से निर्वत होने के पश्चात श्री नाथजी महाराज की प्रार्थना बुलाते थे। इस समय तक बाहर से सेवक भक्त–दर्शनार्थियों की मन की भावनाऐं सुनने व अपनी मृदुवाणी से सांत्वना देकर कृतार्थ किया करते। कोई साधक, संत या भक्त आ जाता तो उससे ज्ञान की चर्चाऐं करते रहते व सरल युक्तियों द्वारा उसका शंका समाधान कर उसमें आगे के लिए नव उत्साह का संचार किया करते थे। दोपहर के भोजन के बाद कुछ देर विश्राम करते व शाम को पुनः यही कार्यक्रम प्ररम्भ हो जाता था जो शाम आरती पूजा तक अनवरत चलता रहता था। आरती के बाद शाम की प्रार्थना करवाते व बाहर से आये भक्तों को प्रसाद देकर आज्ञा देते थे। दिन भर में जितने भी दर्शनार्थी आते सभी को आप बतासा का प्रसाद देते थे। एक महान आश्चर्य जो सभी दर्शनार्थियों को होता था वह यह कि एक छोटे से डिब्बे से कितने ही जनों को प्रसाद वितरण कर देते थे परन्तु वह डिब्बा खाली नहीं होता। आपकी एक ही आसन में दिन भर की बैठक देखकर भी लोग चकित रह जाते थे। किसी भी समय कोई भी आ जाये आप उसी आसन में प्रसन्नचित्, बैठे हुए मिनते थे। वस्तुतः आप आसन सिद्ध थे। शाम के समय आप भोजन न लेकर अल्प मात्रा में दुग्ध सेवन ही करते थे तत्पश्चात अपने कक्ष में विश्राम, ध्याज भजन करने हेतु चले जाते थे। सुबह पुनः आरती में पधार जाते थे। यह दिन चर्या आपकी अनवरत चलती रहती थी। इस बहिरंग वृति को भंग नहीं होने देते थे। यह आपकी एक अनुपम विशेषता ही थी कि आप दोनों पार्ट कुशलतापूर्वक अदा किया करते थे। यह केवल आप जैसे जीवनमुक्त महापुरुषों के लिए ही सम्भव है।

सुबह शाम के समय आगन्तुक दर्शनार्थियों को इन शान्त एवं आत्म विभोर सभाओं को देख कर दर्शक गद गद हो जाता था। ऐस लगता था मानों कैलाश में शिव सभा बैठी हुई है। आश्चर्य होता यह देख कर न तो किसी के कोई प्रश्न है, न कोई शंका तथा न हीं किसी प्रकार का उद्वेग

है। इतने तल्लीन व नियमित रहते आपकी सहज वाणी में, कि जो भी आप उच्चारण करते वही केवल सत्य बन कर उनके दिल दिमाग को सारा बोर कर देता था। यदि किसी को तनिक सा भैतिक शरीर का भानभी कभी कभार होता वह सोचता कि कहीं बाबाजी महाराज बोलने से बंद न हो जायें। यह अमृतवाणी अनवरत बरसती रहे, बरसती रहे। आपकी दैविक वाणी के साथ उनके दिलों का एकत्व हो जाया करता था। पचास व्यक्ति बैठे हैं। पचासों का भिन्न भिन्न मत व मंसा है। परन्तु महाआश्चर्य कि आप जो एक पूर्ण बात बोल रहे हैं वही इन पचासों को अपने अनुरुप ही लगती है। और जब आप इन्हें आज्ञा देकर विदा करते तो ये आत्म विस्मृत से इस तरह चले जाते मानों अब यह जरुरी है। आपके सानिध्य में अगाध शान्ति एवं विचारों में स्थिरता किसी भी दर्शक गण को अनिवार्यतः ही मिला करती थी। आपका अपनत्व भरा आत्मिक प्रेम उपदेश इन्हें कृत कृत्य कर दिया करता था। अधिक क्या लिखूं आपके पास कोई व्यक्ति विशेष नहीं केवल आप ही होते थे। वस्तुतः आप इस युग में रेगिस्तान के मध्य प्रवाहित गंगा थे। जिसमें दूर दूर से तृसित जन आकर आपनी प्यास शान्त किया करते थे। इन सत्संग वार्तालापों को आचमन करने वाले धन्य हैं। सार्थक है उनका जीवन जिन्होंने आपके कृपा कटाक्ष का प्रत्यक्ष अनुभाव किया।

आपके इस सानिध्य से मनुष्य क्या प्रकृति एवं जड़ वस्तुऐं भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी। आपके आश्रम निवास से आश्रम का जो दिव्य वातावरण बना रहता था उसे शब्दों में पिरोना लगभग असम्भव ही है। फिर भी मैं बाह्य आवरण ही सही कुछ शब्द चित्र प्रस्तुत करने में अपने को रोक नहीं पा रहा हूँ। एक आलोकिक वातावरण था वह। चारों तरफ शान्ति एवं आनन्द की वर्षा होती रहती थी। परम स्वतंत्रता का ऐसा आलम की आत्मानुशासन स्वतः ही सेवक भक्तों एवं दर्शनार्थियों का अपरिहार्य अंग बन जाता था। अपनत्व का आत्मिक आनन्द सदा ही बना रहता। चारों तरफ प्रेम की गंगा कलकल बहती रहती थी। चारें तरफ लहलहाती हरियाली , उत्कृष्ट स्वच्छता एवं सफाई, शुभ्र भवनों पर लहराते भग्वां ध्वज, समर्पित सेवक भक्त, शीतल सुगन्धमय पवन, आनन्दोल्लास से चहचहाता पक्षी वृंद,सरल हृदयी दर्शकगण, एवं उन सबके मध्य साक्षात शिव आप श्री नाथजी महाराज की वह प्रसन्नचित् दिव्य छवि न आज दिल से ओझल हो रही है तथा न कभी ओझल होगी। आपका भौतिक शरीर आज हमारे मध्य नहीं रहा परन्तु वह छवि हमारे दिल दिमाग में सदा–सर्वदा के लिए प्रवेश कर गयी है। श्री नाथजी महाराज से यही कर बद्ध प्रार्थना है कि यह छवि सदा बनाये रखें।

विविधताओं का संगम है आपका जीवन। जब एक पहलु को छूते हैं तो दूसरा किनारा कर जाता है। सत्संग वर्णन करने लगे तो रमण भ्रमण शेष रह गया। इस कारण से कुछ कालक्रम का

ध्यान भी नहीं रह पाया है। उसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। आपका राजस्थान भ्रमण जो इन वर्षों में हुआ उसका विवरण यहां प्रस्तुत है।

सन 1980 में आपने लछमणगढ से प्रस्थान कर डूंगरगढ पहुंचकर रात्री विश्राम रामप्रताप के यहां किया। दूसरे दिन बीकानेर डॉ. सुभाष के पास होते हुए शाम को मालसर मालूराम के यहां रात्रि विश्राम किया। दूसरे दिन वहां से वापिस बीकानेर आकर कोलायत जी स्नानार्थ गये। आपके साथ सुभाष, गंगा सिंह, डॉ. सुभाष व अन्य सेवक भी थे। कोलायतजी से वापिस बीकानेर आकर रात्रि विश्राम गंगासिंह के पास किया व दूसरे दिन लछमणगढ पहुंच गये। सुभाष आपके साथ था। दिनांक 24 मार्च 1981 को आपने श्री सती माई, बाला (जोधपुर)के दर्शनार्थ प्रस्थान किया। आपके साथ फतेहपुर से महन्त श्री हनुमानथ जी महाराज एवं उनके साधु सेवक, लक्ष्मणगढ से श्री चुनीलालजी, जवाहरजी, मुरारीजी, घनश्याम व सुभाष आदि सेवक थे। दो जीपों द्वारा नागौर होते हुए रात्रि को सती माई की कुटिया पर पहुंच कर वहां रात्रि विश्राम किकया। सुबह सती माई के दर्शन व सत्संग किया। श्री सती माई ने आपको बहुत प्रेम व सम्मान दिया। यहां पर प्रवाहित बाण गंगा में स्नान करके सुबह की प्रार्थना बोली। जिसे सुन कर सती माई बहुत प्रसन्न हुए व पुनः प्रार्थना सुनाने का आग्रह किया। उनकी इच्छानुसार पुनः प्रार्थना बोली गयी। श्री सती माता पिछले 40 वर्षों से अन्न जल ग्रहण नहीं कर रही हैं। केवल हवा के आधार पर ही जीवित हैं। उन्होंने स्वयं अपने हाथों से भोजन परोषा। यहां पर कुछ देर विश्राम करके पुनः श्री सती माई की कुटिया का अवलोकन कर वापिस प्रस्थान किया। प्रस्थान के समय आपने प्रसाद वितरण किया। श्री सतीमाई एवं उनके भक्तों ने मंगलाचरण के साथ भावभिनी विदाई दी। यहां से मेड़ता सिटि होते हुए सानन्द लक्ष्मणगढ पहुंचें

24 अगस्त 1984 को लक्ष्मणगढ से प्रस्थान कर रात्रि विश्राम जयपुर में अर्जुन के पास किया। दूसरे दिन भरथरी जी पहुंचकर भरथरीजी महाराज की समाधि के दर्शन व साधु सत्संग किया। रात्रि विश्राम रामगढ गोपाल के पास किया व सुबह वापिस जयपुर पहुंचकर दो दिन मूलसिंह जी के पास रुके। यहां से अजमेर पहुंचकर वहां के दर्शनीय स्थान देखे व रात्रि विश्राम वासुदेवजी के यहां किया। सुबह पुष्कर पुहंचकर स्नान किया, यहां के मन्दिरों में दर्शन किये व साधु सत्संग करके वापिस अजमेर आ गये। वासुदेव व सुभाष आपके साथ थे। अजमेर से बोरावड़ घनश्याम के पास होते हुए रात्रि को जोधपुर नरपत के पास पहुंचे। गोपालजी व घनश्याम भी वहां आगये। दूसरे दिन सती माई के दर्शनार्थ गये व वापिस जोधपुर आकर यहां के दर्शनीय स्थान व श्री नाथजी के स्थान आदि देखे। एक रोज जोधपुर में विश्राम करके सीकर होते हुए लक्ष्मणगढ आश्रम पर पहुंच गये। इस यात्रा में सुभाष आपके साथ था।

अगले माह रामेश्वरदास जी (टीबा बसी) के रुग्ण होने पर उनके अन्तिम दर्शनार्थ गये। लौटते समय खानवा में श्री ब्रह्मचारी जी से भी मिलते आये। श्री ब्रह्मचारी जी प्रेमी साधु हैं। सुभाष, मुरारी, किशन आदि सेवक आपके साथ थे। श्री रामेश्वरदासजी के शरीर छोड़ने पर आप पुनः टीबा बसी गये। इस बार आगे नारनौल होते हुए श्री खेतानाथजी महाराज के पास छापर तक जाकर आये। एक रात वहां पर विश्राम किया। दूसरे दिन वहां से प्रस्थान कर ब्रह्मचारीजी से मिलते हुए वापिस लक्ष्मणगढ पहुंच गये।

इस यात्रा के बाद आप दिन प्रतिदिन शरीर से उपराम होने लगे। अहर्निश अपनी आत्मा में ही रमण करने लगे। एक बार मैंने आपसे शरीर के विषय में चर्चा की थी तो आपने फरमाया था कि जब तक मैं इस शरीर में व संसार में यानि तुम लोगों व आश्रम में रुचि ले रहा हूँ तब तक ही मेरा शरीर है। जिस दिन मैंने रुचि लेना बन्द कर दिया तो समझ लेना अब शरीर अधिक समय नहीं रहेगा। इस प्रकार की अवस्था आपकी दिसम्बर जनवरी में बनने लग गयी। आपकी सम्पूर्ण वृतियां अंतरंग होने लग गयी। लौकिक व्यवहार आपको अरुचिकर लगने लग गया व आपने बहिरंग संसार को सिमित करना प्ररम्भ कर दिया। हमारे दिलों में इससे आशंका होने लगी कि कहीं यह सब आपके शरीर त्यागने का संकेत तो नहीं है। यही नहीं शरीर निर्वाह के लिए आवश्यक भोजन में भी आपकी अरुचि हो गयी। हम सब सेवकों के लिए यह एक अनम्र वज्रपात था। आपने दूसरा स्पष्ट संकेत श्री बैजनाथजी, चेतननाथजी, अभयनाथजी व रामनाथजी का दीक्षा संस्कार करके दे दिया।

श्री बैजनाथजी का दीक्षा संस्कार आपके कर कमलों द्वारा फाल्गुन शुक्ला अष्टमी सम्वत् 2041 दिनांक 28 फरवरी 1985 को नाथ सम्प्रदाय के विधि विधानानुसार सम्पन्न हुआ तथा फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा सम्वत् 2041 दिनांक मार्च 1985 को श्री चेतननाथ जी, अभयनाथ जी, व रामनाथजी का दीक्षा संस्कार कर उन्हें भेष भगवान की शरण में सम्मिलित कर दिया। इन अवसरों पर महन्त श्री नरहरिनाथजी फतेहपुर, महन्त रतिनाथजी बऊ, महन्त श्री देबीनाथजी–चुरु, महन्त श्री मंगलनाथजी पालवास, अखिल भारतवर्षीय योगी अवधूत महासभा हरिद्वार के मंत्री श्री रविनाथजी एवं मन्नाथी पंथ के अनेकों यागेश्वर उपस्थित हुए। इन सभी उपस्थित पीर महन्त योगेश्वरों को नाथ सम्प्रदाय के नियमानुसार पूजा भेंट देकर सम्मानित किया गया। श्री नाथजी महाराज का प्रसाद बनाया गया जिसमें सभी पीर महन्त योगश्वर व सेवक भक्त सम्मिलित हुए।

आपने सभी सेवक भक्तों एवं साधुओं के सामने श्री बैजनाथजी को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया तथा उनके हक में आश्रम सम्बन्धी अधिकारों को प्रदान कर वसियत कर दी। यह स्पष्ट संकेत आपके महाप्रयाण का जान सभी सेवक भक्त हतप्रभ रह गये। अनायास ही कल्पना से

बाहर की घटना के लिए कोई भी मानसिक रुप से तैयार नहीं था। सभी ने श्री नाथजी महाराज से व आप से कर बद्ध निवेदन किया कि हमें कुछ समय आपके सेवा दर्शन का देकर, कृतार्थ करें। श्री नाथजी महाराज दयालु हैं। उन्होंने हमारी प्राथना सुनी व आपने हम सब पर अपूर्व दया करके शरीर में पुनः रुचि लेनी शुरु कर दी। एक बार पुनः आप पूर्ववत स्थिति में आगये तो सेवकों ने संतोष की सांस ली। वही दिनचर्या आपकी पुनः प्रारम्भ हो गयी। एक संकल्प आपके दिमाग में हरिद्वार यात्रा का शेष था उसे भी सम्पन्न करते हेतु आपने सबके दिलों में एक बारगी यह भय मिटा दिया।

अन्तिम हरिद्वार यात्राः– दिनां 14 जून 1985 को आपने लक्ष्मणगढ से हरिद्वार के लिए प्रस्थान कर दिल्ली में शिशुपाल के पास होते हुए देहरादून ले.कर्नल लक्ष्मणजी के पास पहुंचे। सुभाष आपके साथ था। यहां ऋषिकेश पहुँचकर गंगा स्नान, साधु सत्संग किया व रात्री विश्राम अमृतधाम में किया। सुबह वहां से प्रस्थान कर हरिद्वार पहुंचकर गंगा स्नान करके गोरखनाथ मन्दिर में दर्शन केये। इस दिन अमावस्या थी। आपने सभी साधुओं को भण्डारा दिया तथा भेंट पूजा देकर सम्मानित किया। यहां से वापिस देहरादून आगये। कुछ दिन यहां विश्राम किया व पुनः ऋषिकेश पधार का गंगा स्नान किया व मस्त बाबा आदि साधु सन्तों से सत्संग वार्तालाप किया। लक्ष्मणजी, सुभाष व शिव आपके साथ थे। यहां से वापिस देहरदून आगये। देहरादून पहुंचकर दूसरे दिन सुबह आपने पुनः ऋषिकेश गंगास्नान की इच्छा व्यक्त की। आप बोले कि यह अन्ति स्नान है। फिर तो कभी आना होगा नहीं। एक बार पुनः गंगा स्नान करके आयेंगे। मैं, सुभाष आपके साथ गया। ऋषिकेश पहुंच कर आपने काफी देर तक स्नान किया व वहां के प्रेमी साधु सन्तों से मिले। यहां से वापिस देहरादून आकर एक दिन विश्राम किया। 27 जून 1985 को आपने देहरादून से दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। प्रस्थान के समय आपने पुनः लक्ष्मणजी एवं उनके परिजनों से कहा कि अब फिर आना न होगा। अब की बार बहुत आनन्द रहा। आपने बहुत प्रेम से सेवा की है। सबकी आखें छलछला आयी। एक अनचिति आशंका से मन भर गया। दिन में दिल्ली में रुकते हुए दूसरे दिन सानन्द लक्ष्मणगढ पहुच गये। सुभाष आपके साथ था। देहरादून में आपके द्वारा बोले गये शब्द बार बार मेरे दिमाग में आ रहे थे। जिस दिन लक्ष्मणगढ पहुंचे उसी शाम आपने कहा, "सुभाष अब मैं क्या खाऊंगा?" मैने अनेक फलों, खाद्य पदार्थ, दुग्ध आदि जो आपको रुचिकर रहे हैं, नाम गिनाये परन्तु आपने इन्हे अनसुना कर दिया व उपरोकत वाक्य दो–तीन बार दोहराया। यह आपके शरीर त्यागने के निश्चय का स्पष्ट संकेत सुनकर मन विचलित हो गया। इसके बाद दिन प्रतिदिन आपने आपनी वृतियों को बाह्य जगत से समेटना शुरु कर दिया व शरीर में रुचि समाप्त प्रायः कर दी। फलस्वरुप आपकी खाद्य पदार्थों में अरुचि हो गयी। आप किसी वस्तु का सेवन करते ही नहीं।

हमारे आग्रह के कारण हमारा मन रखने के लिए कभी कभी कुछ ले लिया करते थे। मुझे अहनिश आपकी सेवा का सुअवसर प्रदान कर आपने कृतार्थ किया उसके लिए आभार व्यक्त करना मेरे शब्द सामर्थ्य के बाहर की बात है। एक दिन आपने मुझे पास बैठाकर अपने शरीर त्याग का निश्चय स्पष्ट शब्दों में बता कर हा कि बेटा! तूँ अधिक आग्रह मत करना। तूं मुझे श्री नाथजी महाराज के चरणों में जाने दे। अब मेरी यहां कोई ईच्छा शेष नहीं है। बहुत देर तक बाते होती रही। आपने मुझे अनेकों दिशा निर्देश एवं आशिर्वाद देकर कर्तार्थ किया तथा अन्त में यह कहलवा लिया कि आपकी इच्छा ही श्री नाथजी महाराज की इच्छा मानकर मैं अब कुछ भी नहीं बोलूंगा। बस यही आपका दुग्धपान था। इसके बाद आपने कुछ भी सेवन नहीं किया । हमने फिर भी प्रेमवश चेष्टा की तो असफल ही रहे। हमारा मन रख भी देते तो शरीर वह पदार्थ अस्वीकार कर देता। अब शरीर आपके लिए रह ही नहीं गया था। अपनी आत्मा में सर्वदा रमण करते व कहा करते कि बाहर भीतर एक ही हो गया है। यह आकार का भाण्डा अब फूट गया है। जो बाहर वह भीतर दिखाई दे रहा है। स्त्री पुरुष का भेद भी मिट गया है। सर्वत्र प्रकाश ही प्रकाश हो गया है। यह अवस्था आपके शीघ्र महाप्रयाण का पुर्व सूचक थी। हमने सभी सेवक भक्तों को अन्तिम दर्शन करने की सूचना की। दरूदराज क्षेत्रों से भी सेवक प्रेमी भक्त आपके अन्ति दर्शनों को उमड़ पड़े। अब तक यह चर्चा आस पास के गांवों व शहरों में भी फैल गयी। नित्य 15–20 हजार श्रद्धालु आपके दर्शनार्थ आते। पंक्ति बद्ध आकर दर्शन करते हुए आपके श्री चाणों में मौन श्रद्धा भाव अर्पित कर जाते। दिल रोके न रुकता था। आंखे बरबस ही बरस पड़ती थी। एक पंक्ति में जिसे भेज दिया वह दूसरी पंक्ति में आने की पुनः चेष्टा करता। क्या करें किसी का दिल भरता ही नहीं था आपके प्रिय दर्शनों से। फूट–फूट कर रो पड़ता था जनता जनार्दन। आपके सेवक भक्तों की दशा तो और भी अधिक नाजुक थी। सब कोई ठगा सहमा सा मूक बन गया। आप उनके तृप्त हृदयों को अपने प्रेम आर्शीवचनों द्वारा शांत करते। सभी साधु भी आपके दर्शनार्थ आये व कर बद्ध निवेदन किया कि आप अभी तो हमारे मध्य विराजमान रहें। आप ही तो एक समझदार व प्रेरणा देने वाले साधु हमारे मध्य थे। उनको भी आप अपने प्रेम वचनों द्वारा मना लिया करते व अपना वहीं निश्चय दोहराते कि अब मुझे तो श्री नाथजीमहाराज के चरणों में जाने दो। इस प्रकार आठ दस दिन में सब साधु सेवक आपके दर्शन कर गये। उस समय का आपका वह प्रेममय दिव्य स्वरुप हमें अहनिर्श सेवा आकृष्ट किये रहता था। परन्तु श्री नाथजी महाराज को यह अधिक मन्जूर नहीं था। श्रावण शुक्ला षष्ठ सम्वत् 2042 तदनुसार दिनांक 21 अगस्त 1985 को ब्रह्म मुहुर्त में साढे तीन बजे आपने मेरे हाथों से दो चममच जल पिया व हम सब की तरफ प्रेमपूर्ण दृष्टि से देखते हुए श्री

नाथजी महाराज के दिव्य चरणों में ध्यान लीन होकर अपना भैतिक शरीर छोड़ दिया। एक दिव्य मुस्कान आपके श्री मुख पर खिल उठी जो अन्तिम विदा समाधि तक वैसी की वैसी बनी रही।

जिस पंच भौतिक शरीर से हम प्रेरणा लेते, हंसते, खेलते, बोलते, ज्ञान चर्चाऐं किया करते व जिसकी बाल स्वभाव सरल, सरस, विशुद्ध विनोदशीलयुक्त, गम्भीर ज्ञान चेष्टाऐं देख देख कर आनन्दित हुआ करते, उल्लासित हुआ करते, पुल्लकित हुआ करते वह पंच भैतिक परम पवित्र शरीर हमारे हाथों में रह गया। हंसा दिवाने देश को प्रस्थान कर गया। हम उस शरीर को स्नान करा रहे है।, नये वस्त्र पहना रहे हैं, मन्दिर के पास विराजमान कर रहे हैं, असंख्य जनमानस अन्तिम दर्शन को उमड़ रहा है, चारों तरफ निःसान्ध शान्ति है, आपके मुख मण्डल पर अभूतपूर्व दिव्य मुस्कान देख कर लग रहा है कि आप अभी अभी कुछ ज्ञानोपदेश कहने ही वाले हैं। सैकड़ों साधु व एक लाख से भी उपर जनसमुदाय अपकी समाधि के समय उपस्थित था। शाम सवा पांच बजे उपस्थित जन समुदाय व साधु समाज ने आपको अश्रुपूरित विदाई देकर समाधि दी।

1 सितम्बर 1985 को ब्रह्मपूरी का आयोजन किया गया। इस ब्रह्मपूरी में बतीस धूणियों कि पीर महन्त योगेश्वर व उनके सेवक भक्त, फतेहपुर से महन्त श्री नरहरिनाथजी महाराज, महन्त अवैधनाथजी महाराज, अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय योगी अवधूत महासभा हरिद्वार, भूतपूर्व प्रधनमंत्री श्री चेताईनाथजी, आपके अभिन्न प्रेमी श्री खेतानाथजी महाराज, व अनेकों रमते घूमते योगेश्वर सम्मिलित हुए। हजारों सेवक भक्त इस अवसर पर उपस्थित थे। पूरे शहर के ब्राह्मण समाज को ब्रह्मपूरी में निमंत्रित किया गया। सुबह 'शंख ढाल' के बाद श्रद्धाञजली समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें महन्त श्री अवैद्यनाथ जी महाराज, श्री खेतानाथजी महाराज, श्री चेताईनाथजी महाराज व श्री बैजनाथजी ने आपको भावभिनी श्रद्धाञजली अर्पित की। महन्त श्री अवेद्धनाथजी महाराज ने अपने हृदयोगार प्रगट करते हुए कहा कि बाबा श्री श्रद्धानाथजी महाराज का भौतिक शरीर आज हमारे मध्य नहीं है, परन्तु योग साधना एवं आध्यत्मिक रहस्य समझाने का जो निरन्तर कार्य उन्होंने किया है वह आज भी उसी प्रकार जीवित है जिस प्रकार उनके जीवन काल में था। ऐसे महापुरुष कभी मरते नहीं हैं। उनके कार्य उनके उपदेश हमें उपकृत करते रहेंगे। नाथ सम्प्रदाय सारे भारत मे ही नहीं सारे विश्व में प्राचीन सम्प्रदायों में से एक है। अतीत में बहुत से महापुरुष मच्छेन्द्रनाथ जी, गोरखनाथजी, नवनाथ व अनेकों सिद्ध पुरुष इस सम्प्रदाय में हुए हैं। यह उज्जवल अतीत ही नहीं वरन् आधुनिक युग में जब दृष्टि डालते हैं तो हमारी दृष्टि बाबा श्रद्धानाथजी महाराज की तरफ जाती थी क्योंकि उन्होंने मच्छेन्द्रनाथजी, गोरखनाथजी,व नवनाथों आदि सिद्ध जो मार्ग दर्शन दे गये थे वास्तव में वे इस वर्तमान युग में उसका प्रतिनिधित्व कर रहे थे। वे एक साथ प्राचीन एवं आधुनिक युग दोनों में जीते थे।

कुछ लोग ही ऐसे हैं जिन्होंने अपनी योग साधाना द्वारा समाज को अपनी ओर आकृष्ट किया है। मुझे उनसे दो तीन बार यहां आकर सत्संग वार्तालाप करने का अवसर मिला। निश्चित रुप से बहुत उच्च स्तर के योग साधक थे। उन्होने योग साधना को नया आयाम दिया है। इस पवित्र भूमि में जिस तत्व का अनुभव व साक्षातकार बाबा श्री श्रद्धानाथजी ने किया है वह आज भी हमें उनकी याद रुप में सम्मुख नजर आ रहा है। यह उनकी तपस्या, त्याग व उपदेश का ही फल है कि आज वे इतने लोगों को आकृष्ट कर रहे हैं। ऐसी विभूतियां कभी मरती नहीं हैं। हजारो महापुरुषों को हम आज भी याद करते हैं क्योंकि उनके अनुभव उनके बताये गये रास्ते आज भी हमारे लिए उसी प्रकार उपयोगी हैं जिस प्रकार उस समय थे। बाबा श्री श्रद्धानाथजी महाराज के उपदेश भी इसी प्रकार आने वाले युगों में हमारा पथ प्रदर्शन करते रहेंगे। ऐसे महापुरुष कभी मरते नहीं हैं। वे आत्म स्वरुप में स्थित हो जाते हैं। उनका उपदेश सदा अमर रहता है। तत्व का विशलेषण जिस प्रकार से करते थे उस प्रकार हमारे विद्वान से विद्वान संत नहीं कर पाते हैं। आदि आदि।

तत्पश्चात श्री खेतानाथजी महाराज ने आपको रुंधे गले से श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हुए कहा कि उनका मेरे से बहुत वर्षों से स्नेह प्रेम व सहयोग रहा है। यह प्रेम बिन्दु का रुप धारण कर द्रवित होकर नेत्रों की तरफ दौड़ रहा है। बोलने में कुछ कठिनाई होती है। मेरी उनसे अनेकों बार ज्ञान चर्चा होती थी। जिस सरल भाषा में व अपनी गम्भीर से गम्भीर बात भी कह दिया करते थे। वह केवल मैंने उनकी ही विशेषता देखी है। श्री खेतानाथजी महाराज ने उदाहरण स्वरुप उनसे चार महावाक्यों के लक्ष्यार्थ पर चली ज्ञान चर्चा का उल्लेख किया। अत्यधिक भावुक होने के कारण व अधिक नहीं बोल सके। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री चेताईनाथजी ने भाव विहव्ल होर अपने उदगार प्रगट किये। उन्होने आपके प्रेम का विशेष उल्लेख किया। श्री बैजनाथजी ने आपको भावभीनी श्रद्धाञ्जली अर्पित की व आगुन्तक साधु समाज का अभिवादन किया। उन्होने जीवन के अनेक अछुते पहलुओं पर प्रकाश डाला व आपके आदर्शों पर चलने का संकल्प व्यक्त किया। तत्पश्चात प्रार्थना भवन में आपका चित्र स्थापित किया गया।

ब्रह्मपुरी में आस पास के गांवों, शहर व उपस्थित हजारों सेवक भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया। ब्रह्मपुरी का प्रसाद पूरे शहर स्कूलों व आस पास के गांवों में भी वितरीत किया गया। प्रत्यक्ष दर्शियों के अनुसार ऐसी विशाल ब्रह्मपुरी का आयोजन लक्ष्मणढ शहर बसने के बाद कभी भी इस शहर में नहीं हुआ। यहां पर सम्पन्न हुई अनेकों ब्रह्मपुरियों में यह ब्रह्मपुरी बेजोड़ है। ऐसा वयोवृद्धजनों का कहना था।

शाम चार बजे उपस्थित साधु समाज, मन्नाथी पंथ, बतीस धुणियों के पीर महन्तों एवं अखिल भरतवर्षीय योगी अवधुत महासभा की ओर से श्री बैजनाथजी को आपका योग्य उत्तराधिकारी स्वीकार कर चादर औढाई गई व श्री नाथजी महाराज का आश्रम लक्ष्मणगढ के पीर महन्त का पद प्रदान कर सम्मानित किया। उपस्थित सेवक भक्तों ने भी हर्ष से जयजय कार किया व चादर भेट प्रदान कर श्री बैजनाथजी को आपका उत्तराधिकारी मान का अपने आपको कृतार्थ महशूश किया।

वर्तमान में श्री बैजनाथजी कुशलता से आश्रम की पवित्र व्यवस्था का संचालन आपके आदर्शों एवं वचनानुसार कर रहे हैं। आपके समाधि मन्दिर का निर्माण भी यथाशिघ्र कर आपके चरणों में अर्पित करना वे अपना प्रथम कर्तव्य समझते हैं। शिघ्र ही शुभ्र संगमरमर से निर्मित भव्य समाधि मन्दिर समाज के सामने आपके दिव्य आध्यात्मिक प्रकाश सतंम्भ के रुप में निर्मित होगा ऐसी आशा व श्री नाथजी महाराज से कर बद्ध प्रार्थना है।

व्यक्तित्व एवं विशेषताः

अधिकांश संत महात्माओं के जीवनी लेखन में उनका जीवन वृतान्त , चमत्कार, विचार–उपदेश एवं वाणी का समावेश ही देखने को मिलता है। श्री बाबाजी महाराज के जीवन चरित में व्यक्तित्व एवं विशेषताओं का समावेश सोदेश्य किया जा रहा है। वे विश्षताऐं जो आत्मा को महात्मा सामान्य को विशिष्ठ बनाने के लिए परमावशयक है कम ही चर्चा में आती हैं। इनमें से कुछ विशेषताऐं तो इतनी सामान्य होती हैं कि अक्सर हम उनकी तरफ ध्यान ही नही देते हैं। परन्तु जब इन्हीं विशेषताओं का योगदान हम किसी महापुरुष के जीवन में परिव्याप्त महानता के सन्दर्भ में करते हैं या पाते हैं तो आश्चर्य होता है। जहां चमत्कारों का वर्णन ग्रन्थ को रोचक बनाने के साथ ही पाठक में श्रद्धा भाव उत्पन्न करता है। जहां विचार एवं उपदेश पाठक के ज्ञान पीपासा को शान्त करते हुए मार्ग दर्शन करते हैं ठीक उसी प्रकार महापुरुषों के जीवन में सन्निहित विशेषताऐं पाठक के व्यवहार में आमूलचूल परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करती हैं। यद्यपि सामान्य जीवन के लिए इन सभी विशेषताओं का अंगीकरण सम्भव नहीं हो पाता है। परन्तु इनमें से कुछेक का वरण भी यदि मानव कर पाता है तो समाज में वह एक सफल व्यक्ति समझा जाता है। यह भी नितान्त सत्य है कि महापुरुषों के व्यक्तित्व एवं विशेषताओं का विवेचन करना वैसे ही है जैसे अनतोले को तोलना। बहुधा महापुरुषों का जीवन चरित विलक्ष्ण घटनाओं से परिपूर्ण होता है जिनका तर्क सम्मत विवेचन नहीं किया जा सकता। उपरोक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुए भी यदि हम श्री बाबाजी महाराज के जीवनचरित का विवेचन करें तो अनेकों ऐसे मोती प्राप्त कर सकते हैं जो हमारे जीवन पथ को आलोकित कर हमें एक नयी दिशा, एक नया संदेश, व मार्गदर्शन दे सकते हैं।

श्री बाबाजी महाराज का जीवन चरित तो आदर्शों एवं मर्यादाओं का प्रकाश स्मम्भ है। उनका व्यक्तित्व इन आदर्शों एवं मर्यादाओं के कारण इतना मोहक , इतना भव्य बन पड़ा है कि उनके सामने आनेवाला दर्शनार्थी नतमस्तक हो जाता था। उनके पास बैठते ही आत्म विसमृत की सी दशा दर्शनार्थी की हो जाया करती थी। न कोई शंका रहती न ही कोई प्रश्न ही रहता। सब कुछ स्वतः ही समाधान हो जाया करता था। अनायास ही वे ऐसा प्रकरण प्रसंग प्रारत्भ कर देते कि समुपस्थित जन का यथामति समाधान हो जाता। दिल दिमाग को एक दिव्य शान्ति का अनुभव होता था। उनके सानिध्य में इसी शान्ति से अभिभूत करके उनका राज चलता था। दर्शनार्थी के मन बुद्धी विचारों पर। जब भी उनके चरणों में बैठता तो यही लगता कि उनके भावोद्गार किसी देवी सत्ता से स्वतः ही प्रस्फुटित हो रहे हैं। वे तो केवल माध्यम हैं। आपकी दिव्य वाणी ऐसी लगती मानों किसी पहाड़ी से निकल रहे झरने के सद्दश्य प्राप्त जनों की प्यास बुझा देती थी। यह आत्मा की आवाज होती थी जो श्रोता को अन्तर तक पकड़ लेती थी। आपकी सहज सरल सरस मृदुवाणी दर्शनार्थी के ह्रदय पर अपना अमिट प्रभाव अंकित कर देती थी। इस गम्भीर वाणी में अमृत वर्षा होती जिससे सुनकर सुनने वाला यही सोचता कि कहीं यह मधुर स्वर रुक न जावे। आपके कथनों में गुरु गम्भीरता के साथ स्मित हास्य एवं विनोदशीलता का अपूर्व सम्पट विद्यमान रहता था। आप अपनी इस अन्त को छू जाने वाली अमृतवाणी के द्वारा दर्शनार्थी को जिस भी रस में चाहते सरोबार कर दिया करते थे। कीसी ज्ञान की गम्भीर चर्चा में लगता मानो कही सुखद मेघ वर्षा हो रही है तो कभी दूसरे क्षण विनोद का ऐसा सम्पुट देते कि उपस्थित जन में हंसी का फवारा छूट जाता था। यह आपकी रस भरी वाणी सहज थी। कभी भी इसमे कृत्रिमता नहीं होती थी। दर्शनार्थी कहते कि बाबाजी महाराज की वाणी में वेद स्वयं बोलता है। नाना द्दष्टान्त देकर गुढतम ज्ञान को भी सरल से सरल भाषा में कह देना आपकी विशेषता थी। निर्थक या हल्का शब्द आप कभी नहीं उच्चारते थे। आप कहा करते इससे वाणी निस्सार हो जाती है। कभी भी किसी को कटु शब्द या अपशब्द नही बोलते थे। सामने वाले के स्वाभिमान का पोषण करती हुई आपकी निच्छल वाणी आपकी ही विशेषता रही है। सुन्दर सरल एवं सहज वाणी श्रंगार है मानव व्यवहार का, यह हमेने आप ही से सीखा है।

ज्ञान विज्ञान योगसाधना एवं विद्वता के क्षेत्र में निष्णात होते हुए भी आप इन सभी की व्याख्या सरतलता से समझ में आने वाली भाषा द्वारा ही किया करते थे। क्लिष्ट भाषा का प्रयोग न तो आप करते और न ही ऐसा करने की सलाह देते थे। सुस्पष्ट शब्दों में बेलाग बात कह देना आपके लिए सहज था। आध्यात्मिक संदेश आप वाणी के बजाय मौन से अधिक दिया करते थे। उच्च से उच्च शिक्षित विद्वान भी आपकी सरल सटीक युक्तियों के सम्मुख निरुत्तर हो जाया करता

था। आप एक जीवन मुक्त सिद्ध पुरुष थे जो हम अकिचनों के उद्धार हेतु इस धरा पर अवतरति हुए थे। आपकी विलक्षण स्मरण शक्ति अब भी लोगों के लिए कोतुहल का विषय है। एक बार देखे मिले व्यक्ति को आप कभी भी मिलता तो पहचान जाते। 20–25 वर्षों बाद भी कई व्यक्ति आपसे मिले तो आपने पहचान लिया। यह ही नहीं उनका नाम, गांव का नाम व घर का पूरा विवरण हूबहू बता देते व कोई विशेष घटना जो उस समय घटी हो तो जैसे का तैसा वर्णत कर देते थे। जब भी कोई दर्शनार्थी आपके सम्मुख होता तो उसका सम्पूर्ण जीवन चक्र , यथा भूत, वर्तमान तथा भविष्य एक साथ आपके सामने चलचित्र की भांति घूम जाता था। कितना अदभूत संयम था आपका अपने व्यवहार पर कि उस व्यक्ति विशेष के बारे में सब कुछ जानते हुए भी व्यवहार में यह तथ्य प्रकट नहीं होने देते थे।

व्यवहार में समता आपका एक अनुपम गुण था। आप कहा करते कि साधु को समता रखना चाहिए। गीता का यह श्लोक–

सुहान्मित्रार्युदासीन मध्यस्थ द्वष्य बन्धुषु।
साधुष्वपि च पापेसु सम बुद्धि र्विशिष्यते।।

आपका आदर्श था। समद्दष्टि एवं समवृति गुणों की आप बहुत ही सटीक व्याख्या किया करते थे। जो जैसा है उसे वैसी ही देखना व तदनरुप ही व्यवहार करना चाहिए। यह कथन था आपका, तो साथ में यह महावाक्य आत्मानुसर्वभुतेषु भी सदा आपके कथन व्यवहार में सन्निहित रहता। विचारों में आप गरीब–अमीर, ऊंच–नीच, जाति वर्ण का भेद भाव नहीं रखते थे। सबको उस परम पिता की सन्तान के रुप में देखते थे। न्याय पर बोलना, व निष्क्ष रहना आपका अब भी लोगों को याद आता है। अपने पराये, गरीब–अमीर, जाति वर्ण के भेदभाव आपके सामने नगण्य थे। जो सही बात लगती वह स्पष्ट शब्दों में कह दिया करते थे। आपकी बुद्धि इतनी प्रखर थी कि बोलने वाले के भावों में कपटता है या निष्कपटता यह तुरन्त पहचान लेते थे। कोई अपनी होशयारी से आप को ढग ले यह कभी सम्भव नहीं था। हां कभी कभी विचित्र लिलाऐं करने के लिए आप अपने आपको ठग भी लेने देते थे। जब हम पूछते कि आप तो सब अच्छी तरह जानते थे फिर ऐसा क्यों होने दिया तो कहते कि उसकी यही इच्छा थी इसलिए मैंने दखल नहीं दिया। सभी प्रकार की नितियों में निपुण थे आप। आपका सरल सरस कोमल ह्रदय निष्कपट व्यवहार, श्री नाथजी महाराज में अगाध प्रेम विश्वास कभी भी इन नितियों से प्रभावित नहीं होता था। साधुओं में ओलिया एवं ज्ञानी परमहंस दो प्रकार के महात्मा होते हैं। आप विचारों से ओलिया एवं व्यवहार में ज्ञानी परमहंस थे। हम बलिहारी हैं आपकी दिव्य सरलता, सहजता एवं निष्कपटता पर तो गोरवान्ति महशूश करते हैं आपकी सजगता पर। इन दोनों विशेषताओं के अदभुत संयोग थे आप। आप इतने सरल कि कोई भी नया

कार्य प्ररम्भ करते तो छोटे बड़े सभी से उस विषय पर सलाह मशविरा किया करते। इस विचार विमर्श में कभी विमर्श कर्ता को महशूश नहीं होने देते थे कि मैं आपके सामने क्या बोलूं। वह अपना ही विषय समझ कर बेबाक राय दे दिया करता था। हमें आश्चर्य होता था तब जब आप कल कया कार्य करना है इस विषय पर कारीगरों से ही नहीं कामगारों से भी चर्चा किया करते थे। आपके पास आकर कोई भी परायापन महशूश नहीं करता था। आपके आत्मिक प्रेम से वशीभूत हो सभी आपके चरणों में समर्पित हो जाते थे। सभी का विश्वास आपको सहज ही प्राप्त था। सभी आपके विश्वास पात्र थे।

प्रेमः– प्रेम स्वरुप ही थे श्री बाबाजी महाराज। प्रेम आपके जीवन की अलौकिक विशेषता रही है। अपने सम्पर्क सानिध्य में आने वाले को प्रेम का प्याला भर–भर का पिलाया है आपने। सरोबार थे हम सब आपके इस प्रेम में। एक बार मैंने आपसे प्रश्न किया था कि इस जीवन में सार बात क्या है? आप बोले इस जीवन मे सारभूत प्रेम ही है। जितनी भी सरलता नजर आ रही है वह इस प्रेम की ही है। जिस जीवन में प्रेम नहीं वह नीरस है, मरे हुए के समान है। प्रेम से ही ज्ञान ध्यान योग भजन सब होता है। प्रेम नहीं तो संसार में कुछ भी नहीं है। प्रेम ही जीवन का उल्लास है। आप कहा करते कि अपने आप से पम्रे करो प्रभु से प्रेम करो व सभी से प्रेम करो। इन तीनों ही अर्थों में उन्होंने प्रेम को पूर्णता प्रदान की। वस्तुतः उनका जीवन ही प्रेम का पयार्य बन गया था। आपका प्रेम दिव्य था। लौकिक प्रेम जिसके अन्तर्गत मोह ममता, चाहना, प्रतिदान, आदि सब आ जाते हैं, आपको छू तक भी गये थे। इनसे परे जो अलौकिक आत्मिक प्रेम है जिसमें कल्याण की उदात्त भावना के साथ आनन्द उल्लास का नूर चमकता रहता है, जो प्रतिदिन नहीं केवल आत्मानन्द का विषय है वही प्रेम आपके दिव्य शरीर से अहनिर्श निसृत होता रहता था। हाजर की हुज्जत नहीं , गया उसकी तलाश नहीं । अपना पराया छोटा बड़ा, अमीर गरीब, का जिसमें प्रश्न ही नहीं उठता वही दिव्य प्रेम आपके समीप रह कर अपनी विलक्षण लिलाऐं किया करता था। जहां संसार शब्द का प्रयोग होता है वहां उनका स्पष्ट कथन थाः–

संसार तो कर्मों की मारी आपके कर्मा न रोवे।
नाथ कहे रे बालका भक्त भजन क्यो खोवे।।

आपका प्रेम आत्मा का प्रेम था। यद्यपि शरीर प्रेम प्रदर्शन का माध्यम होता है तथा था भी। परन्तु आप देह भाव से उपर उढ कर आत्मा का आत्मा से प्रेम किया करते थे। सभी आत्माऐं एक ही हैं, इसलिए सभी से एक ही प्रेम किया जाता रहा। यह बात दूसरी है कि प्राप्त करने वालों ने इसे अपने दायरे में समेटने की कल्पना की हो। कविन्द्र रवीन्द्र के शब्दों में संसारे ते आरे जहारा है अर्थात हे प्रभो! इस संसार की उल्टी रीत है। जिसे प्रेम करते हैं वही बन्धन में डालता है। एक

तेरा ही प्रेम केवल ऐसा है जो इन बन्धनों से छुटकारा दिलाता है। यही छुटकारा दिलाने वाला प्रेम था आपका। एक युग पूर्व आपके प्रथम प्रेम में पल्लवीत होकर जब मैंने कलम सम्भाली थी तो ये भावोद्गार अनायास ही लिखे गये थे। मेरे एकाकी जीवन में प्रेम रस का प्रवाह स्वयं मेरे लिए एक आश्चर्य है । यथार्थ व्यवहारिकता में विश्वास करने वाला (मैं) अब प्रमे मार्ग में आवाहमान है तथा प्राणों के स्पन्दन से जो झंकार गुंजार उढ रही है वह ही इसे अधीर बना रही है। यह प्रेम अंकुर श्री गुरु महाराज की कृपा का फल है। अब तो यह अंकुर प्रस्फुटित होर सुनहले पौधे का स्वरुप ले रहा है। जब हृदय प्रेम विवश होकर नाच उठता है तो आनन्द का अजस्त्र श्रोत बह निकलता है। अभी नया है, इसलिए अभिव्यक्ति नहीं कर पा रहा है पर जब भी अकेला पाता है तो अथाह सागर के सदृश्य झिकोले मारता है। इस विश्व के हर कण से प्रेम स्वर लहरी उभर कर मदहोश सा बना रही है मुझे। न जाने कितनों को आपने यह प्रेम प्याला पिलाया। कृत–कृत्य हो गये वे सब जो आपकी इस प्रेम कृपा के पात्र बन सके। प्रेम दिल का विषय है शब्दों का नहीं।

जिहवा के तो दिल नहीं दिल के जिहवा नाहिं।
सतगुरु सच्चे प्रेम को समझत है दिल मांहि।

बालपन से ही आपके दिल में श्री नाथजी महाराज के प्रति अटूट श्रद्धा अगाध प्रेम व दृढ़ विश्वास था जो अन्तिम श्वांस तक बना रहा या यूं कहे कि दिन प्रतिदिन बढता ही गया तो और अधिक उपयुक्त होगा। ऐसा दृढ़ विश्वास कि जिस सता की हम प्रार्थना कर रहे हैं, क्या वह सता इस प्रार्थना को नही सुन रही है। वह सत्ता प्रत्यक्ष सुन रही है। वही सत्ता वर्षा बरसा रही है, आंधी चला रही है, फिर उद्वेगित होने की क्या क्या आवश्यकता है। वह स्वयं ही इसका निराकरण करेगी। कुछ व्यक्ति, सभी नहीं उद्वेगित हो उठे जिससे यह बुदाबांदी हुई। यदि सभी का दृढ निश्चय हों तो ऐसा हो ही नहीं सकता। प्रार्थना पर दृढ निश्चय होना चाहिए। जब प्रर्थना करने बैठ गये तो फिर चाहे आंधी आये या तूफान आये, वर्षात आये या अग्नि आये हम तो प्रार्थना करके ही उठेंगे। दृढ निश्चय का नाम ही भक्ति है, दृढ निश्चय का नाम ही योग है, प्रेम है व दृढ निश्चय ही साक्षात कल्याण है। इसलिए जब भी प्रर्थना करने बैठें चाहे कितनी भी विपति आये मुझे प्रार्थना करनी है। मेरा दृढ विश्वास है कि जहां दृढ निश्चय है वहां विपति आ ही नहीं सकती है। ये विपतिया तुम्हारे निश्चय को ही देखने आती हैं। मीरा में दृढ निश्चय था, प्रहलाद में दृढ निश्चय था। कितनी विपतियां आयी पर वे अपने निश्चय से नहीं डिगे। और यही उनकी भक्ति थी। इसलिए कभी भी अपना निश्चय नहीं छोड़ना चाहिए। निश्चय में ही शक्ति है। वह सब विपतियों का निराकरण कर देती है। (श्री बाबाजी महाराज द्वारा दिनांक 25.07.79 को शाम प्रार्थना बाद दिया गया उपदेश) इसी दृढ निश्चय का विवरण ही है आपका जीवन वृतान्त। श्री नाथजी महाराज के

चरणों में समर्पित थे आप। श्री अमृतनाथजी महाराज की चर्चा करते तो आपका हृदय प्रेम से गदगद हो जाया करता था तथा आंखों में आंसू रोके से नहीं रुकते थे। श्री नाथजी महाराज की चर्चा करने वाला उनके शरीर को देखा हुआ, उनके शरीर की सेवा करने वाले किसी सेवक का परिजन या उस स्थान के निवासी जिस स्थान पर कभी ही सही श्री अमृतनाथजी महाराज ने रमण भ्रमण किया था, जब आपके पास आते आपकी दशा देखते ही बनती थी। आप रोमांचित होकर एक विशेष ही प्रकार का प्रेम अपनत्व दर्शाते थे उससे। यह दृश्य देखकर दर्शकगण आत्मविभोर हो जाया करते थे। आपका श्री नाथजी महाराज के प्रति यह अनन्य भाव ही आपकी ऐसी विशेषता रही जो आपको निवर्तमान सभी साधुओं से विशेष सिद्ध करती रही। श्री नाथजी महाराज के प्रति आपके हृदयोद्गार सुनकर श्रोता श्रद्धा, प्रेम व विश्वास के अगाध सागर में निमग्न हो जाया करते थे। श्री नाथजी महाराज आपके लिए व्यक्ति विशेष नहीं उसी परत् सत्ता के स्वरुप थे। एक बार किसी ज्ञान चर्चा में यह प्रसंग बहुत ही सुन्दर ढंग से आपने समझाया था जो यहां पर प्रस्तुत हैः–

जब मैं गुरु बोल रहा हूँ तो अर्थ वही इश्वरीय सत्ता ही है। आप सौचते होंगे कि मैं बार–बार श्री नाथ जी महाराज का ही नाम क्यो लेता हूँ। आप समझो मैं उसी परम सत्ता को ही बोल रहा हूँ। उसे कोई राम कहता है, कोई कृष्ण कहता है, कोई नाथजी कहता है कोई गुरु कहता है। बात एक ही है। यहां अगर कोई मुसलमान बैठा है तो वह कहेगा कि आप अल्ला का नाम तो नहीं लेते। परन्तु उसे मान लेना चाहिए कि मैं अल्ला का ही नाम ले रहा हूँ। किसी के दिल में श्यामजी के प्रति भाव है तो वह उन्हीं में आस्था रखता है व उन्हीं का नाम लेगा। लेकिन हमें यह मानना चाहिए कि वह उसी परम सत्ता को ही याद कर रहा है। जितने भी महापुरुष हुए हैं उन्होने उसी परमात्मा को ही इंगित किया है चाहे नाम रुप कुछ भी बताया है। जिन्होने उस सत्ता का नाम नहीं लिया आज उसका कोई नाम नहीं है। हमारे यहां प्रेमा कामड़ आता है तो मैं उसे कह देता हूँ कि जा रामदेवजी का नमस्कार कर आ। यदि मैं कहूँ कि रामदेवजी कौन थे, क्या थे तो उसे दुःख होगा। रामदेवजी भी उसी सत्ता का नाम लेकर इस पृथ्वी पर आये होंगे। उस सत्ता से हट कर तो नहीं थे।

सदगुरुवचन विशवास एवं आज्ञापालन आपकी अनुचम विशेषता रही है। गुरु के वचनों को आपने कभी नहीं टाला। उनका अक्षरशः पालन अन्तिम सत्य मानकर करते थे। आपके गुरु महाराज श्री शुभनाथजी महाराज व उपदेश गुरु श्री नवनाथजी महाराज दोनों ही पहुचे हुए सिद्ध पुरुष थे। दोनों ही महापुरुषों की कठीन परीक्षाऐं जो समय समय पर आपने सफलता पुर्वक उतीर्ण की, उनकी यशोगाथा आज भी पुराने सेवकों से आदर्श चर्चा के रुप में सुनने को मिलती है। उनके सामयिक साधु सेवक बताते हैं कि इन दोनों ही महात्माओं की परीक्षाऐं अत्यन्त कठीन हुआ करती थी।

जिसमें केवल आपने ही सफलता प्राप्त कर दोनों ही महापुरुषों का कृपा वचन प्राप्त किया। उनकी नित्य की उठापटक सहन करना आपकी सहन शक्ति धैर्य एवं गुरु महिमा का अनुपम उदाहरण है। श्री शुभनाथजी महाराज ने प्रसन्न हो कर कहा था कि केवल श्रद्धानाथ ही गुरु लक्ष्य को लक्ष्य समझता है। दोनों महापुरुषों के वचनों का पालन आपने जीवन पर्यन्त किया तथा सदा ही अपने जीवन को उनके श्री चरणों में समर्पित रखते हुए उन्हीं की कृपा का फल बताते हुए व्यतीत किया।

इसके साथ ही आपकी एक अनुपम विशेषता जो अनायास ही मन को आकृष्ट कर लेती है, वह है आपका विशाल सत्संग लाभ। अल्प आयु में ही आपके विलक्ष्ण जीवन का परिचय विभन्न घटनाओं द्वारा मिलना प्ररम्भ हो गया था। बालपन से ही आपकी साधु संतों पर असीम श्रद्धा थी। इसी श्रद्धा बीज से ही उत्तरोत्तर जीवन में 'नाथ' फल की प्राप्ति हुई। अल्पआयु में ही देशकाल के सुप्रसिद्ध महात्माओं का सानिध्य सत्संग लाभ प्राप्त कर लेना आपकी अनुपम उपलब्धि रही है। यह वह समय था जब शेखावाटी आंचल में विलक्षण अवधूत श्री अमृतनाथजी महाराज ने अपनी विलक्ष्ण लीलाओं को समाप्त कर शरीर त्याग दिया था। जनमानस में उनकी याद तरोताजा थी। श्री अमृतनाथजी महाराज के कृपा कटाक्ष से अनेकों जीवन मुक्त महारुपुष इस आंचल में अवतरित हुए। उनमें श्री ज्योतिनाथजी महाराज, श्री शुभनाथजी महाराज, श्री हनुमाननाथजी महाराज, श्री भूरनाथजी महाराज, श्री गोविन्दनाथजी महाराज, श्री कूमनाथजी महाराज, आदि प्रमुख हैं। शेखावटी की कण कण इन महापुरुषों के चरणों से पवित्र एवं अणु अणु में इन संत महात्माओं की महिमा व्याप्त है। सचमुच उस समय शेखावाटी आंचल में साधुओं की पवित्र गंगा प्रवाहित हो रही थी जिसके आगे चल कर आप भी एक अभिन्न अंग बन गये। इस अमृत लहर से इस क्षेत्र के लाखों लोगों ने शान्ति एवं आनन्द को अनुभव किया। आपने इन सभी संत महात्माओं का सत्संग किया व विशेष कृपा एवं प्रेम प्राप्त किया। इन सभी का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव आपके जीवन पर पड़ा जिसका विवेचन पूर्व में हम प्रसंगवश कर आये हैं। भ्रमण यात्राओं में अनेकों गुप्त प्रगट सिद्ध महात्माओ का दर्शन व सत्संग लाभ आपको प्राप्त हुआ। भारतवर्ष के किसी भाग में शायद ही कोई ऐसा सुप्रसिद्ध सिद्ध संत महात्मा रहा हो जिससे आपने दर्शन मेला न किया हो। जिस किसी भी साधु के बारे में सुनते वहां सत्संगार्थ अवश्य ही जाते। जहा एक तरफ हिमालय की तलहटी में गुप्त महात्माओं का सत्संग आपको सुलभ हुआ वहां सुदूर दक्षिण की देवी कन्याकुमारी के प्रत्यक्ष दर्शन को अहोभाग्य भी आपको प्राप्त हुआ। हरिद्वार, ऋषिकेश, मथुरा, वृदन्दावन व चारों धामों में निवासित सभी संत महात्माओं से आपका व्यक्तिगत सम्पर्क व प्रेम आपकी विशाल सत्संग का ही द्योतक है। एक विशेषता यह भी रही के आप जिस किसी भी संत महात्मा के सम्पर्क में आये, उनके पास जो भी ऐलम था उसे आपने अनायास ही ग्रहण किया। यह भी नितान्त सत्य हे कि इन महापुरुषों ने

आपको योग्य पात्र जानकर अपने कृपा कटाक्ष से अवश्य ही कृतार्थ किया। सम्प्रदाय विशेष की सीमाओं का बन्धन आपके लिए कभी बाधा नहीं बना। आप सभी सम्प्रदायों को समान दृष्टि से देखते थे। इसलिए सभी सम्प्रदायों ने आपको केवन नाथ सम्प्रदाय का ही नहीं वरन् भारत का एक प्रबुद्ध मनिषी स्वीकार किया है। सभी आपको आदर सम्मान की भावना से देखते हैं। भारत के संघर्षरत सम्प्रदायों में यह अनुपम उपलब्धि बहुत कम को ही नसीब होती है।

आश्रम की विधिवत स्थापना हो जाने के बाद एक अदभुत दृश्य देखने को मिला। भारत के सभी कोनों से अनेकाअनेक विरक्त संत महात्मा, मुमुक्ष साधक, भक्त आदि का आपके सत्संग दर्शनार्थ आश्रम की पवित्र भूमि पर पहुंच कर आपना अहोभाग्य समझते रहे हैं। इनमें से कुछेक का विवरण हम पूर्व में दे आये हैं। आपके शुद्ध प्रेम व मृदु व्यवहार से जहां संत महात्मा अपने गुढत्तम अनुभवों पर सही की छाप लगवाने व सत्संगार्थ आते वहां मुमक्ष साधकगण या तो आगे का मार्ग पूछने या अपने साधना मार्ग में आयी कठिनाइयों के निराकरण हेतु आपके पास आते रहते थे। आप सरल एवं सरस भाषा में उनका समाधान किया करते। कितने ही साधक आपके सानिध्य में आकर अपार आनन्द व शान्ति प्राप्त कर अपने साथ एक नई शक्ति, स्फूर्ति एवं दिशा लकर जाते थे।

रमण भ्रमण एवं लोक शिक्षाः–दीक्षा संस्कार के बाद आप दो युग तक रमण भ्रमण पर ही रहे। दीक्षा संस्कार से पूर्व भी आपने खेत में रहते हुए कुछ तीर्थ यात्रायें एवं रमण भ्रमण किया था। परन्तु अधिकांश समय खेत में रहकर साधना में ही व्यतीत करते थे। दीक्षा संसकार के पश्चात दो युगों तक अनिकेतन भ्रमण व तीर्थ यात्राओं का उपलब्ध विवरण आपकी जीवनी में दे आये हैं। यहां केवल इस रमण भ्रमण काल की विशेषताओं का एवं उपलब्धियों का ही उल्लेख कर रहे हैं।

शेखावाटी आंचल के गांव–गांव, ढाणी–ढाणी, तक पहुंचकर आपने अपने उपदेशों एवं आदर्शों को समाज के सामने प्रस्तुत किया व हजारों नवयुवकों को शिक्षा देका सन्मार्ग पर अग्रसर किया। इस समय तक पाश्चात्य सभ्यता का कुप्रभाव हमारे भारतीय जनमानस पर पड़ने लग गया था। शिक्षा का प्रचलन भी प्रारम्भिक अवस्था में ही था। पढे–लिखे शीघ्र ही पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर प्राचीन भरतीय संस्कृति की बिना सोचे समझे ही आलोचना कर अन्य लोगों को भी गुमराह कर रहे थे। आपने इस विषम परिस्थिति को समझा व गांवों की व्यथा मिटाने के लिए रमन–घूमना प्रारम्भ किया। आपकी इस स्थिति से निपटने की विधि निराली ही थी। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों तरह से आपने इस विषम परिस्थिति पर प्रहार किये। प्रथम तो आपने भारतीय संस्कृति के महान आदर्शों को पुर्ण रुपेण अपने जीवन में आत्मसात कर अपने जीवन को ही सामने आदर्श रुप में प्रस्तुत किया व दूसरा इन नव शिक्षित वर्ग को अपनी ज्ञान विचारधाराओं द्वारा प्रभावित कर उनमें सुन्दर संस्कार उत्पन्न करते हुए आध्यात्मिकता की ओर आकृष्ट किया। आप

इन भ्रमण यात्राओं में सदैव त्याग एवं तप का ही जीवन व्यतीत करते। खान–पान अत्यन्त सादा सरल अपनाया तथा धूम्रपान, मद्यपान व अन्य सभी प्रकार की नशीली वस्तुओं के सेवन का परित्याग करते हुए समाज में इनके बहिष्कार का अलख जगाया। अनेकाअनेक ऐसे नवयुवक तैयार किये जो सभी प्रकार के नशों एवं अभक्ष्य पदार्थों के सेवन से परहेज रखते हैं। परिवारों में जो विग्रह के भाव पैदा होने लग गया था उसे कम करने के लिए आपने अपनी शिक्षाओं में माता–पिता की सेवा व कुटुम्ब भावना को विशेष महत्व दिया। चरित्र निर्माण आपकी प्रमुख शिक्षा रही व हजारों सच्चरित्र नवयुवकों का निर्माण आपकी इस पतनोंन्मुख समाज के लिए वरदान साबित हुआ। भरतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिकता की इस आंचल के जनमानस में पुर्नस्थापना आपकी अनुपम विशेषता ही रही है। आपके उपदेश सरल, सरस एवं व्यवहारिक हुआ करते थे। सामान्यजन इन्हें तुन्त ग्रहण कर लिया करता था। इन सरल उपदेशों एवं आदर्शवाद के साथ आपका प्रेम वितरण, मृदुव्यहार, गहन सामाजिक अध्ययन व मनो विश्लेषणात्मक का ऐसा संयोग बन गया कि जनमानस आपकी तरफ आकृष्ट होने लगा। आपका देश प्रेम व भारतीय सुस्कृति के प्रति अगाध श्रद्धा सदा ही नवयुवकों के लिए प्रेरणा का श्रोत रही है। शेखावाटी आंचल में साधु–सेवा की भाना पुनः प्रबल रुप में, आपके ही जनमानस पर अमिट प्रभाव के कारण देखने को मिल रही है। आज इस क्षेत्र के जनमानस में साधु एवं साधुता के प्रति, विश्वास बहुत कुछ इसलिए भी है क्योंकि सभी लोगों का आप में अमिट विश्वास है।

इस रमण भ्रमण की विशेषताओं की चर्चा जब भी आपसे चलती तो ये तीन बातें अवश्य ही बतलाते थे। 1. सदगुरु वचन विश्वास एवं आज्ञा पालन । 2. ईष्टदेव की नित्य नियम से प्रार्थना एवं पूजा। व 3. सबसे प्रेम करना व सद्मार्ग की प्रेरणा देना। विचार कर देखने पर ये सामान्य सी लगने वाली बातें ही महानता की ओर ले जाने वाली हैं। सच है– बात रह्यां। बात है। बात समझ्यां बात है।। बात का सार बात है।।।

भरतीय संस्कृति के पोषक एवं संवर्धक होते हुए भी आप वर्तमान युग की वैज्ञानिक प्रगति के भी उतने ही हिमायती थे। वस्तुतः आप एक अदभूत संयोग थे। प्राचीन एवं अर्वाचीन युग के। दोनों ही विचारधाराओं का पूर्ण समन्वय था आपके जीवन चरित में। दोनों ही युगों में एक साथ जीते थे आप। आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से जहां आप गोरक्षनाथजी के समकालीन सिद्ध होते वहां पर भौतिक दृष्टिकोण से वर्तमान के अगुआ थे। कोई भी विचारधरा जो सर्वहितकारी होती आपको सदैव ग्राह्य थी। आपका उन्नत मस्तिष्क नवविचारों के लिए सदैव खुला रहता था। रुढ़िवाद के स्थान पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हर बात को देखना आपकी अनुपम विशेषता रही है। इस विषय में एक अखबार नबीस को आप द्वारा दी गयी हिदायतें मैं यहा प्रस्तुत कर रहा हूँ।

आपने कहा, "आजकल चटक मटक वाले अखबारों की ज्यादा पुछ है। मैं अखबार पढता तो नहीं परन्तु लोगों से सुनता रहता हूँ। आप अपने अखबार में ये बाते लिखा करो कि हम पश्चिम से ज्ञान–विज्ञान तो लें, धन भी यदि कमा कर ला सकें तो लावें पर वहां का आचरण हमारे भारत में न लावें। इससे सब गड़बड़ हो रहा है।" इस पर पत्रकार महोदय ने स्पष्ट करना चाहा कि हम वहां की संस्कृति न लावें। आपने पुनः संशोधन किया कि संस्कृति में जो भी अच्छाइयां है उन्हें ग्रहण करें पर उनका आचरण हमारे समाज के लिए सर्वथा घातक है, उसे न लावें। आध्यात्मिक साधना के साथ–साथ भौतिक सम्पन्नता भी समाज में फले फूले यही आपका संदेश होता था नवयुवकों के प्रति। आपने अपने सम्पूर्ण जीवन में कभी भी किसी कामचोर या कर्महीन व्यक्ति को अपने सम्पर्क में नहीं रखा। यदि कोई इस प्रकार का व्यक्ति किसी के साथ आ भी जाता तो आप उसे काम कर कमाने का उपदेश ही देते। आप कहा रकते थे कि "मुझे ठाला (खाली) आदमी नहींसुहाता है।" यही कारण है कि आपके हजारों सेवकों में से एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो ठाला भूला हो। कर्तव्य पालन में निष्ठा एवं ईमानदारी रखनी चाहिए यह आपका मुख्य ाद्धिान्त था। जिसका पालन आपका हरसेवक भक्त अनिवर्यतः करता है। जो भी सेवक इस क्षेत्र में पिछड़ जाता वह फिर आपके सामने आने से कतराने लग जाता था। आपके सम्पर्क में आने व रहने की यह एक अनिवार्य शर्त रही है। इस उच्च आदर्श का पालन करते हुए आपके हजारों सेवक आज भी समाज के सामने एक आदर्श हैं।

त्याग एवं तपस्याः– त्याग अध्यात्मिकता का सरताज एवं साधु जीवन का आभूषण है। त्याग के क्षेत्र में आप वर्तमान युग में एक देदिप्यमान नक्षत्र थे। आपकी इस त्याग व ृति से प्रसन्न होकर आपके पूज्य गुरु महाराज श्री शुभनाथजी महाराज ने एक बार कहा था कि "मैं आज खुश हूँ कि मेरा एक चेला त्यागी है जिसकी किसी वस्तु में इच्छा नहीं है।" आप वस्तुतः एक जीवन मुक्त निर्लिप्त त्यागी महात्मा थे। त्याग का सम्बनध होता है तन, मन, विचारों से। आप तीनों ही अर्थों में पूर्ण त्यागी थे। बचपन में ही ग्रह त्याग, रमण भ्रमण, काल में सब सुख सुविधाओं का त्याग यथा आपने जीवन पर्यन्त एक सूति चादर, तहमद एवं कोपीन धारण की, कभी पैरों में जुती नहीं पहनी, रुपया पैसा रखना तो दूर कभी हाथ से छूते भी नहीं थे, कभी किसी से भेंट नहीं ली, सादा खाना जो सरलता से गरीब को भी मयस्सर होता है वही अपना आहार रखा। सर्दियों में एक कम्बल ओढ कर ही रात निकाल देते, कभी किसी से कुछ भी मांगा नहीं, कभी किसी के घर रात्री विश्राम नहीं किया, गांव के बाहर स्थित स्कूल या धर्मशाला में रुकते या फिर जंगल में चले जाते थे। परन्तु इसे ही त्याग बता कर मौन हो जाता हूँ तो मानो मैंने केवल आपके बाह्य वस्त्रों का ही विवेचन किया है। भैतिक आवश्यकताओं को सिमित कर आवश्यक आवश्यकताओं का त्याग भी त्याग ही है।

भौतिक आवश्यकताऐं चाहे जितनी कम की जा सकती हैं। अतः त्याग की सीमा निधारर्ण करना कोई आसान काम नहीं है। परन्तु भौतिक त्याग भी आडम्बर मात्र ही होगा यदि ये सब त्याग मन विचारों द्वार न हों। त्याग संतोष का विषय है। पदार्थ का त्याग नहीं वरन् पदार्थ के प्रति जो हमारी ईच्छा अपेक्षा है, उसका त्याग ही सच्चा त्याग है। यही नहीं श्री बाबाजी महाराज के वचनों में त्याग का भी त्याग कर देना चाहिए। साधु के लिए अंहकार का त्याग ही सच्चा त्याग है। त्याग केवल त्याग के लिए ही। कोई भी प्रतिफल की इच्छा न रहे। निर्लिप्त जीवन यापन ही त्याग की सर्वोच्च कसोटी है।

जब त्याग की इन परिभाषाओं के आधार पर श्री बाबाजी महाराज के समग्र जीवन का सिहांवलोकन करते हैं तो हमें एक भव्य स्वरुप द्दष्टिगोचर होता है जिसके सामने हम नत मस्तक हो जाते हैं। त्याग की सीमा से अधिक त्यागी थे आप। आश्रम स्थापना से पूर्व का आपका अनिकेत भ्रमणकाल, श्री नवनाथजी महाराज द्वारा छोड़ी गयी अतुल सम्पति का त्याग जहां समाज के सामने स्वतः ही उजागर है वहां आश्रम स्थापना के बाद आपका त्यागी शिरोमणि स्वरुप हमें और भी अधिक प्रेरणादायक लगता है। पूर्व के त्याग में निहित भावना का अध्ययन हमारे लिए सम्भव नहीं हो पाता यदि हमने बाद का आपका निर्लिप्त त्यागी रुप न देखा हाता तो। श्री नाथजी महाराज का आश्रम लक्ष्मणगढ एक आधुनिक सुख सुविधाओं सम्पन्न पवित्र आश्रम है। इस आश्रम में आप एक युग तक आसीन रहे। यह शंका स्वाभिक ही खड़ी होती है कि फिर आपका पूर्व त्यागी स्वरुप कहां रहा। सर्वप्रथम तो आश्रम का निर्माण करना ही त्याग से च्युत हो जाना है। परन्तु जिन्होंने आपको करीब से देखा है वे जानते हैं के यह आश्रम निमार्ण आपके त्याग एवं श्री गुरुमहाराज की कृपा का फल है। यह युग आपके त्याग का राजकाल है। में पूर्व में भी इंगित कर आया हूँ कि भौतिक वस्तुओं का त्याग ही केवल त्याग नहीं है। त्याग भावना का खेल है। अलिप्त भावना से किया गया कार्य भी त्याग की श्रेणी में आ जाता है तो लिप्त रह कर किया त्याग त्याग नहीं रहता है। इसलिए कहा गया है कि अंहकार का त्याग ही सच्चा त्याग है। जो हमारा है ही नहीं, उसका कैसा त्याग। वह तो भ्रम मात्र है। हमारा केवल अंहकार मात्र है जिसका त्याग कर देने पर सब स्वतः ही त्याग हो जाता है। ये भाव– "मैंने समस्त कामनाओं का त्याग कर दिया है। देहात्म भाव को त्याग कर मैं अपरिच्छन अव्यक्त परम तत्व में स्थित हूँ। उसी से कान्तियुक्त हूँ।भुक्त भोगों के समान ही मैं प्रभुक्त भोगों से भी संतुष्ट हूँ। न मैं क्रोध करता हूँ न मैं हर्षित होता हूँ, न असंतुष्ट होता हूँ। मान–सम्मान भोगादि की प्राप्ति से न मुझे हर्ष होता है और नाहीं उसकी अप्राप्ति से खेद। मैं सुख नहीं चाहता, अर्थ नहीं चाहता अनर्थ का परिहार नहीं चाहता, प्रारब्ध से प्राप्त स्थिति में सदा संतुष्ट रहता हूँ। राग–द्वेष रहित होकर मैं समझ चूका हूँ कि निखिल विश्व में व्याप्त चराचर की

नियमिका शक्ति मेरा स्वरुप है"—अनवरत त्यागी के हृदय प्रदेश में गुंजायमान होता रहता है। श्री बाबाजी महाराज इसी श्रेणी के त्यागी थे। इस संदर्भ में आप द्वारा किसी जिज्ञासु की शंका कि दृश्यमान जगत को नाशवान क्यों मानते हैं, के समाधान मे दिया गया यह दृष्टान्त हमें आपके विचारों का सही चित्र पेश करता है। आप समझा रहे थे कि दृश्यमान जग इसलिए नाशवान कहा गया है कि समय पाकर सब दृष्टिगोचर पदार्थ नाश को प्राप्त हो जावेगा। यहां की कोई भी वस्तु स्थायी नहीं है। सब परिवर्तनशील एवं अन्ततोगतवा नाशवान हैं। इसलिए महावाक्य 'ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या' महापुरुषों ने कहा है। प्रश्नकर्ता के संशय को देखकर आपने आगे कहा कि आपको यह संशय हो रहा है कि संसार मिथ्या है तो फिर आपने यह आश्रम आदि आडम्बर क्यों बनाया? लेकिन जरा विचार कर देखो कि ये तख्ता है, यह तकिया है, यह डिब्बा है, सब मिथ्या, सब आडम्बर है तो इनको छोड़ का स्टेशन चले जाना चाहिए। क्या स्टेशन तो सच्चा है? स्टेशन भी मिथ्या है तो बजार चले जाओ लेकिन भाई बाजार भी तो ऐसा ही है। इस तरह कहीं भी रहो नाशवान पदार्थों का सहारा तो लेना ही पड़ेगा फिर यह सब ही क्या बाधा देता है। यह शरीर जिसको हमने धारण कर रखा है यह ही मिथ्या है तो इसको लेकर जहां भी जग में रहेंगे मिथ्या का सहारा तो लेना ही पड़ेगा। फिर इसे क्यों छोड़े? हां यह अन्तर अवश्य है कि आप जिस संसार को सत्य मानते हैं उसे मैं असत्य मानता हूँ। इस तख्त, तकिया, मकान सभी को झूठा समझता हूँ। सत्य केवन उस परम पिता परमेश्वर को ही मानता हूँ। आप लोग जिसको सत्य समझते हो वह असत्य व जिसको सत्य समझते हो वह सत्य है। लाखों करोड़ों में जिस किसी को इस सत् असत् का ज्ञान हो जाता है वह राजा जनक की भांति इस नाश्वान संसार में रहते हुए भी लिप्त नहीं होता हैं सब कुछ करते हुए भी ज्ञान की दृष्टि से कुछ भी नहीं करता है। सत् एवं असत् का विवेचन कर लेना ही ज्ञान है।"

आपने आश्रम को मेरा है मैने बनाया है नहीं कहा। सदा ही इस आश्रम को श्री नाथजी महाराज की कृपा का फल बताया व अपने आपको निमित मात्र ही मानते रहे। आश्रम सम्पति में कहां आप तो शरीर के विषय में कहा करते थे, बेटा तूं इस शरीर को मान रहा है जबकि मैं इसे नहीं मान रहा। यह भांडा तो विकार है। तेरी इसमें आस्था है। मेरी इसमें कोई आस्था नहीं है। जो कुछ भी हो रहा है इस शरीर द्वारा स्वाभवतः ही हो रहा हैं जो गुण दोष हैं वे इस भांडे के हैं। मैं उनसे अप्रभावित रहता हूँ। इन गुण दोष व होने न होने में मेरी न तो आस्था है व न ही अनास्था है। इस शरीर दृष्टि से उठकर आत्म तत्व की खोज करनी चाहिए। यह शरीर का अड़बड़ाहट तो आकार का विकार है। तूं आकार के के विकार की तरफ देखता ही क्यों है? धीरे धीरे अभ्यास द्वारा

इन खड़बड़ाहटों को उपेक्षित कर दो । जब चित शान्त हो, मन का वेग थम चूका हो तो समझ गुरु कृपा तो है ही।"

आप त्याग को सर्वोपरी मानते थे। आप कहा करते थे कि मैं ज्ञानी, ध्यानी व योगी को देखकर उतना प्रसन्न नहीं होता जितना त्यागी को देख कर। ज्ञानी लोंग प्रवचन व माया में ही उलझ जाते हैं। योगी क्रियाओं में फंसे रहते हैं। ध्यान भी एक प्रकार का मानसिक भोग ही है। नाद सुनना, प्रकाश देखना यह सब तो वैसें ही हैं जैसे छोटे बच्चे को झुन्झुनियां देकर रोते हुए से शान्त कर देना। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि त्यागी ज्ञान, ध्यान, योग भजन नहीं करता। वह भी हर पल ध्यान रखता है, हर श्वांस में योग करता है। लेकिन उसके और इनके ध्यान में भेद है। त्याग वैराग्य एक ही है। त्याग वैराग्य से ही प्रभु के प्रति अनुराग पैदा होता है। जब तक त्याग वैराग्य न हो यह माया चक्र छोड़ता नहीं है। त्याग, वैराग्य रहित ज्ञान, ध्यान, योग सब व्यर्थ हैं। यदि त्याग वैराग्य है ज्ञान, ध्यान, योग, भजन सब स्वतः ही सिद्ध हो जाते हैं। त्याग वैराग्य रहित ज्ञानी, ध्यानी, योगी माया में रह जाते हैं। ज्ञानी, ध्यानी, योगी को पैसे वालों के पास हाथ पसारते देखा है। परन्तु त्यागी ऐसा नहीं करता। त्यागी किसी की भी परवाह नहीं करता। त्यागी की हिफाजन स्वयं मालिक करता है।

आप तपस्या करने जंगलो में नहीं गये। यह त्याग ही आपकी तपस्या थी। आपने अनेक साधानाऐं की एवं मनविचारों व शरीर को त्याग संतोष से ओत प्रोत कर यह तपोमय जीवन इस समाज में रह कर ही निर्वाह किया। आपके लिए तप का अर्थ आत्म पीड़न नहीं बल्कि त्याग संतोष सहित साधना में अनवरत लगे रह कर कष्ट सहिषुणता रहा है। आपने अपने अहम को तपाकर गलाकर श्री नाथजी महाराज के पावन चरणों में समर्पित कर दिया यही आपकी सर्वोपरी तपस्या रही है।

आनन्द चित रहनाः– श्री बाबाजी महाराज की यह विशेषता ही रही है कि आप हर समय प्रसन्नचित रहते थै किसी भी समय किसी भी स्थिति में आपके पास जाते तो आपको उसी ज्ञान गम्भीर आनन्द मुद्रा में बैठे पाते। इस सहज आनन्द एवं आपके अलौकिक प्रेम प्रभा का ऐस प्रभाव पड़ता था आगन्तुक के दिल दिमाग पर कि वह 'स्व' को भूल कर केवल शान्ति एवं आनन्द में निमग्न हो जाया करता था। यह दिव्य शन्ति प्रेम व आनन्द की त्रिधारा आपके विभा मण्डल से अनवरत निसृत होती रहती थी। शरीर से संसार व्यवहार में रह कर बोलते, हंसते, चलते, खाते–पीते, उठते–बैठते व सोते समय भी आप कहीं और ही रहा करते थे। इस विषय में मेरी एक बार आपसे जो वार्ता हुई वह यहां प्रस्तुत है–

मैं– महाराज! मानव जीवन का लक्ष्य क्या है?

महाराज– यह तूं स्वयं खोज! तूं बता मैं कहां रहता हूँ? यदि तूं ही न बता सकेगा तो फिर कोई भी नहीं बता सकेगा। क्या मेरी मकान में आस्था है? मैं– नहीं।

महाराज – क्या रुपये पैसे में आस्था है? मैं– नहीं

महाराज– क्या भोगों में आस्था है? मैं– नहीं

महाराज– क्या पूजने की ईच्छा है? मैं– नहीं

महाराज– क्या संसार में यश अर्जित करने में है?

मैं– नहीं यह भी नही है। जो कुछ भी हो रहा है वह अनायास ही हो रहा है। हो रहा है इससे भी आप प्रभावित उद्वेगित नहीं होते हैं। सब स्वतः ही प्रभू पेरणा से हो रहा है।

महाराज– तो फिर बता मैं कहां रहता हूँ? या यह कहदे कि दिन भर यूं ही लोक व्यवहार में समय व्यतीत कर देते हैं।

मैं– नहीं यह भी नहीं है। लोक व्यवहार पूर्ण रुप से निभाते हुए भी आप इससे अलग रहते हैं, ऐसा तो मुझे महशूश होता है। जैसे कई मां बहिने हाथ से काम भी करती रहती हैं व दूसरों के साथ वार्तालाप भी करती रहती हैं।

महाराज– फिर यह कहदे कि आप यू ही सुन्न में बैठे रहते हैं

मैं– नहीं यह बात भी नहीं है। आन्नद रहित सुन्न में रहना असम्भव है।हां आप जहां भी रहते हैं वहां द्तचित रहते हैं, आनन्द एवं सतुष्टि की परम प्रकाष्टा पर रहते हैं। परन्तु महाराज वह अवलम्ब क्या है जिस पर आप रहते हैं।

महाराज– वह तो वहां पहुंच कर अनुभव करने पर बताया जा सकता है। कह नहीं सकता वह क्या है? अवलम्ब या निरालम्ब है। परन्तु यह निश्चय है कि जो भी द्दश्यमान जगत है इसमें आपकी आस्था रति भर भी नहीं है। लोक व्यवहार में सब हो रहा है पर आप तो अन्यत्र ही विराजमान रहते हैं। यह अन्यत्र आपकी कृपा से ही जाना जा सकता है।

महाराज– बेटा यह जान गया तो समझना सब कुछ जान गया। अन्यथा तो बाहर के व्यवहार ही पकड़ कर नकल करेगा। बाबाजी इस तरह करते थे उस तरह करते थे। वह असली बात नहीं है पकड़ पाने के कारण इन बाह्य व्यवहारों को ही सत्य मान कर अनुसरण करेगा। इतना मैं अवश्य कह दूं कि उस स्थिति में इतना आनन्दोल्लास है कि शरीर में नहीं समाता है। यदि एक बार भी तुझे वह नसीब हो जावे तो तुं उसे जीवन भर नहीं छोड़ेगा। तुझे भी गुरुओं की कृपा से वह सुलभ हो जावेगा। तूं पता लगा। तूं मेरे इतने नजदीक रहता है वह ही यह पता नहीं लगा सकता तो फिर किसी दूसरे के लिए तो सम्भव ही नहीं है। मैं इसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। तेरे पर श्री नाथ जी महाराज की कृपा है। सब स्वतः ही हो जावेगा। आपके जीवन में एक महत्वपूर्ण

विशेषता यह भी रही है कि आप मानव का सम्मान करते थे। आपका परिष्कृत लोक व्यवहार अनुकरणीय है। चाहे कोइ बरीब हो, अमीर हो, दलित हो, बलवान हो, उपेक्षित हो, अपेक्षित हो, बाल हो या वृद्ध हो आप सभी को आदर देते थे।

अगन्तुक के व्यक्तित्व का ध्यान रखते हुए स्वयं उसके धरातल तक उतर कर उसकी मनो भावनाओं को समझा करते व उन्हीं के अनुसार उससे व्यवहार कर उसे सन्तुष्ट कर दिया करते थे। कभी किसी का अपमान तिरस्कार करते हुए हमने आपको नहीं देखा। किसी के प्रति वैर भाव आपके दिल में आताही नहीं था। सबसे आत्मियता रखना आकी विशेषता थी। आप अक्सर यह शेर कहा करते थे–

मंदिर तोड़ मस्जिद फोड़ तो भी नहीं मझाका है।
किसी का दिल दरगाह मत तोड़ वह खास घर खुदा का है।।
मन्दिर में एक बुत रखा, मस्जिद में सफम सफाई है।
दिल दरगाह में झलक रहा जैसे नूर खुदाई है।।

कोई अज्ञानतावश आपके विपरित आचरण भी कर देता तो आप उसे दयावश क्षमा कर देते थे। कभी किसी ने अंहकार में आकर व्यहार करते देखा हो मैं नहीं सोचता। और जब किसी को उसका वांछित सम्मान मिल जावे तो क्यों नहीं आपकी ओर आकृष्ट होगा। यह तो देखने को मिलता है कि लोग महान या बड़ा बनने के लिए दूसरों से समानता का व्यवहार नहीं करते। अपने सामने सभी को नतमस्तक करवाना चाहते हैं क्योंकि वे बड़ा अपने अहम की तुष्टि के लिए बनना चाहते हैं न कि अहम को मिटा कर। सचमुच महान वही है जिसने अपना अहम मिटा दिया। जिसने तिरस्कार के स्थान पर सम्मान को प्रतिष्ठत कर लिया। सम्मान भी यदि समानता के आधार पर हो तो यह दिब्य गुण बन जाता है। जिन्होने श्री बाबाजी महाराज के जीवन को करीब से देखा है वे जानते हैं कि यह दिव्य गुण आपके स्वाभाव में प्रकृति प्रदत ही समाहित था। ह्रदय गद गद हो जात है आपके इन अलौकिक गुणों को याद करके।

आदर्श आश्रम का निर्माण–लक्ष्मणगढ में श्री नाथजी महाराज का आश्रम निर्माण कर आपने समाज के सामने एक उज्जवल आदर्श एवं चिरकाल तक चलने वाली परम्परा का सूत्रपात किया। सुन्दर निर्माण कलाका सूक्ष्मज्ञान देख कर इंजीनियर भी चकित रह जाते हैं। आश्रम का सुन्दर निर्माण, मनोमुग्धकारी हरितिमा, देव रमण करने योग्य स्वच्छता, तपोवनों की सी पवित्रता, एवं मन बुद्धी आत्मा को तृप्त करने वाली शान्ति को प्राप्त कर दर्शक गण अपना अहोभाग्य समझते हैं। अनायास ही उनका ह्रदय आपके प्रति आभार व्यक्त करने लग जाता है। यद्यपि आश्रम निर्माण में कारण स्वरुप श्री शुभनाथजी महाराज की आज्ञा ही रही परन्तु आपने उनके आज्ञा वचनों का पालन

कर निमित स्वरुप ही सही, समाज के सामने जो आदर्श आश्रम प्रस्तुत किया वह वर्तमान युग में देदिप्यमान नक्षत्र ही है। पतनोमुख आश्रम व्यवस्थाऐं एवं छिन्न भिन्न होते साधु समाज के लिए प्रेरणा का सतम्भ बन गया है लक्ष्मणगढ आश्रम। इस आश्रम के निर्माण के बाद जो सुधार अन्य आश्रमों में आया वह युगान्तकारी है। साधु समाज को गृहस्थ समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का अभूतपूर्व कार्य करता है यह आश्रम। इस आश्रम के निर्माण एवं संचालन में सद्कमाई के पैसों का अपयोग कर आपने इस आश्रम की पवित्रता में चार चांद लगा दिये। आज भारतवर्ष में लगभग आश्रम, मठ, मन्दिर दो नम्बर का खेटा दाना प्रयोग करते हुए अपने पवित्र उद्देश्यों से विचलित होकर पतन की ओर अग्रसर हो रहे हैं वहां यह आश्रम उनके सामने आदर्श पेशकर उतरोतर विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। प्रभु से प्रार्थना है कि आश्रम के वर्तमान संचालक एवं भविष्य में होने वाले संचालक आपके इस पुनीत प्रयत्न को ध्यान में रख कर ही संचालन करेंगे। आज समाज के सामने यह आदर्श आश्रम है तथा सदा ही यह आदर्श आश्रम बना रह कर श्री बाबाजी महाराज के पावन पवित्र उद्देश्यों का प्रचार प्रसार करता रहे यही सच्ची श्रद्धाञ्जली होगी श्री बाबाजी महाराज के पावन चारण कमलों में।

मान सम्मान से दूर रह कर आपने पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन किया। कभी भी स्त्री जाती को स्पर्श तक नहीं करने दिया। उन्हें मां–बहिन ही मानते रहे। व्यहारिक रुप से दूरी रखते हुए भी दिल में दया भाव रखते व उनका आदर सम्मान करते थे।

एक अनुपम विशेषता जो अब तक सबको याद आ रही है वह है कि आप सबके आत्मीय व कुशल चितेरे थे। सबको सद् सलाह देते। सभी पता नहीं क्यों आपकी सलाह को वेद वाक्य मानकर ज्यों का त्यों अनुसरण करते थे। कभी कोई शंका नहीं होती किसी के मन में कि ऐसा करुं या न करुं। न ही कभी असफल हुए वे लोग। समाज को अगाढ श्रद्धा थी आप पर। आपके महाप्रयाण के समय तीन तीन पीढ़ियां एक साथ अश्रुपूरित नेत्रों से कह रही थी अब किसे कहेंगे अपने दिल की बात। अब कौन देगा हमें सद्सलाह? अब कौन है हमारे दिल की बात सुनने वाला। आप हमारे दिल की बात सुना करते थे। आप वोही कहा करते थे जो हमारा दिल चाहता था। आप अजर अमर हैं, हमारा यह विश्वास भी हमें आपके शरीर की याद को रोक नहीं पा रहा है। आप प्रेरणा देंगे इसी विश्वास से अब जीवन के शेष दिन काटने होंगे। बाल, युवा, प्रोढ़, एवं वृद्धावस्था इन चारों ही अवस्थाओं का इतना सूक्ष्म ज्ञान था आपको कि चारों ही वर्ग आपके सानिध्य में रह कर सन्तुष्ट हो जाया करते थे। कभी छोटे बालकों के साथ प्रेमवार्तालाप, कभी युवकों से जीवन की उमंगों का विशद विवेचन, कभी प्रोढ़ों से ज्ञान चर्चा, तो कभी वृद्धों से उनकी इस असहाय अवस्था के प्रति सहानुभुति प्रदर्शन। रोग–दरिद्रता से आक्रान्त दलितजन के लिए सहानुभूति के दो शब्द

पात्रानुसार कृपा वचन प्रदान करना आपका नित्य कर्म था। कभी किसी को दुत्कारते नहीं थे। यद्यपि चमत्कारों से आप दूर ही रहने की चेष्टा करते परन्तु दयावश कुछ न कुछ वचन छूट ही जाता था। चमत्कारों को आप आध्यात्मिक साधना में बाधक मानते थे। फिर भी प्रभु प्रेरणा से जब कोई चमत्कारी घटना हो जाया करती तो आप सहज भाव से कह दिया करते कि भाई नाथजी महाराज की सत्ता है। किसी का भला हो रहा है तो मैं कैसे रोक सकता हूँ। चिड़ी के चोंच भरने से भी कभी समुद्र में कोई फर्क पड़ा है क्या?

विचार उपदेश–

श्री बाबाजी महाराज का प्रत्येक वचन ही वेद वाक्य था। हर वार्ता हर प्रसंग में आपके विचार एवं उपदेश स्पष्ट छाप लिऐ हुए होते थे। निरर्थक वार्ता आप करते ही नहीं थे। आपके विचारों एवं उपदेशों को लिपिबद्ध करना श्रम साध्य एवं सूक्ष्म विश्लेषण का विषय है। आप गुणाकार हैं। मेरी मोटी मति में विश्लेष्णमकता का सर्वथा अभाव है। अतः मैंने आपके मुखारबिन्द से समय समय पर विभिन्न ज्ञान चर्चाओं एवं सत्संग वार्ताओं में जैसा सुना है समझा है व मेरी डायरी में संकलित कर लिया उसे ही ज्यों का त्यों इस विश्लेषण में प्रस्तुत कर रहा हूँ। कहीं कोइ त्रुटि रह गई है या असंगति रह गई है तो वह मेरी अल्पमति या यूं कहिए कि सुन कर लिखने में कोई भूल है। उसके लिए मैं आपसे व पाठक गण से क्षमाप्रार्थी हूँ। यद्यपि यथा सम्भव मैंने आपके ही मूल शब्दों एवं भाषा का प्रयोग किया है। फिर भी यदा कदा अनजाने में कुछ अप्रचलित मारवाड़ी शब्दों को हिन्दी के शब्दों या भषा में रुपान्तर कर दिया है जो पाठक को पठन में अखर सकता है। एक बार पुनः मैं पाठक से इस रंग में भंग के लिए क्षमा चाहूंगा। व्याख्या एवं विश्लेषण का दुरुह कार्य पाठक के लिए छोड दिया गया है।

श्री बाबाजी महाराज के जीवन काल में ही आपके विचारेां एवं उपदेशों का संग्रह श्री बैजनाथजी द्वारा सम्पादित पुस्तक आध्यात्मिक शिक्षा में बहुत ही सुन्दर एवं व्यवस्थित ढंग से किया गया है। इस पुस्तक में जो विचार एवं उपदेश संग्रहित हैं मैं यहां पर जैसा का तैसा ही रख रहा हूँ। प्रथम तो आपके प्रखर बौद्धिक विचारों एवं कल्याणकारी उपदेशों का अधिकांश व्यवस्थित संकलन मुझे सहज ही प्राप्त हो रहा है जिसे सरलता से पाठक तक पहूंचा सका हूँ। दूसरा इससे भी बड़ा लाभ यह है कि यह पुस्तक आपके समय में प्रकाशित होने के कारण आप द्वारा अनुमोदित है जिसे मैं इन विचार–उपदेशों को उसी रुप में पाठक के पास पहुंचाते हुए अधिक न्याय कर सका हूँ।यद्यपि ये विचार उपदेश आपके समय में प्रकाशित हो गये थे पान्तु आपका सम्पूर्ण आजस्वी स्वरुप जनसाधारण के सामने नहीं रख पाये। आपके जीवन की महत्वपूर्ण घटक 'आध्यात्मिक चिन्तन'इनमें लगभग अछुता ही रह गया। इसी क्रम मैं उन विचारों का उद्धत करने के बाद मेरी

डायरी से वे ही विचार उपदेश उद्धत करुंगा जो आपके गहन आध्यात्मिक चिन्तन, सहज साधना, एवं समग्र धर्मिक विचारधारा पर कुछ न कुछ प्रकाश डालते है।

1. शुभ कर्म करनें चाहि ईश्वर को याद रखना चाहिए।तीन तरह के मनुष्य पाये जाते हैंः–

1. ईश्वरवादी। 2. समन्यवादी। 3. कर्मवादी। चौथा कोई वर्ग है तो वह मानव स्तर का नहीं है। ईश्वावादी साधु सन्त होते हैं जो केवल ईश्वर के आधार पर ही रहते हैं। आजिविका के लिए कोई प्रयत्न नहीं करते। कर्मवादी जो केवल कर्म को ही मानते हैं। जो ईश्वर को भी याद करते हैं वे समन्यवादी हैं। सद्ग्रहस्थ को समन्यवादी होना चाहिए।

2. साधु के लिए निम्न बाते आप कहा करते थेः–

1. अपने यश ख्याति की ईच्छा न करे, 2. निष्काम कर्म करे, 3. सदा अपने ईष्टदेव को याद रखे, 4. सदा निष्पक्ष होकर रहे, 5. अपने आप को बड़ा न कहे, 6. जात पांत की महा बीमारी को छोड़े– इसकी दवा है अपने आपको समझे, 7.स्त्री जाति को मां बहन समझे, 8. रुपये पैसे से मोह न करे, 9. चोरी जारी मिथ्या और साध की ईच्छा।

आप कहा करते–याद रखो–मालिक को, छोड़ो–भ्रम को, पकड़ो–सत्य को, देखो नित्य को।

संसार में सत्य है, संसार असत्य है।

आत्मा निराकार है, जिसमें आत्मा रहती वह बेकार है।

3. तीन प आपना लो चौथा प आपने आप आजावेगा। ये तीन प हैं– 1. प्रेम करो, 2. पवित्रता रखो, 3. परमात्मा को याद रखो, तो चौथा प यानि परमानन्द आपने आप आजावेगा।

4.आपने एक बार यह दोहा कहा–

भाव पवित्र भजन पवित्र, विश्वास प्रेम पवित्र और पवित्र सेवा।

नाथ कहे सुन रे अवधू,, इस विधि काया उत्तम हुवा।।

प्र. भाव भजन विश्वास प्रेम और सेवा का उदगम कैसे हुआ?

महाराज– अन्तःकरण में निखार आने पर ये सब स्वतः ही होने लगते जाते हैं। जैसे वर्षा होने पर नदियां अपने आप बहने लग जाती हैं। उसी प्रकार अन्तःकरण में इनका उद्गम होने लग जाता है।

प्र– अन्तःकरण में निखार कैसे आये?

महाराज– शुद्ध खान–पान, अच्छा वातावरण, सत्संग, शुभ कर्म तथा गुरु कृपा (गुरु वचन पालन) ये पांचों बाते आपनाने पर अन्तःकरण में निखार आयेगा।

5. मांहि मारले, मांही जगाले। मांही रोकले, मांही शुरु करदे। मांही समझले। मारले काम, क्रोध, मद, लोभ मोह ईष्या द्वेष को। जगाले अपने ईश्वरीय ज्ञान को। रोकले इन्द्रियों के वेग को

और शुरु करदे अपने लक्ष्य को। बाहर से बंद करले अन्दर से खोल ले। अब तो तूं समझ गया होगा कि क्या जीता है क्या मरता है? तू आकर के विकार को क्यों देखता है? इस आकार के विकार से आगे जो स्थिति है, जिसमें मैं सदैव रहता हूँ, उसे देखाकर। मैं यहां अपना क्या मान रहा हूँ यह तो देख। मेरी यहां किसी वस्तु में आस्था है तो बता। मेरा निश्चय एक ही है। मेरा स्थान गुरु चरणों में है। वहीं मुझे जाना है। यह आश्रम व्यवहार होते हुए भी कभी इसमें दखा है? तूं भी ऐसा ही अभ्यास कर।

6. सब उद्वेगों एवं तनावों को छोड़कर सीधे हाथ करदे। फिर याद करोगे कि मैंने उस समय सीधे हाथ नहीं किये। अब तो तेरा मेरा सब साफ कर दूंगा। तुझे भी मेरे समान बना कर वहीं श्री नाथजी महाराज के चरणों में स्थान दिला दूंगा। तूं कुछ भी संशय मत कर। तीन बातें छोड़ दे–भय, भ्रम व संशय। तीन बातें आपनाले–निर्भय, निशंक व निभ्रान्ति। फिर स्वतः ही सब ठीक हो जावेगा। इस पर मैंने कहा, "महाराज यह तो जीते जी मर जाना है। फिर हमारा तो कोई विचार अस्त्त्व ही नहीं रहता। ऐसी मुक्ति की क्या उपादेयता?" आप हंस कर बोले "अरे पागल! जीवन मुक्ति सो ही असली मुक्ति है। मरे पीछे कैसी मुक्ति। जीतेजी जों कुछ न कर पाया वह मरकर क्या करेगा? तूं तो तेरा सब कुछ छोड़ कर शान्ति संतोष धारले फिर देख क्या आनन्द आता है।

7.सृष्टि में ही दोष हैं । दोष तीन प्रकार के होते हैं। प्रारब्ध दोष, कर्म दोष व संग दोष। प्रारब्ध दोष जो पूर्व जन्मों के कर्मों तथा कर्म दोष जो वर्तमान जीवन के कर्मों द्वारा संचित हो जाता हैं। यदि जीवात्मा को सनातन माने तो ये दोनों दोष एक ही हुए। तीसरा दोष जो संग दोष है वही इन दोनों का मूल कारण है। जो जैसी संगत करता है उसमें वैसे ही गुण–अवगुण आ जात हैं। संग का सूक्ष्म प्रभाव अवश्य ही पड़ता है। इस संग दोष के कारण ही मानव विभिन्न कर्मों में प्रवृत होता है। यह नितान्त सत्य है कि जो जैसी संगत करेगा वह वैसा ही हो जावेगा। एक द्दष्टान्त है कि एक चिंटी नमक के गोदाम में रहती थी व दूसरी चिंटी चीनी के गोदाम में रहती थी। दोनो आपस में मिलती तो खारे मीठे की चर्चा किया करती। एक दिन चिनी वाली चिंटी ने नमक वाली चिंटी को निमन्त्रण दिया। नमक वाली चिंटी ने चिनी के गोदाम में पहुंच कर चिनी का दाना खाया तो उसे भी खारा पाया। दूसरी चिंटी ने विचार किया व उसे अपना मुंह साफ करने को सलाह दी। नमक वाली चिंटी ने यही किया व जब चिनी का दाना खाया तो वह मीठा तो था ही। इस प्रकार जो जैसी संगत करता है वह वैसा ही बन जाता है। संग का असर व्यक्ति ही नहीं अन्न जल पर भी पड़ता है। वे भी संग दोष से युक्त हो जाते हैं। खोटी कमाई के अन्न से शान्ति नहीं मिलती।

भीष्म पितामह जैसे धर्मात्मा भी दुर्योधन का अन्न खाने के कारण द्रोपदी का सभा में अपमान होने पर भी नहीं बोल सके। इसी प्रकार एक राजा व एक सन्यासी की कथा भी शस्त्रों में आती है।

8. ईश्वर को समझाये तो समझ में बात आने वाली नहीं है। उन्हें वाणी द्वारा नहीं समझाया जा सकता है। उनके लिए तो केवल विश्वास ही काम कर सकता है। गुरु ने जैसा स्वरुप उनका बताया है, जो नाम उनका बतलाया है उसी पर विश्वास कर प्रेम सहित जप एवं ध्यान करना चाहिए। ईश्वर पर केवल विश्वास ही किया जा सकता है कि वे हैं। ऐसा समझकर विश्वास करना चाहिए कि, "हे नाथ तुम कैसे हो? क्या हो? क्या तुम्हारा नाम है? क्या तुम्हारा रुप है? कहां तुम्हारा निवास है? यह सब तो मैं नहीं जानता हूँ। परन्तु मेरा विश्वास है कि तुम हो। हे प्रभो! तुम कैसे भी हो और कहां भी हो। तुम जहां कहीं जैसे भी हो तुम्हे मेरा कोटि–कोट नमस्कार स्वीकार हो।

9. डरना नहीं चाहिए। भय कमजोर आत्मा का लक्ष्ण है। सदैव अपनी आत्मा को अजर अमर मानना चाहिए। यह शरीर तो साधन मात्र है। एक न एक दिन जाना है। तुम शरीर नहीं आत्मा हो। आत्मा क्या है? आत्मा वह अव्यक्त आनन्द है जिसकी कोई सीमा नहीं है। जो आनन्द तुम विषयों में लेते हो वह आनन्द नहीं बल्कि सुख मात्र है जो बनता मिटता रहता है। जो सच्चा सुख है, जो परमानन्द है, जो इस शरीर में आनन्द का उद्‌गम है वही आत्मा है। यह कोई पदार्थ नहीं है। अतः अपनी आत्मा की पहचान करते हुए सदा परमानन्द की प्राप्ति करनी चाहिए।

निर्कल्प हो अपने गुरु के स्वरुप में मिल जाना चाहिए। यह अच्छा या बुरा तब तक ही रहता है जब तक कि अपना अलग से अस्तित्व बनाये रखता है। या तो स्वयं को मिला देना चाहिए या फिर ऐसी कल्पना करनी चाहिए कि वह गुरु रुपी शक्ति मेरे अन्दर ही है। या तो बूंद सागर में मिल जाये या फिर स्वयं को सागर का ही अंश रुप माने। अच्छा यही होता है कि छोटी वस्तु बड़ी वस्तु में मिल जावे। ऐसा होने पर सन्देह नहीं होता है। छोटी वस्तु में बड़ी वस्तु की कल्पना करने पर विश्वास बैठता नहीं है। अतः यही अच्छा रहता है कि स्वयं का अस्तित्व ही गुरु के अस्तित्व में समाहित करदे। इससे अद्वैत भाव नहीं रहता है। यदि कोई कहता है कि बूंद का सागर में मिलना सभव नहीं है तो वह अज्ञानता में है। एक बार जब बूंद सागर में मिल जाती है तो वह भी सागर ही हो जाती है। उसका अलग से अस्तित्व बोध नहीं रहता है।

हमारे गुरु लोग निर्कल्प अवस्था में रहते हैं। मैं तो दिन रात उन्हीं के चरणों में लगा रहता हूँ। फिर जन्म नहीं लूंगा क्योंकि मेरी यहां की काई ईच्छा ही नहीं रह गयी है। वहां गुरु लोगों के पास ही जाना हैं जिनकी यहां पर ईच्छा होती है वे ही वापस आते रहते हैं। हमें तों गुरुओं की शरण में रह कर निर्कल्प होना है। निर्कल्प का अर्थ यह नहीं है कि सुन्ना होना है। हां, संसार तो सुन्ना ही कहेगी परन्तु वास्तव में वह सुन्न नहीं। निर्कल्प का तात्पर्य है कि मन में जो संकल्प

विकल्प उठ रहे हैं उनसे मुक्त हो जाना। यह सृष्टि संकल्प विकल्प की रचना है। इस संकल्प विकल्प से छुटकारा पा कर उस अव्यक्त आनन्द स्वरुप सता में लीन रहना ही ज्ञानावस्था है। यह परमसता आनन्द स्वरुप सूक्ष्म से सूक्ष्मतम व विशाल से भी विशालतम है। निराकार का अभिप्राय आकार रहित नहीं बल्कि जो हमारी इन्द्रियों द्वारा नहीं जाना जा सकता है। जिसकी केवल अनुभूति ही की जा सकती है। 'योग ध्यान गमयम'। लेकिन बेटा! यह जो ध्यान योग भजन आदि जो सब लोग करते हैं, इनसे भी वह परमतत्व तो परे है। वेद तो एक विधि है। जो लिखित वेदान्त है वह भी उससे तो दूर ही है। सच्चा वेदान्त और है। शास्त्र कहते है वह कण–कण पत्ते–पत्ते में व्याप्त है। वह भीतर है या बाहर है। यदि वह पते पते में होता तो क्या पेड़ के काटते ही वह कट गया। शरीर के अन्दर वह होता तो यह शरीर मरता क्यों?

बाहर होता तो यह शरीर क्रियायें कैसे करता अथवा किसके आधार पर करता व टिकता। न तो कोई ऐसी जगह है जहां पर वह है ही, तथा न ही ऐसी कोई जगह है जहां पर वह नही है। न वह श्वांस है न वह पंचतत्व है। वह तो स्वयं साक्षी सत्ता है जो हर समय अणु अणु में व्याप्त है। वह परमानन्द जो सबके अस्तित्व का मूल कारण है। इस आनन्द को अनुभव कर ही शिवजी विस्मय से नृत्य करते हैं। जितने भी साधन इस संसार में प्रचलित हैं वे सब मात्र उसकी तरफ ईशारा करते हैं, परन्तु हैं उससे बहुत दूर। वह ज्ञान की वस्तु है। तुम तो तुम्हारा भाव रखो व सेवा करो जाओ श्री नाथजी महाराज स्वतः ही समझा देंगे।

10. जीव ईश्वर अभेद (अद्वैतभाव) :–अपने विवके से अपने आत्मस्वरुप की खोज करनी चाहिए। उस परम सता से अपने आपको अभिन्न समझना चाहिए। यह संकल्प विकल्प तो जीव संज्ञा है। इस संकल्प विकल्प से उपर उठकर अपनी आत्मा की अनुभूति करनी चाहिए। अज्ञानता के कारण ही यह जीवात्मा परमात्मा से अलग भाषता है। वस्तुतः ये एक ही है। ऐसा दृढ निश्चय होना चाहिए। ऐस अभ्यास अपने विवके विचार द्वारा करते रहना चाहिए। दो होने का भ्रम ही अज्ञानता है। जैसे बूंद समुद्र नहीं है। कब तक जब तक समुद्र में नहीं मिल जाती। लेकिन जैसे ही बूंद समुद्र में मिल जावेगी तो बूंद नहीं समुद्र हो जावेगी। जब तक सागर से अलग है तब तक ही बूंद है। बूंद को हम समुद्र व समुद्र को बूंद नहीं कहते। परन्तु ज्ञान दृष्टि से देखने पर यह बूंद होते हुए भी समुद्र से भिन्न नहीं है। है तो वह भी जल ही। पर इसे बूंद होने का भ्रम है। तत्वतः बूंद भी वही है जो सागर है। केवल आकार के भेद के कारण ही हम इनको दो बतलाते हैं। ऐसे ही हम प्रकाश को भी भिन्न भिन्न देखते हैं। यह सूर्य का प्रकाश है, यह चन्द्रमा का प्रकाश है, यह अग्नि का प्रकाश है, तो यह बिजली का प्रकाश है। पर कैसा भी हो प्रकाश तो प्रकाश ही है। यह भेद कैसा? इसी प्रकार बिजली को देखो क्या बल्ब जल रहा है तब तक ही बिजली है। यदि बल्ब

को फोड़ दें तो क्या बिजली चली जायेगी। बल्ब के अभाव में अतीत नहीं होती है। जरा हाथ लगाकर पता लगाओ। और भी विस्तृत रुप में देखें तो जहां से बिजली पैदा होती है वहां से लेकर सब जगह एक ही बिजली तो है परन्तु अतीत भिन्न भिन्न प्रकार से हो रही है। यही नहीं, पत्थर में भी यही बिजली है, पानी में भी यही बिजली है, पृथ्वी में भी यही बिजली है, परन्तु हमें दिखायी नहीं दे रही है।

इसी प्रकार सभी में एक ही आत्मा है पर अज्ञानता से भिन्न–भिन्न भाष रही है। एक दृष्टान्त ओर लें । सोना जब तक मिट्टि में मिला हुआ था, इसकी हमें कोई पहचान नहीं थी। जब इसकी मिट्टि आदि अशुद्धि हटा दी जाती है तो यह सोने का पासा बन जाता है। इसी पासे से अनेक प्रकार के गहने बनाये जाते हैं जिन्हें हम जीव की उपमा दे सकते हैं। जहां जीव है वही भय है। यदि पिघलाकर वापिस पासा बनादें तो वही सोना का सोना। और यदि सोना अपनी संज्ञा खोकर पुनः पृथ्वी में मिल जावे तो यह होगा इस जीवात्मा की उस ईश्वरीय सत्ता से पुनर्मिलन।

सदैव अपने विवेक विचार से अभ्यास करते हुए ऐसा दृढ निश्चय कर लेना चाहिए। शास्त्रों में सत्य भी है, असत्य भी है। जरुरी नहीं कि उनमें लिखा गया सब सत्य ही है। फिर हमारा विवेचन भी गलत हो सकता है। पर यदि कोई अपनी आत्मा से बोलता है, अपनी विवेक वाणी से कह रहा है तो यह सत्य ही है। इसी का अनुभव करना चाहिए।

11. आत्मा–अनात्म विवेचनः– जो ज्ञान स्वरुप, दुःख सुख से परे चेतन स्वरुप है। जो हमारा सही स्वरुप है वही आत्म तत्व है। यह कोई पदार्थ नहीं है। अनात्म क्या है? तुम लोग संसार की सभी वस्तुओं को अनात्म मान रहे हो। नहीं, अनात्म है मन, बुद्धि, चित्, अंहकार रुपी अन्तःकरण जिसे तुम भूल या अज्ञानतासे आत्मा मान बैठे हो। इस देहादिक व्यपार को आत्मा रुप मान लेना अज्ञान है। देहभाव से उपर उठ कर सोचना ही आत्मा का लक्षण है। प्रकृति–पदार्थ इत्यादि अनात्म नहीं हैं। ये सब तो माया के विचार हैं जैसे लोहे को गला कर शुद्ध करने पर मैल हटता है वैसे ही मन, बुद्धि, चित, अंहकार आदि को आत्मा से अलग देखना ही अनात्म की पहचान का लक्षण है।

12. देहभाव–आत्मभावः–मैं– देहभाव व आत्मभाव क्या है? इनमें क्या भेद है?

महाराज– देहभाव सतत अभ्यास का परिणाम है। मैं देह हूँ ऐसा अभ्यास हो गया है। वास्तविक स्वरुप का ज्ञान हो जाने पर मैं देह नहीं आत्मा हूँ ऐसा भाव स्थायी होने लग जाता है जिसे आत्माभाव कहते हैं।

मैं– क्या यह जीव उपाधि आत्मा पर निरुपित है?

महाराज– नहीं! आत्मा तो शुद्ध है, शाश्वत है, चेतन है। आत्मा पर कोई भी उपाधि आरोपित नहीं होती वह तो साक्षी सता है। न उसमें हर्ष है न शोक है, न पाप है न पुण्य है।

मैं– फिर इस जीवात्मा शब्द का क्या अर्थ है?

महाराज– यही तो अज्ञान है। आत्मा को जीव मान बैठे हैं। वस्तुतः ऐसा है नहीं। आत्मा तो निरुपाधि है। उपाधि सब जीवन संज्ञा पर लागू है। परन्तु अज्ञानतावश हम इन्हें आत्मा में निरुपित करते हैं। ये स्वर्था दो भिन–भिन्न बाते हैं। चारों अन्तःकरणादि सब जीव संज्ञा में आता हैं। जो शुद्ध चेतन का प्रतिबिम्ब इस शरीर में है जिसे हम आत्मा कह कर पुकारते हैं, वह इससे परे है। वह शुद्ध है। उसमें न हर्ष है न शोक है, न पाप है न पुण्य है। न वह कर्ता है न भोक्ता हैं। न उसका अभाव है तो न ही उसका भाव है। जो सदा सर्वदा सम स्थिति में स्थित है। यही धारणा आत्मभाव है और इसी के निश्चय हो जाने का नाम ज्ञान है। देहादिक करके जो कष्ट हैं उन्हें आत्मा से जोड़ना ही हमारी अज्ञानता है। अज्ञान में ही हम इनको देखते हैं। ज्ञान में ऐसा नहीं है।

मैं– यदि कर्ता भोक्ता सब जीव ही है तो फिर क्या इस शरीर में आत्मा है तो सही?

महाराज–हां अवश्य! पर केवल द्दष्टा, साक्षिभूत और ज्ञानस्वरुप ही। सब उपाधियों से रहित शुद्ध चेतन के अंश रुप में आनन्द स्वरुप ।

मैं– जब यह शरीर मरता है तो जीवात्मा इसे छोड़ जाता है, ऐसा कहा जाता है। आत्मा यदि प्रधान होता तो अपनी ईच्छानुसार इस देह को छोड़ता। परन्तु सदा ऐसा नहीं होता है। अकस्मात घात होने पर शरीर मर जाता है तब यह शंका उठती है कि यदि आत्मा प्रधान होती तो दूसरों के द्वारा क्यों, स्वेच्छा से इसे छोड़ती।

महाराज– प्रतिबिम्ब देखने के लिए दर्पण का होना आवश्यक है या घट में जल का होना आवश्यक है। जब ये घट दर्पणादि फोड़ दिये जाते हैं तो उनमें हम प्रतिबिम्ब नहीं देख सकते हैं। परन्तु क्या यह कह देंगे कि अब वहां पर प्रकाश आकृति ही नहीं है। इसी प्रकार आत्मा तो शाश्वत है पर घटादि के फूट जाने के कारण प्रतिबिम्ब नहीं बन रहा है। यही तो अज्ञान है कि देह को आत्मा मान रहे हैं।

मैं– यदि आत्मा शाश्वत है तो पुर्नजन्म किसका होता है?

महाराज– पूर्नजन्म है ही कहां! यह सब तो अज्ञान में है। क्या कपड़ा बदलना भी पुर्नजन्म होता है? एक कपड़ा फट जाता है तो दूसरा कपड़ा अपना लेते हैं। क्या इसे ही पुर्नजन्म कहेंगे। पुर्नजन्म तो देहभाव प्रधान मानने वालों का अज्ञानजनित शब्द है। आत्म भाव में स्थित के लिए पुर्नजन्म होता ही कहां है।

मैं– पुर्नजन्म सिद्धान्त हमारी हिन्दु संस्कृति का अनुप्राण है। यदि पुर्नजन्म को नकार दें तो फिर कर्म सिद्धान्त का क्या होगा? कर्म किस पर लागू होंगे?

महाराज– जो अज्ञानवस्था में है उन पर। आत्म भाव स्थित कर्मोंको बाध कर देता है। इन क्रमादि चक्रों का भेदन कर आत्मभाव में स्थित होना ही तो ज्ञानवस्था है।

13 ध्यानः– ध्यान करते समय मन को शून्य में फेंक देना चाहिए। इसमें कोई कल्पना उठे नहीं। यदि कल्पनाऐं उठ रही हैं तो फिर ध्यान नहीं है। मन को शून्य में फेंक दो, चित को चेतन मेंलगा दो। केवल सुन्न में बैठने से ही कुछ नहीं होता है। ऐसे तो बहुत से सुन्न में फिर रहे हैं। जिसका मन शून्य में लग गया? चित चेतन में लग गया तो गोरक्षनाथजी कहते हैं कि उसके कल्याण में कोई संशय नहीं है।

14 गुरु का ध्यान– साकर ध्यान करना है तो केवल गुरु का करो। सबसे पहले गुरु भाव धारण (गुरु के अर्पण) कर भाव नदी में बह जाओ। इसके बाद भवातीत ध्यान करो। मैं और तूं को मिटा दो। एक ही हो जाओ। तत्पश्चात गुरु लक्ष्य को समझो।

रुपस्थ गुरु का ध्यान करने की आवश्यकता क्या है? रुप तो तुम्हारे सामने ही है। केवल भाव रखो। अन्दर देख लेने से क्या होगा? वह आंखे खोलते ही मिट जावेगा व जो खुली आंखों से देख रहे हो वह आंखें बंद करते ही मिट जावेगा। यह ध्यान शाश्वत नहीं है। जो दिख रहा है वह सब नाशवान है। इसलिए भावातीत ध्यान करना चाहिए। निर्कल्प अवस्था ध्यान नहीं है। केवल्य अवस्था जिसे कहते है। उसी में स्थित हो जावो। जो निराकार है निष्कलंक है, उसका आकर कैसा? इसलिए जब तक आकर नहीं मिटता तब तक का जो ध्यान है वह सब कल्पित ही है। वहां तो आकर है ही नहीं। भावातीत अवस्था में सब कुछ शून्य में छोड़ दो। पर यह कल्पना भी नहीं होनी चाहिए कि यह शून्य है। कल्पना है ही नहीं। जहां तक कल्पना है भावातीत ध्यान नही है। भावातीत में मैं और तूं भी नहीं है। न शरीर है। जहां तक भाव समाधि है वहां तक ही शरीर है। भावातीत अवस्था में किसी आकर पर आस्था होती ही नहीं है। पर इसका अभिप्राय यह नहीं है कि हम श्री नाथजी महाराज की आकृति को ही नहीं मानते। जहां पर भी वह आकृति देखते है।, श्रद्धा से नतमस्तक होते है। पर वह आकर में नहीं है जिसे हम मान रहे हैं। मैं भी यह नहीं कहता हूँ कि तूं सब कुछ छोड़ कर इस अवस्था में आ जा। तुझे जहां शान्ति एवं आनन्द मिल रहा है वह तो करता ही रह। यह तो एक उच्च अवस्था है।

15. मांय है उसे बाहर देख, बाहर है उसे मांय देख तब ध्यान शुरु होगा।

श्वासम् श्वास जपता रह, सीख भजन की रीत यह।
अलख निरंजन सर्वव्यापक, भावातीत विदेह।।

16 मन–मन को शून्य में छोड़ दो। इसे किसी वस्तु पर बैठने ही मत दो। वह अपने आप शान्त हो जावेगा। मैंने तो ऐसा अभ्यास कर लिया है कि इसे कहीं पर भी बैठने ही नहीं देता। पहले इसे उड़ाने के लिए लकड़ी रखता था पर अब तो यह सिसकारी से ही उड़ जाता है। शुरु में इसके खुड़े छुटाने में जोर आता था परन्तु अब तो अभ्यास हो गया है। तुम देखतो ही हो मैं इसे कहां रखता हूँ। कहीं पर बैठने ही नहीं देता हूँ। मन कोई वस्तु नहीं है संकल्प विकल्प का ही नाम है। इस संकल्प विकल्प का नहीं उठना ही ध्यान है। इसे उड़ाकर असीम शून्य में छोड़ दो। संसार में लोग इसलिए दुखी हैं कि उन्होंने अपना मन कहीं पर बैठा रखा है। संसार का रिवाज ही उल्टा है कि कहीं पर मन बैठे तो ध्यान करें। यह लोग मन को कहीं पर बैठाकर ध्यान करना चाहते हैं। इसी तरह की कोशीश भी करते हैं। इस संकल्प विकल्प में सुख प्राप्त करना चाहते हैं। लेकिन जब तक यह मन कहीं पर बैठा है, शान्त नहीं रह सकता है। ध्यान नाम ही शून्य में छोड़ देने का है। इसका सदैव अभ्यास करना चाहिए। अभ्यास द्वारा यह सब हो सकता है।

जिसका चित शान्त है। बैठने पर चित वृतियां शान्त हो जाती हैं तथा ध्यान में शान्ति मिलती है तो यह निश्चित ही है कि उस पर गुरु कृपा तो है ही। यदि गुरु कृपा नहीं होती तो न ईश्वर में मन लगता, न शान्ति मिलती तथा न ही चित वृतियां शान्त होती हैं। वह तो कर्मों को भोगी है। कर्मों से आया है, कर्मों से भोग रहा है व कर्मों से ही चला जावेगा। जीवन तो वही धन्य है जिसमें निश्चय, विश्वास और शान्ति है।

17. महाराज– सुभाष! लोग पुछते हैं कि शान्ति कैसे मिले। बता तूं क्या जबाब देगा? (मैं कुछ नहीं बोला) मेरे पुछने का अभिप्राय यह कि तू पुछे और मैं जवाब दूं। गुरु प्रश्न करने पर ही ज्ञान देता है। गोरक्षनाथजी ने जब प्रश्न किये थे तब ही मच्छेन्द्रनाथजी ने ज्ञान दिया।

मैं– हां जी शान्ति कैसे मिलती है?

महाराज– चित स्थिर होने पर शान्ति मिलती है।

मैं– चित स्थिर कैसे होता है?

महाराज– जब किसी भी प्रकार की भूख न रहै भूख मिटी तो चित डटयो, तो काम पटयो, मालिक स्यूं सटयो। सब भूख मिट जावे तो चित स्वतः ही स्थिर हो जाता है। लोग कहते हैं कि योग साधना, ध्यानादि करने से चित स्थिर हो जाता है पर मैं कहता हूँ चित स्थिर तो भूख मिटने से होता है। भूख का अर्थ है इच्छाऐं। सभी प्रकार की इच्छाऐं भूख ही हैं। मान–सम्मान, पूजना, चेलादि की भी इच्छा न रहे।

मैं– महाराज भूख कैसे मिटे?

महाराज– भूख मिटती है जब गुरु कृपा हो, अच्छे प्रबल संस्कार हों।

मैं– क्या अच्छे संस्कारों के बिना भी गुरु कृपा हो जाती है?
महाराज– हाँ अच्छे संस्कार हैं तब तो गुरु कृपा की विशेषता ही क्या है? अच्छे संस्कार न होते हुए भी यदि गुरु कृपा हो जाये तो भूख मिट जाती है। गुरु कृपा संस्कारो से भी महान है। संस्कारों को भी बदल देती है। अब यह मत पुछना कि गृरु कृपा कैसे होती है। बस गृरु कृपा होती है। इसका कोई कारण नहीं। कैसे भी हो सकती है।

18. एक बार एक दर्शनार्थी ने पुछा, महाराज् ईश्वर भजन में चित क्यों नहीं लगता तो आपने यह उत्तर दिया–

इस मन ने कई खाडा खोद राख्या है। जैसे घर के चौक में कई खाड़ा हो तो व्यक्ति एक खडे में से निकला है तो दूसरे में पड़ जाता है। यही हालत तुम्हारे जीवन की है। इसने भी कई खाडा खोद राख्या है, जिनमें पड़ता निकलता रहता है। इसलिए भजन में मन कैसे लगे। इसी संदर्भ में एक दूसरे भक्त को आपने एक बार कहा कि ईश्वर के प्रति आपका प्रेम नहीं है। मन केवल वहीं लगता है जहां इसका लगाव होता है। यदि ईश्वर में किसी का अनुराग होगा तो उसका चित भजन में अवश्य ही लगेगा।

19 नाद साधना– मैं– यह जो हो रहा है इसका आध्यात्मिक साधना में क्या महत्व है?
महाराज– नाद चित वृतियों को स्थिर होने पर सुनायी देता है। धीरे–धीरे अभ्यास से जब चित वृतियां शान्त हो जाती हैं तो नाद शुरु हो जाता है। अधिक अभ्यास होने पर प्रकाश दिखायी देने लग जाता है। यही अपना आत्म स्वरुप है, जिसका दर्शन कर अपार आनन्द होता है। नाद का यही महत्व है कि जिस साधक का यह खुल जाता है उसका चित स्थिर होकर अपने स्वरुप की पहचान करता है व अपार आनन्द महशूश करता है। यह आनन्द ऐसा जिसे पाकर वह उसे छोड़ना नहीं चाहता। संसार के सारे सुख उसके सामने तुच्छ लगने लगते हैं। परन्तु बेटा! यह भी परमानन्द की स्थिति नहीं है। शिवजी ने कहा है, ध्यानार्थ बुद्धि र्भ्रान्ति अर्थात ध्यान बुद्धि की भ्रान्ति है।जब तक सुनता है, दिखता है आदि आभास हैं तब तक सब बुद्धि का विलास है। आगे उन्होंने कहा है कि ध्यानार्थ निश्चलाबुद्धि अर्थात निश्चल बुद्धि का नाम ही ध्यान है। जहां पर निर्कल्प अवस्था है वही सच्चा ध्यान है। यही हमारा लक्ष्य है। वहां न शब्द है न प्रकाश है। जो कुछ भी है वह आनन्द ही आनन्द है। परन्तु वह सीधा ही प्राप्त नहीं होता है। विभिन्न आव्सथाओं में गुजरने के बाद ही यह अवस्था प्राप्त होती है।

20. पाताञजली योगसूत्र योगश्चित्वृतिनिरोध को आपने सरल भषा में यों समझाया कि जब तक तालाब या घट के पानी में लहरें चलती रहेंगी, हम हमारा प्रतिबिम्ब उसमें नहीं देख पायेंगे।

प्रतिबिम्ब देखने के लिए लहरों का शान्त होना आवश्यक है। यही सरल भवार्थ इस योग सूत्र का है।

21. एक आस एक विश्वास, गुरु चरणो का ध्यान।
सहज समाधि लही रहे, यही है उत्तम ज्ञान।।
न पढ गीता न पढ रामायण, न पढ वेद पुराण।
आत्म देव देख घट मांही, निश्चय हो कल्याण।।

संसार चुनेड़ी है। सहज समाधि को नहीं जानती। काम को छोड़ कर बैठे ध्यान लगाता हैं। आंख मुंद रहे हैं, पर भगवान तो ऐसों से और भी दूर चले जाते हैं। श्री बड़ा माहराज श्री अमृतनाथजी महाराज का वचन है कि 'ध्यान करे आंख मीच बो है सो नीचां को नीच'। कई आदमियों को ऐसी आदत पड़ जाती है कि काम भी चल रहा है और ध्यान भी। बंसरी बजाने वाले को नकसरी आती है। वे बंसरी भी बजाते रहते हैं व श्वांस भी लेते रहते हैं। भुवाना की तरफ एक साधु थे गरीबदास जी। वे दिन भर कुआ खोदते व सहारन बनाते रहते। जब पन्द्रह बीस दिन में पानी आने को होता तो गिली मिट्टी को सुंघ चख कर कह देते कि यह तो खारा पानी है, अच्छा नहीं है। फिर दूसरा कुआ खोदने लग जाते व इसकी मिट्टी पहले वाले कुऐं में डालते रहते। सदा इसी प्रकार चलता रहता। लोग उनके पास आते तो कुछ समय बाद परेशान हो कर चले जाते व कहा करते कि साधु को दुनियां से बचना चाहिए। साधुओं का खेल ही अजब है।

22. साधु को सांर से प्रीत नहीं करनी चाहिए। केवल पातल की सी प्रीत करनी चाहिए। जब भोजन करना हो तो धो पूंछ कर उसमें खा पी लो, फिर फेंक दो। इससे ज्यादा प्रीत अच्दी नहीं है। ज्यादा प्रीत रखने पर उनके साथ रोना पड़ता है।

संसार तो कर्मों की मारी, आपके कर्मा न रोवे।
नाथ कहे रे बालका, भक्त क्यों खोवे।।

कोई भक्त या ईश्वर भजन करने वाला सत्संगी मनुष्य हो उससे प्रेम रखना चाहिए। उसकी प्रीत दुखदायी नहीं होती। इससे अधिक नहीं। अपने शरीर के कुटुम्बवालों से भूल कर भी बाग नहीं रखना चाहिए। कोई कहे कि जब दूसरों से ही रखते हो तो ये लोग ही तुम्हारा क्या लेते हैं? यह सुनना नहीं चाहिए। दूसरों के दुःख से उतना उद्वेगित नहीं होता जितना इनके दुःखों में। रह रह का अफशोष होता है कि उनके साथ ऐसा क्यों हो गया। भुलाने पर भी यह विचार आते रहते हैं। यह बन्धन तो काट ही देना चाहिए। जो भूल कर भी ऐसा नहीं करता उसे अवश्य ही फोड़ा पड़ता है।

23. कोई सुख की इच्छा करेगा उसे दुःख के लिए भी तैयार रहना होगा। कोई कितना सुखी हो सकता है। कभी न कभी दुःख भी तो आयेगा ही। यह भी जरुरी नहीं है कि यह एक ही दुःख आगया अब और दुःख नहीं आयेंगे। समझदार मानव वही है जो सुख में इतराये नहीं व दुखों से घबराये नहीं। दोनों को ही शान्त भाव से स्वीकार करे। कोई–कोई ही ऐसा महापुरुष देखने में आताहै जो दुःख में भी खुश तो सुख में खुश है। यही कारण है कि गृहस्थी चाहे जितना भी भजन करने वाला हो जब कोई भी कष्ट संकट आ जाता है तो उस भजन को भूल जाता है। होना यह चाहिए था कि दुःख सुख तो आते ही रहते हैं तूं तेरा भजन क्यों खोता है? बच्चा मर गया तो रोता कल्पता है। यही नहीं कि पानी का बुलबुला था बना और मिट गया। ध्यान भजन में भी उसे वही नजर आता है। सब कुछ छोड़ कर भगवान को उसके लिए अपालम्ब देने लग जाता है।

24. नासतो विधते भावो, ना भावो विधते सतः।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्व नयोस्तत्व दर्शभि।।

जो सत्य है उसका किसी काल में अभाव नहीं है व असत्य का अस्तित्व नहीं है। एक बार बाबाजी (शुभनाथ जी महाराज) से मैंने (आपने) कहा कि संसार असत्य है तो वे बोले कि सत्य है दोनों के कथनों से गीता का यह महावाक्य पूरा हो गया। यह संसार सत्य है क्योंकि असत्य कर अस्तित्व नहीं है। सत्य का अभाव नहीं है। असत्य है क्योंकि अध्यात्मिक दृष्टि से देखेन पर यह सब माया का प्रपंच है जो न कभी हुआ है, न हो रहा है व न ही होगा। इसलिए असत्य कहा गया है। पदार्थ की दृष्टि से यह सत्य है। अब यह आश्रम ही है। न तो यह हमारा है। इसको अपना क्यो मानें। गुरु लोगों की कृपा का फल है। जब तक रहेंगे, रहेंगे फिर छोड़ देंगे। पर निमित तो हम हैं ही। इसलिए हमारा है। इसलिए न तो इसे हमारा मानता व न ही इसे हमारा नहीं मानता। हमारा है भी व नहीं भी है। तुम लोग लड़के की शादी करते हो तो यह क्यों मानते हो कि मैं कर रहा हूँ। हो रही है हरि ईच्छा से अपने आप पर यह भी क्यों मानो कि मैं नहीं कर रहा हूँ। आप भी तो अभ्यास कर रहे है। बस यही भाव रखों कि सब हो रहा है हरि इच्छा से हम तो निमित मात्र हैं। यही उपदेश श्री कृष्ण भगवान ने गीता में अर्जुन के प्रति दिया है कि हे अर्जुन तुम तो केवल निमित मात्र हो। लोग इस स्थिति में होते नहीं हैं केवल इस स्थिति की बातें करते हैं।

25. एक बार रघुवंश महाकाव्य पर चर्चा चल रही थी तो एक पंडित जी 'रघुवंश' में से गाय पर श्लोक बोलने लगे। आपने हंस कर कहा पंडितजी एक बात बताओ जो गाय पर श्लोक बोलता है वह बड़ा या गाय की सेवा करता है, उसे खिलाता पिलाता है परन्तु श्लोक नहीं जानता, वह बड़ा है। पंडितजी खिसिया गये व बोले कि जो सेवा करता है वही बड़ा है। इस पर आपने कहा पंडितजी लोग श्लोक ही बोलते हैं सेवा नहीं करते। श्लोक बोलना आजकल व्यसन हो गया है।

लेकिन गाय के लिए करते कराते कुछ भी नहीं हैं। एक बुढिया के पास पांच हजार चांदी के रुपये हैं परन्तु वह गिनती बीस तक भी नही जानती। दूसरी तरफ एक व्यक्ति लाख तक गिनती जानता है पर उसके पास में एक कोड़ी भी नहीं है। यही हाल है श्लोक बोलने वालों का। आज भारत में हिन्दु गाय के लिए क्या कर रहा है? केवल बातें। विनोबाजी ने अनशन किश और आश्वासन मिल गया कि संविधान में संशोधन कर देंगे। लेकिन क्या आज गो हत्या नहीं हो रही है। संविधान में तो संशोधन कब होगा पता नहीं पर यह अत्याचार तो वैसे ही हो रहा है। जब तक एक भी गाय पर अत्याचार हो रहा है हिन्दु का भोजन करने का धर्म नहीं है। पर बिनोबाजी के प्राण आवश्यक थे। क्या फर्क पड़ता कि गाय की रक्षार्थ एक व्यक्ति के प्राण भी चले जाते तो। यही क्यो हमारी गायें सड़को पर भुख मर रही हैं ।कौन हिन्दु उनकी व्यवस्था कर रहा है। यह युग ही बातों का है।

26. यह सृष्टि जब ईश्वर की रचना है तो इसमें दोष क्यों है? क्यो व्यक्ति मानवता से गिर जाता है। एक बर्तन में हम जल रखते हैं कुछ समय बाद उसमें दुर्गन्ध क्यो हो जाती है? जो सुगन्धित भोजन हम करते है वह कुछ घंटों में दुर्गन्धयुक्त विष्ठा में क्यो बदल जाता है? हमने सवादिष्ठ एवं सुगन्धित भोजन किया था फिर यह दोष क्यों आ गया? भगवान ने सृष्टि की रचना की फिर इसमें नाना प्रकार के दोष आ गये तो आप कह सकते हैं कि भगवान ने यह दोष क्यों बनाये? भगवान जब इनका कर्ता है तो भोक्ता भी भगवान ही होगा। परन्तु भगवान न कर्ता है न भोक्ता है। वह तो मात्र साक्षीभूत है। इसलिए वह दोषी नहीं है। इस सृष्टि की रचना ही ऐसी है कि स्वतः ही इसमें दोष आजाते हैं। सृष्टि में अमृत के साथ विष की भी उत्पति हुई है। पहले मैं सोचा करता था प्रभु ने यह मौत का प्रचलन क्यो किया। पर अब सोचता हूँ कि प्रभु जो भी करते हैं वह ठीक ही तो है। कल्पना करो यदि मौत न होती तो आज विश्व का क्या हाल होता? इसलिए जो कुछ भी होता है वह ठीक ही है, तथा सृष्टिगत है। एक ही हवा है एक ही पानी है परन्तु नीम में कड़वापन है तो आम मे मिठास है। हम यह भी देखते हैं कि कई बच्चे जन्म से ही अन्धे अपाहिज होते हैं तो यह विचार स्वाभाविक है कि इनमें यह दोष क्यो आये। तब हमें वही मानना पड़ता है कि सृष्टि में दोष है। ज्यादा व्याख्या करें तो हम इनके कारण प्ररब्ध दोष, कर्मदोष एवं संग दोष को बता सकते हैं।

27. आश्रम पर दर्शानथियों के समुह आते रहते थे। इसी समुह में एक दिन शहर से दो पंडित आये। जिनमें एक रामगढ के व एक लक्ष्मणगढ के थे। आप चौक में प्रार्थना–भवन के सामने विराजमान थे। दोनो पंडित सीधे ही आकर बैठ गये। लक्ष्मणगढ वाले पंडित जी जो तिवाड़ी जी के नाम से जाने जाते हैं, ने बातों ही बातों में फरमाया कि महाराज आपने तो देवताओं को जेल कर रखा है। आपने हंस कर पुछा कि पंडितजी आप आर्य समाजी है क्या? इस पर पंडितजी आवेश में

आ गये व बोले कि आपने मुझे नास्तिक कैसे बताया। मैं तो सनातनी हूँ तथा आपका विरोधी हूँ। इस पर आप बोले पंडितजी आपा रखिये। आर्य समाजी मैंने इसलिए बताया कि आप देवताओं का विरोध कर रहे हैं। मूर्तियों को मन्दिर में जेल बता रहे हैं। आर्य समाजी नास्तिक नहीं होते। वे भी सच्चे आस्तिक हैं परन्तु मूर्तिपूजा को नहीं मानते। इसीसे आपसे पूछा कि कया आप आर्य समाजी हैं। आपने अपने आपको सनातनी बताया यह तो बहुत अच्छी बात है पर हमारे विरोधी क्यों हैं? इस पर पंडितजी पुनः बोले कि महाराज! हम सनातनी हैं व नाथों के विरोधी हैं। नाथ सनातनी नहीं होते हैं। आपने सहज भाव से पुछा कि यह आप कैसे कह सकते हैं कि नाथ सनातनी नहीं होते हैं। तो पंडित जी बोले कि नाथ वाम पंथी हैं, इसलिए हम उन्हे सनातनी नहीं मानते। इस पर आपके श्री मुख से यह सत्य उदघोषित हुआ जो आज हमारे हिन्दु धर्म के लिए केन्सर का रोग है। पंडितजी आप जैसे संकीर्ण विचार वालों ने ही तो हिन्दु धर्म का कितना अहित कर दिया है। आप नाथों को सनातनी नहीं मानते क्योंकि अप ब्रह्मण अपने आपको उच्च मान रहे हैं। यह जातीय अभिमान ही है कि ब्रह्मण साधु को नमःस्कार ही नहीं करता। क्या साधु होने के बाद भी जाति का पांव रहता है। जाति को मैं पांव (खुजली) मानता हूँ। नाथ आदिनाथ भगवान शिव के सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं जो सच्चे सनातनी हैं। शास्त्र भी कहते हैं कि जग गुरु ब्रह्मण, ब्राह्मण का गुरु सन्यासी व सन्यासी का गुरु अविनाशी। क्या हम सन्यासियों से अलग हैं। हम और सन्यासी एक ही पंगत के हैं। किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं है। भेदभाव तो आप जैसे संकीर्ण दायरे वालों ने बना रखे हैं कि हम सनातनी हैं, हम उच्च हैं, शुद्ध हैं और सब अशुद्ध हैं, सनातनी नहीं हैं। आप लोग अपने ही धर्म वालों से कितना भेद भाव रखते हैं। इस ब्राह्मण सम्प्रदाय के भेदभाव के कारण हिन्दु धर्म को कितना नुकसान उठाना पड़ा है? जैन व बौद्ध कौन थे? हिन्दु ही थे परन्तु ब्राह्मणों के भेदभाव के कारण अलग हो गये। महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध का विरोध ब्राह्मणों ने किया क्योंकि वे जन्म से ब्राह्मण नहीं थे। परिणाम क्या निकलाद्य उनके अनुयायी हिन्दु धर्म से अलग हो गये। आगे चल कर गुरु नानक का आपने विरोध किया तो हिन्दुओं से एक नये सम्प्रदाय का जन्म हो गया जिन्हे हम सिख कहते हैं। आप देखते हैं कि ये लोग हिन्दु मान्यताओं को नहीं मानते। बताओ किसका नुकसान हुआ। पर आप लोग तो अब भी कहां समझे हो। अब भी आप यही भेद भाव अपने ही धर्म वालों के साथ रखते हो। इस का परिणाम भी आप देख रहे हैं कितने निम्न वर्ग वाले ईसाई हो गये। देश को घूम कर देखो क्या हो रहा है और क्यों हो रहा है? यह सब तुम्हारी ही उपेक्षा के कारण। आज दक्षिण में हरिजन आपसे अलग जा रहे है क्योंकि आप उन्हे अपने मानते ही नहीं। यह दोष किसका है? आप धर्म के ठेकेदारों का। इतना ही नहीं आप तो आपस में भी लड़ रहे हैं। वह शैव है मैं वैष्णव हूँ आदि। शिव मत वालों को श्री वैष्णव हीन समझता है व उससे घृणा करता

है। उसके हाथ के स्पर्श किया हुआ अन्न जल भी ग्रहण नहीं करता। इधर शिव मत वालों का भी श्री वैष्णवों के साथ यही व्यवहार है। पुष्कर में एक श्री वैष्णव मन्दिर है जिसमें सभी देवताओं के मूर्ति चित्र हैं पर भगवान शिव का चित्र नहीं है। क्या यह भेद शिव और विष्णु में है। नहीं, यह भी आप लोगों की ही करामात है। रामचरित मानस को उठाकर देखो। उसमें स्पष्ट लिख रखा है कि 'शिवद्रोही मम सपनेहू नहीं भावा'। शिव व विष्णु में तो अगाढ प्रेम है। शिव के मस्तिष्क का त्रिपुड़ विष्णु की शैष शैया है तो शिव का त्रिशुल विष्णु का तिलक है। शास्त्रों में अनेकानेक से उदाहरण मिलते हैं जो शिव व विष्णु भगवान के प्रेम की पुष्टि करते हैं। पर अनुयायियों को उनसे क्या? वे तो झगड़ रहे हैं। आप नाथों को वाम मार्गी बतला रहे हैं तो क्या सभी नाथ वाम मार्गी हैं। ब्राह्मणों में बहुत से शराब पीते हैं इसका अर्थ क्या यह हो गया कि सभी ब्राह्मण शराब पीते हैं। आप लोग अपने ही पैरों को काट रहे हैं। यदि आप साधुओं का विरोध करेंगे तो क्या समाज ब्रह्मणों को पूजेगा। जैसे व्यवहार आचरण तुम्हारा होता जा रहा है वैसा ही समाज में तुम्हारा सम्मान होता जा रहा है। इस पर पंडितजी क्षमा याचना करने लगे। आपने इन्हें बहुत सी ज्ञान की बातें बताकर कृतार्थ किया।

28. एक दिन एक सर्वोदयी कार्यकर्ता आपके दर्शनार्थ आया। आपने उनसे पुछा कि आपके सर्वोदय आन्दोलन का क्या हो रहा है? उन्होंने कहा महाराज! यह तो अपने लक्ष्य में असफल ही रहा क्योंकि हम बल से तो लोगों को दबा नहीं सकते, केवल अनुनय विनय ही करते हैं, जिस पर कोई ध्यान नहीं देता। अब तो विनोबाजी भी साम्यवाद की प्रशंसा करने लगे हैं। इस पर आपने कहा कि आपके सिद्धान्तों ने समाज को और कमजोर बना दिया। समाज में अन्याय के सामने खड़े होने की शक्ति का ह्रास किया व लोगों को दब्बू बनाया। मांगने से भी क्या कोई हक देता है। नहीं हक लिया जात है और यह कार्य मरी हुई आत्मा के लोग नहीं कर सकते हैं। अब भी आप सिद्धान्त बदलो एवं आत्मा को मत मारो। उन्हें उठने दो व स्वयं का हक पहचान कर लेने दो। तुम लोगों ने इस सिद्धान्त के चक्कर में समाज का बड़ा अनर्थ कर डाला। मैं किसी स्कूल में गया तो नहीं पर वहां मास्टरजी बालकों को इसी प्रकार की शिक्षा दे रहे थे। मैंने उन्हें रोका व कहा कि मास्टरजी अभी से इन बच्चों की आत्मा को मत मारो। इन्हें निडर बनने दो। निर्भिक व्यक्ति ही समाज का हित कर सकते हैं। इसी बीच सर्वोदयी कार्यकर्ता बोले कि फिर तो सब कम्यूनिष्ट बन जाओ यही एक रास्ता है। आपने पुनः उन्हें रोकते हुए कहा कि मैं कम्यूनिजम का समर्थक नहीं हूँ जिस तरह से आज यह पनप रहा है। कम्यूनिष्टवाद में लूट खसोट इत्यादि हैं, जिनका समर्थन मैं कैसे कर सकता हूँ। किसी को मारने का हमें क्या हक है? समता की बात हमारे महापुरुषों ने भी की है। वहीं मैं चाहता हूँ। किसी ने आवश्यकता से अधिक संग्रह कर रखा है, उसे उससे लेकर

समाज में बांटलो। परन्तु जब वह इस प्रकार हमारे जैसा ही हो गया तो उसे मारने की क्या आवश्यकता! हमारे लोगों को देखो तो वे किसी कम्यूनिष्ट से भी कम्यूनिष्ट हैं। ईमानदारी से कार्य करते हैं। किसी भी प्रकार की बेईमानी नहीं करते तथा नही दूसरे का हक मारते हैं। अपने सत्य की कमाई खाते हैं व जो भी स्वयं की मेहनत से मिल जावे उसे व्यर्थ में फेंकतें नहीं है। यही सच्चा साम्यवाद है। यही भारत का साम्यवाद है। आज विडम्बना तो देखो कि भारत का साम्यवादी चीन व रुस की जय–जयकार कर रहा है।

29. जो मानव सुख शान्ति चाहता है उसे राग द्वेष, ईष्या घृणा वैर–भाव आदि से मन को हटा कर ईश्वर की तरफ लगाना होगा। आज से ही यह निश्चय करलो कि मुझे इन सभी विकारों को दिमाग से हटाकर मेरे मन को शुद्ध अवस्था में रखना है। इन सभी विकारों से छुटकारा पाने के लिए गुरु कृपा एवं ईश्वर कृपा आवश्यक है। जब हम ईश्वर चिन्तन करने बैठते हैं तो हमारा मन इस चिन्तन में न लग कर दो रोज पहले वाली का घटना का विवेचन करता रहता है। इससे हमारे ध्यान में बाधा पहुंचती है व मन इधर उधर डोलता रहता है। ऐसा क्यों होता है? इसके दो कारण हैं– प्रथम तो हमें अभी तक मन स्थिर करने का अभ्यास नहीं है। इसके लिए नित्य–प्रति, निश्चित नेम–टेम से अभ्यास करना चाहिए। दूसरा कारण है कि मन हमेशा ढ़लान की और ही लुढ़कता है, यानि हमारा झुकाव सांसारिकता की और अधिक है। कुछ लोग कहते हैं कि मन रुकता ही नहीं। लेकिन मैं कहता हूँ कि मन कुल्ली है कुल्ली। न यह गाड़ी को हांकने वाला बाबू है तो न यह गार्ड व न टी.टी है। यह तो केवल कुल्ली है। जिस प्रकार ध्यान न रखने वाले मुसाफिर का सामान लेकर कुल्ली चम्पत हो जाता है उसी प्रकार इसकी निगरानी न रखने वाले का मन इधर उधर डोलता रहता है। जिस प्रकार एक मुसाफिर को चाहिए कि अपना सामान कुल्ली को थमाने से पूर्व इसके नम्बर लेले व उसके पीछे डंडा लेकर हो जावे तो वह कुल्ली भाग नहीं सकता है। समाधान हुआ मुसाफिर कभी अपना सामान नहीं ठगाता है। इसी प्रकार मन को कुल्ली मानकर इसकी निगरानी रखनी चाहिए। इसके नम्बर ले लने चाहिए तथा इसके पीछे डंडा लेकर हो जाना चाहिए।

30. प्र. महाराज सत्संग करने पर भी कुछ मनुष्य क्यों नहीं सुधरते हैं?

महाराज– तुम्हें एक शिष्य संवाद सुनाता हूँ। किसी शिष्य ने गुरु से यह प्रश्न किया तो उन्होंने उसका उत्तर दिया–

सतगुरु चन्दन बावना, सब बन पलटन हार।
बांस बेड़ा पलटै नहीं, उसमें चार विकार।।
लाम्बा अंग अग्नि घणि, भरम पोलता मांय।
पान–पान में गांठ है, इस विधि पलटै नांय।।

इसे मनुष्य जीवन पर इस प्रकार समझा जा सकता है। लम्बाई से तात्पर्य है अभिमान, थोथेपन से तात्पर्य है कि इस कान से सुनना व उस कान से बाहर निकाल देना अर्थात किसी भी बात पर अमल नहीं करना, अग्नि का अभिप्राय है क्रोध तथा पान पान में गांठ का भावार्थ है कि वह अपने अन्दर अनेक छल कपट, पाखण्ड आदि की घुटियों से घटित है जिन्हे खोलता भी नहीं व खोलना भी नहीं चाहता है।

31. अपने माता पिता की सेवा करनी चहिए। उनके कड़े शब्दों को सहन करना चाहिए। अपने गुरुजनों एवं माता पिता की सेवा व प्रेम द्वारा आर्शिवाद प्राप्त करना चाहिए। यह भी तप का एक भाग है। जीवन में सफलता के लिए उनका आशिर्वाद अनिवार्य है। अपने सनातन धर्म में बड़ों की सेवा व आदर सत्कार, गो सेवा, गरीबों की सेवा आदि को भी तप का भाग माना है।

32. अन्त में प्रस्तुत कर रहा हूँ आपका यात्रा सार। आपने अपने जीवन काल में अनेक तीर्थ यात्रायें एवं रमण भ्रमण किया। इस विषय में आपके श्रीमुख से जो सार संक्षेप सुनने को मिला वह यहां प्रस्तुत है।

मानव को तीर्थ यात्रा अवश्य ही करनी चाहिए। तीर्थ यात्रा एवं देशाटन से समाज का बहुत ज्ञान अनुभव होता है। श्रेष्ठतम तो साधु संगत व भक्ति में अधिक भाग लेना है। कोरे तीर्थों में ही जीवन नहीं खपा देना चाहिए। एकान्तवास उत्तम है। साधक को शनै शनै समाज से सम्पर्क कम कर लेना चाहिए। एकान्त, शुद्ध निरंजन स्थान में रहे परन्तु वहां भी मोह ममता न रखे। सामाजिक मान प्रतिष्ठा का सर्वथा परित्याग करना चाहिए। अपनी आत्मा से सब तीर्थों को गंगा यमुना समझते हुए शुद्ध विचारों से रमण करना चाहिए। निन्दा–स्तुती, मान–अपमान, सुख दुःख से उपराम हो सूक्ष्म शरीर द्वारा कैवल्यावस्था में स्थित हो भावातीत ध्यान में आनन्दाभूति करनी चाहिए।

अपनी आत्मा से उत्पन्न प्रेरणादायक विचारों के अतिरिक्त और कहीं अपनी सुरति को चिन्तन न करने दें। मुमुक्ष पुरुष अन्त में कैवल्यावस्था प्राप्त करते है। एक गुरु शब्द स्वरुप निर्मल प्रकाश के अतिरिक्त आत्मा के भावों में कल्पना तक न आने दें। मन, बुद्धि, चित, अंहकार, इन चारों अन्तःकरणों के ऊपर आत्मा में 'योग ध्यान गमयम्' के सदृश्य सुरति–शब्द –ध्यान–योग–समाधि में स्थित हो मोक्ष की इच्छा भी न करे। संकल्प विकल्प की समाप्ति का नाम ही मोक्ष है। मोक्ष का अर्थ है मोक्ष की इच्छा न होना। यह बात अपने आपको भूनकर अपने आप में लय होन के बाद शुरु होती है। जब मैं और तूं है ही नहीं तो मेरा और तेरा का प्रश्न ही नहीं उठता। यह मार्ग गुरु कृपा एवं गुरु भक्ति से प्राप्य है। सर्वोपरी गुरु कृपा एवं सर्वानन्द गुरु भक्ति है।